केलि कुञ्ज

विजयेता श्रीराधाप्रियतमौ

लौट आना होगा, क्योंकि तीन घड़ी दिन बाकी रहते ही नावका खेना आज बंद हो जायेगा।

उस बालककी बात सुनकर वृद्धा विचारमें पड़ जाती है। सोचती है कि खेत भी जाना आवश्यक है और इस ऋषिकुमारको भी जिस-किस प्रकारसे राजी करना है। मण्डानन्द ब्रह्मचारी आये नहीं, क्या करूँ? विचारते-विचारते वृद्धाका मुख कुछ उदास-सा हो जाता है। वृद्धाके मुखकीओर देखकर ऋषिकुमार अतिशय सरलताके स्वरमें कहता है—माँ! तुम्हारा मन चिन्तित हो गया है, ऐसा प्रतीत हो रहा है। अच्छा, कल एक दिन और आ जाऊँगा।

ऋषिकुमारकी बात सुनकर वृद्धा प्रसन्न हो जाती है। सोचती है कि कल तो मण्डानन्दसे मिलकर सब ठीक ही कर लूँगी। बस, काम हो गया। वृद्धा कुछ क्षण खड़ी रहकर ऋषिकुमारके चरणोंमें नमस्कार करती है तथा कहती है—ऋषिकुमार! आपने बड़ी कृपा की, पर कलके लिये आप वचन दे चुके हैं, इसे न भूलेंगे। मैं आवश्यक कामसे इस समय जा रही हूँ। आप कृपया आजकी पूजाका कार्य सम्पन्न करावें।

इसके बाद वृद्धा एक किनारे ललिताको बुलाती है तथा धीरे-धीरे कानमें समझाती है कि किसी प्रकार भी इसकी सेवामें त्रुटि न हो। पूजा यह जैसे-जैसे कराये, वैसे-वैसे करना तथा पंद्रह मुहरोंकी दक्षिणा देना। ललिताको समझा-बुझाकर वृद्धा पुनः ऋषिकुमारके चरणोंमें प्रणाम करती है और कहती है—देखें, आप कल आनेका वचन दे चुके हैं, इसी आश्वासनसे मैं आज आपको छोड़कर खेतपर चली जा रही हूँ; नहीं तो कदापि न जाती। आप यदि कल नहीं आयेंगे तो मुझे अपार दुःख होगा।

ऋषिकुमार हँसकर कहता है—कलके लिये वचन तो दे ही चुका, आप निश्चिन्त रहें।

वृद्धा शीघ्रतासे दक्षिणकी ओर चलती हुई वृक्षोंकी आड़में चली जाती है। वह बालक भी पीछे-पीछे चला जाता है। ऋषिकुमार उस बालककी ओर देखकर मुस्करा देता है। इधर ऋषिकुमार पूजा कराने चलता है। बड़े प्रेमसे रानी ऋषिकुमारको देखने लग जाती हैं। उनका

मन बरबस ऋषिकुमारकी ओर खिंचने लग जाता है। इतना ही नहीं, रह-रहकर रानीको ऐसा दीखने लगता है कि मानो ऋषिकुमारके स्थानपर प्रियतम श्यामसुन्दर खड़े हों। रानी उस क्षण काँप जाती हैं; पर सोचती हैं—यह तो दिन-रातकी ही बात हो गयी है। मुझे यों ही भ्रम हो जाया करता है कि प्यारे श्यामसुन्दर खड़े हैं।

रानी ऋषिकुमारके पैर धोने चलती हैं; पर ऋषिकुमार पीछे हट जाता है तथा कहता है—देवि! मैं स्त्रियोंका स्पर्श नहीं करता।

अब रानीको होश होता है। रानी हाथ जोड़ लेती हैं। ललिता हाथ जोड़कर कहती है—ऋषिकुमार! क्षमा करना। मेरी इस सखीको उन्मादका रोग है। यह अधिकांश समय होशमें नहीं रहती।

ऋषिकुमार मुस्कुराने लगता है। रूपमञ्जरी झारी जमीनपर रख देती है। ऋषिकुमार उसे उठाकर अपने हाथ-पैर धोता है तथा शीघ्रतासे बिना हाथ पोंछे ही मन्दिरके भीतर चल पड़ता है। उसे इतना शीघ्र जाते देखकर सभी चकित-सी हो जाती हैं; पर कोई कुछ नहीं कहतीं। रानीके पैरोंको एक मञ्जरी धो देती है तथा धोकर एवं कुल्ला करके रानी भी शीघ्र ही मन्दिरके भीतर चली जाती हैं।

सूर्य-मन्दिरके भीतर सुन्दर कोठरी-सी है, जिसमें दो गज ऊँची एक वेदी है। उसीपर भगवान् सूर्यकी अतिशय सुन्दर प्रतिमा है। प्रतिमा घोड़ेके रथपर बैठायी हुई है। रथ, घोड़े एवं प्रतिमा—तीनों ही किसी गुलाबी रंगके तैजस धातुके बने हुए हैं। उनसे अतिशय चमक निकल रही है। प्रतिमाका मुख पूर्वकी ओर है। जिस वेदीपर प्रतिमा है, उसके दो-दो हाथ पश्चिम, उत्तर, दक्षिण एवं चार हाथ पूर्वका सारा स्थान सुन्दर संगमरमरके घेरेसे घेर दिया गया है। घेरेके भीतर जानेके लिये पूर्वकी ओर द्वार बना हुआ है। संगमरमरका घेरा तीन हाथ ऊँचा है। उसी घेरेके भीतर ऋषिकुमार खड़ा है। रानी घेरेके बाहर दक्षिण तरफ मुख करके खड़ी हैं। घेरेके बाहरका स्थान विविध पूजा-सामग्रीसे भरा हुआ-सा है।

अब पूजा आरम्भ होती है। रानी अपने हाथमें जल, अक्षत, सुपारी एवं लाल वर्णका पुष्प ले लेती हैं और ऋषिकुमारके हाथमें डाल देती हैं।

ऋषिकुमार संकल्प पाठ करता है। वह मुस्कुराता हुआ ऊटपटाँग ढंगसे संकल्प पाठ करता है तथा संकल्पके अन्तमें बड़े ढंगसे विनोदकी भाषामें यह उच्चारण करता है—श्रीराधायाः दासस्य कृष्णस्य सकलकामना-सिद्ध्यर्थं श्रीसूर्यदेवस्य पूजनमहं करिष्यामि। (श्रीराधाके दास कृष्णकी सभी कामनाओंकी पूर्तिके लिये मैं सूर्य-पूजन करूँगा।)

यह संकल्प-पाठ सुनते ही सभी आश्चर्यमें भरकर उस ऋषिकुमारकी ओर देखने लग जाती हैं। रानी एक तीक्ष्ण दृष्टिसे उस ऋषिकुमारको देखकर ललिताके कानमें धीरेसे कहती हैं—देख, मेरा सिर कुछ घूम-सा रहा है। पता नहीं, यह ऋषिकुमार कौन है? कहीं वे ही हों तो···।

कहते-कहते रानी रुक जाती हैं। ललिताको संदेह तो कुछ-कुछ हो रहा है कि कहीं श्यामसुन्दर तो नहीं हैं? पर ऋषिकुमारके मुखपर अत्यधिक सरलता है। साथ ही मुखाकृति देखकर यह किसीके लिये भी कल्पना करना सम्भव नहीं कि श्यामसुन्दर अपना ऐसा कृत्रिम मुख बना सकते हैं। इस कारणसे ललिताका संदेह शिथिल पड़ जाता है। ललिता धीरेसे रानीके कानमें कहती हैं—ऐसी मुखाकृति कृत्रिम हो, यह असम्भव-सा दीखता है।

रानी कुछ सोचती हैं। इसी समय चित्रा ललिताके कानमें कहती हैं—मैं ठीक कहती हूँ, ये श्यामसुन्दर हैं।

सखियोंमें कानाफूसी होते देखकर ऋषिकुमार अतिशय सरलतासे कहता है—देवि! विलम्ब हो रहा है, शीघ्र पूजाकी अन्यान्य सामग्री दो!

ऋषिकुमारकी यह बात सुनकर रानी अन्यान्य सामग्री हाथसे उठा-उठाकर घेरेके भीतर रखने लग जाती हैं। ऋषिकुमार मन्त्र पढ़-पढ़कर पूजा करवाता जा रहा है। इधर रानी विशाखा एवं अन्यान्य मञ्जरियोंकी सहायतासे सामान दे रही हैं और उधर चित्रा ललिताको मन्दिरके उत्तरी हिस्सेमें ले जाकर कहती हैं—देख! ये निश्चय ही श्यामसुन्दर हैं।

ललिता—पर मुखाकृति ऐसी कृत्रिम कैसे बन जायेगी तथा बोली बदल लेना कैसे सम्भव होता?

चित्रा—बहिन ! मैं ठीक कहती हूँ कि ये श्यामसुन्दर इतनी चतुराईसे वेष एवं मुखाकृति बदल सकते हैं। इन्हें ऐसी कला मालूम है कि इन्हें कोई पहचान ही नहीं सकता। मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ। मैं स्वयं इन्हें ऐसे-ऐसे विचित्र ढंगसे बोलते हुए सुन चुकी हूँ कि यह कोई भी समझ ही नहीं सकता कि ये श्यामसुन्दर हैं।

ललिता—तो पहचान कैसे हो ?

चित्रा—एक काम कर। जब पुष्पाञ्जलि देनेका समय आवे तो हममेंसे दो-तीन पुष्प न उठाकर केवल जल उठा लें और भगवान् सूर्यपर फेंकनेके बहानेसे इस ऋषिकुमारपर जल फेंकें। यदि रंग होगा तो मुखपरसे उतर जायेगा।

ललिता 'बहुत ठीक' कहती हुई चित्राको पकड़े हुई घेरेके पास आ पहुँचती हैं। पूजा हो रही थी, ऋषिकुमार प्रत्येक पदार्थके अर्पणके पहले कुछ ऊटपटांग-सा पद पाठ करके फिर कहता है—'पाद्यं समर्पयामि, सूर्याय नमः', 'अर्घ्यं समर्पयामि, सूर्याय नमः'।

उस पदके पाठसे श्रीप्रियाका हृदय उद्वेलित होकर वे भावाविष्ट-सी होने लग जाती हैं। अब पूजा समाप्त-प्रायः हो रही है। इसी समय विशाखा एक बड़ी परात घेरेके भीतर रख देती हैं। परातमें बिना तराशे हुए पीले रंगके एक प्रकारके अतिशय सुन्दर फल हैं जो देखनेमें संतरेके-से हैं, पर संतरेसे कुछ बड़े-बड़े हैं। ऋषिकुमार परात उठाकर यह गाता है—

तालफलादपि गुरुमतिसरसम्। (गीतगोविन्द)

इसे गाकर फिर ऋषिकुमार कहता है—'ऋतुफलं समर्पयामि, सूर्याय नमः'।

इस बार रानी एक अतिशय तीक्ष्ण दृष्टिसे उस ऋषिकुमारकी ओर देखती हैं तथा तुरंत खिल-खिलाकर हँस पड़ती हैं।

रानीको इस बार निश्चय हो गया है कि मेरे प्राणनाथ प्रियतम श्यामसुन्दर ही ऋषिकुमार बनकर आये हैं। वे इस बातसे प्रेममें इतनी अधीर हो जाती हैं कि उनके लिये खड़ी रहना असम्भव हो जाता है। वे वहीं धम्मसे बैठ जाती हैं। प्रेममें विह्वल होकर आँखें बंद कर लेती हैं। ऋषिकुमारके मुखपरसे इस बार सरलता एवं गम्भीरता बिल्कुल चली

जाती है। वह भी जोरसे हँस पड़ता है। उसके हँसते ही रहा-सहा संदेह भी जाता रहता है। चित्रा झारीसे एक चिल्लू पानी लेकर ऋषिकुमारके मुखपर झोंक देती हैं। ऋषिकुमारका मुख गीला हो जाता है। वह हँसता हुआ अपने उत्तरीय वस्त्रसे मुख पोंछता है। मुख पोंछते ही श्यामसुन्दरकी अनिन्द्य मुख-शोभा स्पष्ट दीखने लग जाती है। इन्दुलेखा तो इतनी अधीर हो जाती हैं कि वहीं मूर्च्छित हो जाती हैं। विशाखा आदि सभी हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाती हैं। रानी हँसती हुई उठ पड़ती हैं। वे हाथ बढ़ाकर प्यारे श्यामसुन्दरको घेरेसे बाहर खींच लेती हैं और प्यारेकी ओर देखने लगती हैं। सर्वत्र आनन्द एवं प्रेम छा जाता है। कुछ देर बाद अतिशय प्रेममय विनोद करती हुई सखी-मण्डली प्यारे श्यामसुन्दरको मन्दिरके पीछे स्थित सुन्दर कुण्डपर ले जाती है। वहाँ रानी वृक्षकी छायामें बैठाकर अपने हाथसे प्यारे श्यामसुन्दरके शरीरको अँगोछेसे पोंछती हैं। सभी सखियाँ मिलकर पुनः श्यामसुन्दरका शृङ्गार करती हैं। शृङ्गार होनेपर कुछ देर वहीं बैठे रहकर आपसमें निर्मल प्रेमसे भरा विशुद्ध विनोद चलता रहता है।

इसी समय एक सारिका वृक्षके ऊपर जोरसे बोलती है—सूर्यदेव! सचमुच तुमने प्रतिज्ञा कर ली है कि मैं जो कहूँगी, उससे ठीक उलटा करोगे? प्रातःकाल हृदयसे कह रही थी कि तुम देर से उदय होओ तो शीघ्र उदय हो गये। इस समय हृदयसे कह रही हूँ, थोड़ा ठहरो, किञ्चित् मन्थर गतिसे चलो तो पश्चिम गगनकी ओर शीघ्रतासे भागे जा रहे हो। क्या कहूँ?

सारिकाकी बातसे सबकी दृष्टि सूर्यकी ओर चली जाती है। अब सभीको होश होता है कि दिन अधिक ढल चुका है। इस स्मृतिसे रानीका मुख गम्भीर हो जाता है। वे उठकर खड़ी हो जाती हैं। प्यारे श्यामसुन्दर भी उठकर खड़े हो जाते हैं। रानीको हृदयसे लगाकर कहते हैं—मैं शीघ्र ही गायोंको लेकर आ रहा हूँ।

प्रीतिकी अतिशयतासे स्वयं श्यामसुन्दरका गला भर जाता है। अब रानीको बायीं तरफ सँभाले हुए श्यामसुन्दर उत्तरकी तरफ बढ़ते हैं। कुछ देर चलकर उद्यानके उत्तरी छोटे फाटकपर आ पहुँचते हैं।

वहाँ रुक जाते हैं। एक बार शीघ्रतासे पुनः रानीको हृदयसे लगाकर फाटकसे बाहर होकर धीरे-धीरे पूर्वकी ओर राजपथपर चलने लगते हैं। रानी फाटकसे बाहर आकर खड़ी हो जाती है तथा निर्निमेष नयनोंसे उधर ही देखने लगती हैं। श्यामसुन्दर कुछ दूर चलकर इन्दुलेखाके कुञ्जकी पूर्वी सीमाके पास गिरिवर-स्रोतके पुलको पार करके उत्तरी तरफ चले जाते हैं। रानीको श्यामसुन्दर जब नहीं दीखते तो वे एक कटे वृक्षकी तरह गिरने लगती हैं; पर ललिता सँभाल लेती हैं। कुछ देर तक वे वहीं बैठी रहती हैं। फिर ललिता सहारेसे रानीको उठा लेती हैं। रानी ललिताके कंधेको पकड़ लेती हैं तथा धीरे-धीरे घर जानेके उद्देश्यसे पश्चिमकी ओर राजपथपर चलने लगती हैं।

भावनी लीला

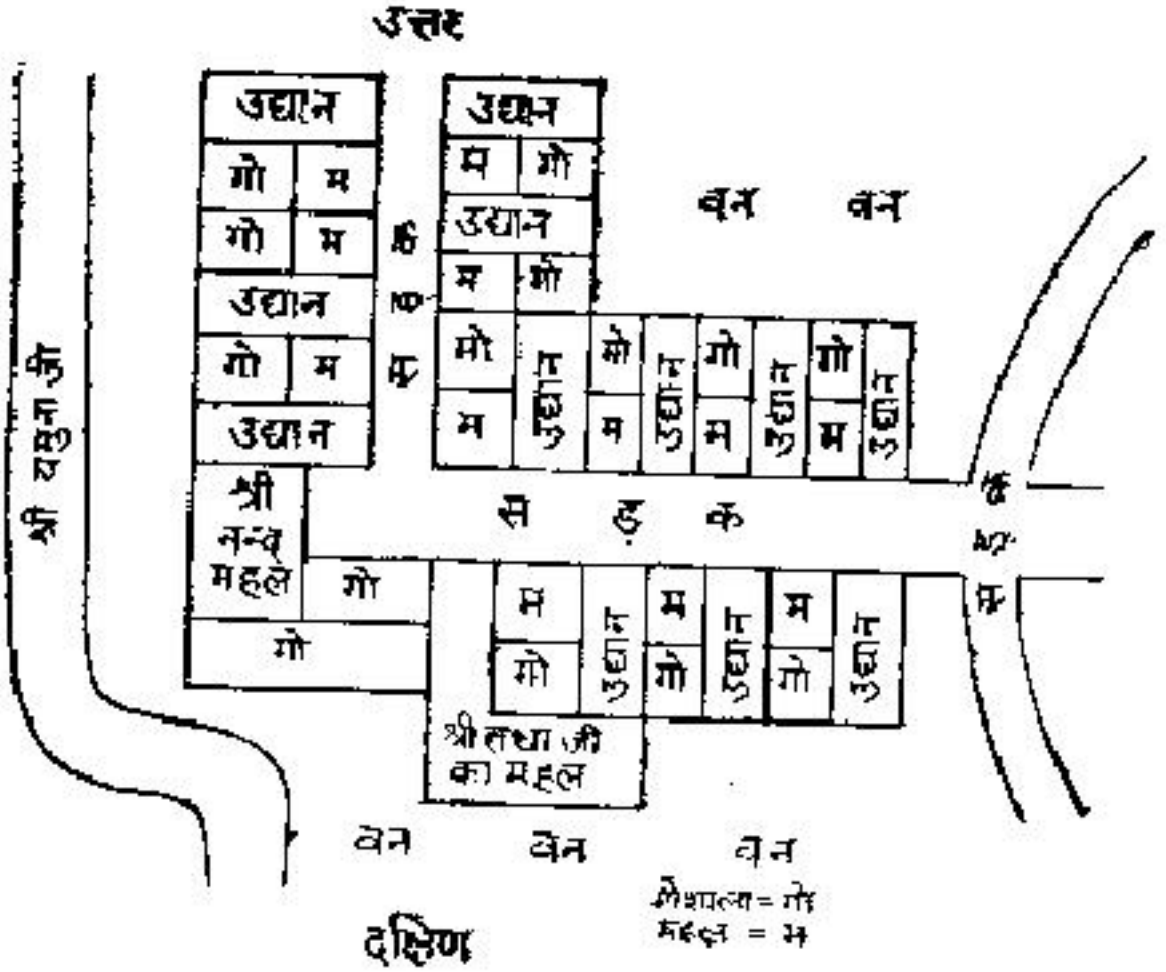

संध्या होने जा रही है। नन्दबाबाके महलके आगे अब धूप बिल्कुल नहीं रह गयी है; क्योंकि महलका मुख पूर्वकी ओर है। महलके ठीक सामने बहुत सुन्दर संगमरमरकी एक चौड़ी सड़क पूर्वकी ओर जाती है। सड़कके दोनों किनारोंपर अन्यान्य गोपोंके भव्य महल एवं प्रत्येक महलसे सटा हुआ एक-एक अत्यन्त रमणीय उद्यान शोभा पा रहा है। नन्द-महलके पूर्वकी ओर एक फर्लांग (१/१६ कोस) की दूरीपर श्रीराधारानीका महल है। सड़कके दोनों किनारोंपर छोटे-छोटे अशोकके वृक्ष लगे हैं। वृक्ष दस-दस हाथोंकी दूरीपर लगे हैं। उनके हरे-हरे सुन्दर पत्ते संध्याकालीन वायुके झोंकोंसे हिल रहे हैं। आज संध्या वायु कुछ तेज गतिसे प्रवाहित हो रही है। नीले गगनमें एकाध छोटे-छोटे बादलके टुकड़े तैरते हुए दीख पड़ रहे हैं।

अब संध्याके समय श्यामसुन्दरके वनसे लौटनेका समय हो गया है। सड़कके दोनों किनारोंपर वृक्षोंके पास गोपियोंकी भीड़ लगी हुई है। महलोंकी अटारियोंपर, खिड़कियोंपर, जहाँ भी किसीकी दृष्टि जाती है, वहाँ केवल गोपियोंके दर्शन होते हैं। श्रीगोपीजनोंके श्रीअङ्गपर नीली, पीली, हरी एवं लाल आदि रंगोंकी अत्यन्त सुन्दर साड़ियाँ शोभा पा रही हैं। सबके मुखारविन्दसे अनुराग टपक रहा है। सभी बड़ी उत्सुकतासे पूर्वकी ओर दृष्टि लगाये हुए हैं।

श्रीराधारानी श्रीश्यामसुन्दरकी प्रतीक्षामें अपने महलकी सबसे ऊँची अटारीपर बैठी हुई हैं। बेंतके आकारका चार-पाँच हाथ लम्बा मखमली गद्देदार आसन है, उसीपर पैर लटका करके पूर्वकी ओर मुख किये हुए श्रीप्रियाजी बैठी हैं। प्रियाजीका दाहिना हाथ श्रीललिताके बायें कंधेपर है। ललिता उनकी दाहिनी तरफ उसी आसनपर बैठी हैं। आसनके पीछे कुछ सखियाँ आसनपर हाथ टेके खड़ी हैं। रूपमञ्जरी नीले रंगके रूमालसे श्रीप्रियाजीके पैरोंके तलवोंको उनके चरणोंमें बैठी हुई सहला रही है। श्रीप्रियाजीके सामने ही छतपर बैठी हुई लवङ्गमञ्जरी सोनेके पनबट्टेपर पान रखकर बीड़े तैयार कर रही है। अनङ्गमञ्जरी नीले रेशमी वस्त्रका बना हुआ पंखा हाथमें लिये हुए श्रीप्रियाजीकी बायीं ओर कुछ दूरपर खड़ी है। वह पंखा झल नहीं रही है, क्योंकि गर्मी नहीं है तथा वायु आज स्वाभाविक ही कुछ तेज चल रही है।

लवङ्गमञ्जरीके उत्तरकी तरफ दक्षिणकी ओर मुँह किये मधुमतीमञ्जरी प्रियाजीके इशारेसे गा रही है। वीणा अत्यन्त मधुर स्वरमें बज रही है। मधुमती गाती है—

> लाल ब्रज भूषन मन भावते नेक बन ते वेगे आव हो।
> जसुमति सुत करुना भरे नेक हिरदै सुख उपजाव हो॥
> डोलन बरहापीड़ की भ्रुति जुग कुंडल झलकाव हो।
> नाचत तानन तोर के नेक अलक बदन अरुझाव हो॥
> देखत इत उत भाव सौं नेक चपल नयन चमकाव हो।
> उठन रेख मुख चंद को सीतलता हियो सिराव हो॥
> चलन जुगल मृदु गंड की नेक चुंबन चाव बढ़ाव हो।
> अधर सुधा रस सौं सबै मुरली के रंध्र पुराव हो॥

गावत गुन गोपीन के नेक स्रवनन सब्द सुनाव हो ।
सुंदर ग्रीवा की डोलनी पनकन की परन भुलाव हो ॥
कंठसिरी दरसाय के नेक तन की दसा बिसराव हो ।
गजमुक्ता बिच लाल हो सो उर पर हार धराव हो ॥
पोहोंची दोउ कर सोभनी नेक फूंदना स्याम लटकाव हो ।
बाजुबंद भुज में बने मेरे मन के मांझ गड़ाव हो ॥
कटि पीतांबर काछनी नेक नीके अंग नचाव हो ।
छुद्र घंटिका बाजनी ता ऊपर सरस धराव हो ॥
चलन सों न्यारी भांति की नेक नूपुर सब्द सुनाव हो ।
नख भूषन की ज्योति सों सकलन की ज्योति लजाव हो ॥
आगे गोधन हांकि कै नेक पाछे खेल कराव हो ।
बेंत सु फूलन गूंथि कै नेक कांधे धरे दिखाव हो ॥
गोप बालकन मंडली मधि नायक नेक कहाव हो ।
नाचन मिस ब्रज भूमि में नेक चरन चिह्न उपटाव हो ॥
आवत बायें हाथ ले नेक लीला कमल फिराव हो ।
बनमाला अलि जूथ को नेक कमल फिराय उड़ाव हो ॥
ब्रज जुवतिन के वृंद में धंसि अपनो अंग परसाव हो ।
आलिंगन बहु भांति दे जुवतिन के पूरो भाव हो ॥
दीस बिरह ब्याकुल सखी से अपने अंग लगाव हो ।
तुम बिन सूनो सांझ को अपनो ब्रज फेर बसाव हो ॥
घोष द्वार चलि आय कै बल संग आरति उतराव हो ।
दे सुख सिगरे घोष को नेक दिन को बिरह बहाव हो ॥
इहि बिधि ब्रज जुवती कहै सुनि नंद महर घर आव हो ।
रसिकन यह बर दीजियै नित श्रीबल्लभ पद पाव हो ॥

गीत समाप्त होते ही दूरपर पूर्वकी तरफ अत्यन्त मधुर स्वरमें मुरली सुनायी पड़ने लगती है। श्रीप्रियाजी आसनसे उठकर खड़ी होकर बड़ी व्याकुलता भरी दृष्टिसे उधर ही देखने लग जाती हैं। पहले कुछ गायें दीखती हैं, फिर रानीके महलसे तीन फर्लांग दूर पूर्वकी तरफ चारों ओर गायोंसे घिरे हुए श्यामसुन्दर आते हुए दीख पड़ते हैं। संगमें ग्वाल-सखाओंकी मण्डली है। उनमें कोई झिमझिमियाँ बजा रहा है। कोई खँजरी बजा रहा है तथा कोई ताली देते हुए नाचता हुआ आ रहा है।

स्वयं श्यामसुन्दर अत्यन्त मधुर स्वरमें मुरली बजा रहे हैं। गायें पूँछ उठा-उठाकर कूद रही हैं। श्यामसुन्दर बायें हाथसे मुरली बजाते रहते हैं तथा दाहिने हाथसे उन गायोंको बीच-बीचमें छू-छूकर शान्त करते हैं। मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए पश्चिमकी तरफ सड़कपर बढ़ते हुए चले जा रहे हैं। जैसे-जैसे आगे बढ़ते हैं, वैसे-वैसे ही गोपियोंकी टोली पीछे होती जा रही है, अर्थात् जिस गोपीके सामनेसे आगे बढ़े कि वही पीछे चलने लगती है। दोनों किनारोंसे गोपियोंकी इतनी भीड़ इकट्ठी हो जाती है कि पीछेका रास्ता बिलकुल बंद हो जाता है। अब कभी श्रीकृष्ण पीछे ताकते हैं तो कभी आगे, और मुस्कुरा देते हैं। पीछे से गोपीजनोंका इतने जोरसे धक्का आता है कि सब गायें आगे ठेल दी जाती हैं तथा श्रीकृष्णके चारों ओर गोपियाँ-ही-गोपियाँ हो जाती हैं। श्रीकृष्णका पीताम्बर हवामें फहराने लगता है। एक गोपी उस पीताम्बरको पकड़ लेती है। अब श्रीकृष्णके सखा लोग भी भीड़से इतने दब गये कि वे भी श्रीकृष्णसे चार-पाँच हाथ अलग हो गये। श्रीकृष्ण अब राधारानीके महलके सामने पहुँच जाते हैं। वे अपने दोनों हाथोंसे भीड़को हटानेकी चेष्टा करते हैं तथा खूब मुस्कुराकर आगेकी गोपियोंसे कह रहे हैं—बावली! नेक रास्ता दे।

एक गोपी हँसकर कहती है—श्यामसुन्दर! आज रास्ता बंद है।

श्रीकृष्ण धीरेसे कहते हैं—फिर देख, गाली तो नहीं देगी? रास्ता तो मैं निकाल लूँगा।

गोपी मुस्कुराकर पीताम्बर छीन लेनेकी चेष्टा करती है और श्रीकृष्ण उसे पकड़े हुए हैं। राधारानी इसी बीचमें अटारीसे नीचे उतर आयी हैं तथा एक अशोकसे सटकर दूरपर खड़ी हैं। श्रीकृष्णकी दृष्टि उनपर जाती है। श्रीकृष्ण मानो आँखोंके इशारेसे उनसे सलाह पूछते हैं—क्या करूँ? बुरी तरह फँस गया हूँ। रास्ता बंद है।

राधारानी कुछ इशारा करती हैं मानो कह रही हैं—प्रणनाथ! सभी गोपियाँ चाहती हैं तुम्हारे पीताम्बरको छीनकर ले जायें। दे दो, तुम्हारा क्या बिगड़ेगा?

श्यामसुन्दर उसी क्षण जितनी गोपियाँ हैं, उतने बन जाते हैं।

प्रत्येक गोपीके सामने एक श्रीकृष्ण हैं। गोपी-श्रीकृष्ण, गोपी-श्रीकृष्णका क्रम बन जाता है। प्रत्येक गोपीके हाथमें श्रीकृष्णके पीताम्बरका एक छोर है तथा श्रीकृष्ण उससे पीताम्बर छुड़ानेकी चेष्टा कर रहे हैं।

दूरपर मैया यशोदा दौड़ती हुई आ रही हैं। बिल्कुल भीड़में आ जानेके कारण श्रीकृष्ण छिप गये थे। मैया सह न सकीं। वे सोचने लगीं कि मेरे लल्लाको ये गोपियाँ चोट न लगा दें, इसीलिये भीड़को चीरती हुई पश्चिमकी तरफसे दौड़ी हुई आ रही हैं।

श्रीकृष्ण धीरेसे कहते हैं—री, छोड़, मैया आ रही है।

मैया यशोदा बड़े जोरसे डाँटती हुई आ रही हैं—री गँवारिनों! मेरे लल्लाको तुम सब पीस डालोगी क्या?

श्रीकृष्णके सब सखा भी मैया यशोदाको अपनी ओर आती हुई देख करके और भी साहससे भीड़को धक्का देने लगते हैं। मैयाके आनेसे उन्हें बहुत बल मिल गया। श्रीकृष्ण पीताम्बर छुड़ा लेते हैं। गोपियाँ मैयाको आती देखकर कुछ सहम जाती हैं। मैया आ पहुँचती हैं और श्रीकृष्ण उनके चरणोंमें गिरकर प्रणाम करते हैं। मैया बड़े जोरसे चिल्ला-चिल्लाकर कह रही हैं—री, हट जा। नेक हवा तो आने दे।

गोपियाँ आँखें घुमा-घुमाकर मानो श्रीकृष्णसे कह रही हैं—अच्छा श्यामसुन्दर! आज तो मैयाने बचा लिया, फिर कभी बात।

धीरे-धीरे भीड़ हटने लगती है। श्यामसुन्दरके पाँच-सात हाथ चारों ओरका स्थान छोड़कर गोपियाँ घेरे हुए खड़ी रह जाती हैं। मैया गोदमें बैठाकर अञ्चलसे हवा करती हैं। इतनेमें नन्दरानीकी दासियाँ झारी-पंखा लेकर भीड़को चीरकर वहाँ आ जाती हैं। दाऊजी भी भीड़में अलग हो गये थे, वे भी भीड़ चीरकर आ खड़े होते हैं। श्यामसुन्दरके सखा भी आ जाते हैं, पर वे सब बहुत चिढ़े हुए गोपियोंकी ओर नाक फुला-फुलाकर तथा आँखें तरेरकर देख रहे हैं।

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

गोदोहन लीला

श्रीप्रिया अपने महलकी सबसे ऊँची अटारीपर पश्चिमकी ओर खड़ी हैं। अटारीके घेरेपर वे अपने दोनों हाथ टेके हुए हैं। श्रीप्रियाकी दाहिनी ओर एक मञ्जरी खड़ी है। श्रीप्रिया नन्द-गोशालाकी ओर देख रही हैं। श्यामसुन्दर मस्तानी चालसे चलते हुए गोशालामें गाय दुहनेके लिये आ रहे हैं। उनके आगे-पीछे सखा दोहनी (दूध दुहनेका पात्र) लिये हुए चल रहे हैं।

प्यारे श्यामसुन्दरके दाहिने हाथमें वंशी है। बायाँ हाथ कभी सुबलके कंधेपर रखकर चलते हैं, कभी कंधेसे नीचे उतार लेते हैं। कभी-कभी बायें हाथमें दुपट्टा लेकर मुँह पोंछने लगते हैं। दृष्टि बार-बार श्रीप्रियाकी ओर चली जाती है। गोशालाके बीचमें गायोंको घास एवं दाना खिलानेके लिये एक गज ऊँची, एक गज चौड़ी एवं दो सौ गज लम्बी ग्यारह वेदियाँ पूर्व एवं पश्चिम दिशामें बनी हुई हैं। वेदियाँ किसी अतिशय चमकते हुए तेजस् धातुकी बनी हैं। लगभग एक-एक गजके अन्तरपर वेदीमें धँसाकर अतिशय सुन्दर बर्तन रखे हुए हैं। दोनों ओर गायें खड़ी होकर घास एवं दाना खा रही हैं।

बहुतसे गोप एवं नन्दरानीकी दासियाँ सेवामें लगी हैं। स्वयं नन्दराय भी गोशालामें पधारे हुए हैं। श्यामसुन्दरके पधारे रहनेके कारण तो सभीके हृदयमें आनन्दकी बाढ़ आ गयी है। बछड़े कुछ तो गायोंका स्तन-पान कर रहे हैं, कुछ मुँहमें फेन भरकर इधर-उधर उछल रहे हैं। कुछ गायें भी कभी-कभी घास एवं दाना खाना छोड़कर पूँछ उठाकर उछलने लगती हैं। गोप उन्हें सँभालने लगते हैं। गायें जब जोरसे उछलने लगती हैं तथा गोपोंके सँभाले नहीं सँभलतीं तो गोप कहता है—आह! देख, प्यारे श्यामसुन्दर आ रहे हैं। यदि तू घास एवं दाना नहीं खायेगी तो वे दुःखी होंगे। हमें खिलानेके लिये कह गये हैं।

तब गाय शान्त हो जाती है तथा शान्तिसे घासके बर्तनमें मुँह डालकर घास खाने लगती है। श्यामसुन्दर अब गायोंकी कतारके पास जा पहुँचते हैं। एक गोप गायको दाना खिला रहा है। श्यामसुन्दर

उसके पास जाकर खड़े हो जाते हैं तथा कहते हैं—ताऊ ! आज मैं दूध दुहूँगा।

श्यामसुन्दरकी अमृत वाणी गोपके सारे शरीरमें प्रेमका संचार कर देती है। वह प्रेममें विह्वल होकर श्यामसुन्दरसे जा चिपटता है तथा कुछ देर बिल्कुल प्राणहीन-सा होकर हृदयसे लगाये स्थिर खड़ा रह जाता है। फिर कुछ क्षण बाद सँभलकर कहता है—ना बेटा ! तू देखता रह ! मैं तेरे सामने दुह देता हूँ।

श्यामसुन्दर प्यारसे मचल जाते हैं और कहते हैं—ना, ना, ताऊ ! आज मेरी प्रार्थना मान लो।

गोपकी आँखें भर आती हैं। गला प्रेमसे रुँधने लगता है। श्यामसुन्दर उसका हाथ पकड़ लेते हैं। वह गोप गद्गद कण्ठसे कहता है—आह ! तेरे कोमल हाथ''' ''' '''दुख जायेंगे ''' ''' '''मेरे लाल !

श्यामसुन्दर कहते हैं—ना ताऊ ! आज देख लो, बिल्कुल नहीं दुखेंगे।

कुछ देर सोचकर गोप सम्मति दे देता है। श्यामसुन्दर वंशीको अपनी फेंटमें खोंस लेते हैं तथा सुबलके हाथसे दोहनी लेकर गाय दुहने बैठते हैं। श्यामसुन्दर ज्यों-ही थनके पास बैठते हैं, बस, उसी क्षण बछड़ा थन पीना छोड़कर श्यामसुन्दरके शरीरको सूँघने लग जाता है। गाय भी वैसे ही दाना-घास छोड़कर प्यारे श्यामसुन्दरके कंधेके पास अपना मुँह ले जाकर शरीर सूँघने लगती है। गायके थनसे दूध झरने लगता है। श्यामसुन्दर बर्तन ले जाकर अँगुलियोंसे दूध दुहने लगते हैं। अँगुलियाँ तो मानो थनको स्पर्श-मात्र कर रही हैं, दूध अपने-आप झर रहा है। इतनी तेजीसे झर रहा है कि तुरंत ही बर्तनमें दूध जमा होकर घर-घर शब्द होने लगता है। कुछ देरमें ही वह बर्तन भर जाता है। श्यामसुन्दर हँसते हुए उठ पड़ते हैं। वे उस गोपके हाथमें बर्तन पकड़ाकर गायके शरीरपर थपकी देने लगते हैं तथा कहते हैं—मेरी प्यारी श्यामली ! मेरे प्यारसे पागल होकर तू चाहती है, मैं और दुहूँ; पर मेरा मोहना* भूखा रह जायेगा। सो, ना, अब नहीं, अब फिर प्रातःकाल।

---

*गायके उस बछड़ेका नाम श्यामसुन्दरने 'मोहना' रख छोड़ा है।

इसके बाद श्यामसुन्दर बछड़ेका मुँह पकड़कर थनके पास करते हैं; पर बछड़ा प्यारमें डूबकर थनसे मुँह हटा लेता है एवं श्यामसुन्दरके हाथपर अपनी गर्दन धीरे-धीरे घिसने लग जाता है। श्यामसुन्दर उसे मधुर कण्ठसे पुचकारते हैं—ना, मेरा मोहना ! थोड़ा पी ले।

मधुमङ्गल—देख कानू ! तू जबतक यहाँ रहेगा, तबतक न तो तेरा मोहना दूध पियेगा, न तेरी श्यामली घास खायेगी।

फिर मधुमङ्गल श्यामसुन्दरको पूर्वकी तरफ खींच ले चलता है। श्यामली हुँकार करने लगती है। श्यामसुन्दर फिर धीरेसे लौट आते हैं तथा कहते हैं—मेरी प्यारी श्यामली ! तू खा ले, मैं तबतक शेफालिकाको दुह आऊँ।

श्यामली यह सुनकर घास खाने लगती है। श्यामसुन्दर आगे बढ़ते हैं। इस प्रकार प्रत्येक दुही जानेवाली गाय यह अनुभव करती है कि श्यामसुन्दर मेरे पास आये हैं। किसीने यह अनुभव किया है कि प्यारे श्यामसुन्दरने अपने हाथोंसे मेरा दूध दुहा। किसीने यह अनुभव किया है कि दुहा तो किसी गोपने है, पर श्यामसुन्दर उतनी देरतक मुझे थपकी लगाते रहे हैं। किसीने यह अनुभव किया है कि प्यारे श्यामसुन्दरने अपने हाथसे हमें दाना खिलाया है। किसीने यह अनुभव किया है कि प्यारे श्यामसुन्दरने मेरे गलेमें माला पहनायी है। किसीने यह अनुभव किया है कि प्यारे श्यामसुन्दरने अपने हाथोंसे मेरे सींगमें घी लगाया है। सारांश यह है कि प्रत्येक गाय एवं बछड़ेने किसी-न-किसी रूपसे श्यामसुन्दरके स्पर्श-सुखका अनुभव किया है एवं वे आनन्दमें डूब गये हैं। अब श्यामसुन्दर गोशालाकी पूर्वी चहारदीवारीके पास आ पहुँचते हैं। वहाँ एक अत्यन्त सुन्दर शिला पड़ी है। शिला भूमिसे दो गज ऊँची है। उसपर चढ़नेके लिये सीढ़ियाँ बनी हैं। श्यामसुन्दर उसीपर चढ़कर ऊपर जा पहुँचते हैं तथा पैर लटकाकर दक्षिणकी ओर मुँह करके बैठ जाते हैं। यहाँसे श्रीप्रियाकी श्यामसुन्दर एवं श्यामसुन्दरकी श्रीप्रिया स्पष्ट दिखलायी पड़ रही हैं। सुबल मधुमङ्गल श्रीदाम आदि सखा भी शिलाके ऊपर प्यारे श्यामसुन्दरकी ओर मुख करके कोई बैठे हुए हैं, कोई खड़े हैं। प्यारे श्यामसुन्दर अब फेंटसे वंशी निकालते हैं तथा उसमें सुर भरना प्रारम्भ करते हैं। मधुरतम स्वर-लहरी समस्त गोशालाको

निनादित करने लगती है। स्वर-लहरी श्रीप्रियाके कानोंमें भी जा पहुँचती है, पर वहाँ तो और भी विलक्षण रूपमें पहुँची! श्रीप्रिया स्पष्ट यह अनुभव कर रही हैं कि मेरे प्रियतम प्राणनाथ अपने हृदयके समस्त प्यारको लेकर मधुरतम कण्ठसे यह गा रहे हैं—

त्वमसि मम भूषणं त्वमसि मम जीवनं त्वमसि मम भवजलधिरत्नम्।
भवतु भवतीह मयि सततमनुरोधिनी तत्र मम हृदयमतियत्नम्॥
(गीतगोविन्द—१०/३०)

(प्रिये! तू मेरे जीवनकी शोभा है। नहीं, नहीं, प्रिये! तू ही मेरा जीवन भी है। देख, प्राणोंके अणु-अणुके रूपमें तू मेरे अंदर छायी हुई है। शरीरके अणु-अणुमें आभूषण बनकर चिपटी हुई है। आह! मेरे-जैसे दीन व्यक्तिके लिये तू अनमोल रत्न है। मैं भव-सागरमें तेरे-जैसे अनमोल रत्नकी लालसासे ही टिका हुआ हूँ। मेरे हृदयकी रानी! मैं झूठ कह रहा हूँ या सच, यह तू स्वयं जानती है। मेरे हृदयका कोना-कोना इस चेष्टासे पूर्ण है कि तेरे कोमल हृदयका समस्त प्यार निरन्तर मेरी ओर बहता रहकर मुझे कृतार्थ करता रहे, मैं निहाल होता रहूँ।)

प्यारे श्यामसुन्दरकी इस स्वर-लहरीका प्रभाव श्रीप्रियाके ऊपर इतना गम्भीर पड़ता है कि श्रीप्रियाके लिये खड़ी रहना असम्भव हो जाता है। श्रीप्रियाके पैर लड़खड़ाने लगते हैं। समस्त अङ्गोंमें कम्पन होने लग जाता है। मञ्जरी अपनी भुजाओंसे श्रीप्रियाको पकड़ लेती है तथा वहाँसे उत्तरकी ओर स्थित बेंचपर धीरे-धीरे ले जाकर बैठा देती है। श्रीप्रिया कुछ क्षण स्थिर बैठी रहती हैं। हृदयमें भावोंकी तरंग-ही-तरंग उठ रही हैं। श्रीप्रिया कुछ गम्भीर मुद्रामें उठ खड़ी होती हैं। वे पुनः घेरेके पास खड़ी हो जाती हैं। फिर कुछ दक्षिणकी तरफ बढ़ती हैं। कुछ दूर चलकर खड़ी हो जाती हैं। एक विशाल कदम्ब-वृक्ष नीचे लग रहा है। वृक्ष घेरेसे भी पन्द्रह-बीस हाथ ऊपर उठा हुआ है। उसकी कई डालियाँ घेरेको छू रही हैं। श्रीप्रिया उसी कदम्बकी एक टहनीको पकड़कर उससे एक पत्ता तोड़ लेती हैं तथा एक पत्ता और तोड़कर ऐसी चेष्टा करती हैं मानो चाहती हैं कि दोनों पत्तोंको जोड़ दूँ। पर जोड़नेका कुछ भी साधन उपलब्ध नहीं होनेपर दूसरे पत्तेको अपनी कञ्चुकीमें रख लेती हैं। श्रीप्रियाकी आँखें भरी हुई हैं। दृष्टि निरन्तर श्यामसुन्दरकी ओर लगी

हुई है। अभी भी श्यामसुन्दरकी वंशीमें श्रीप्रियाको यह स्पष्ट सुन पड़ रहा है—त्वमसि मम भूषणं त्वमसि मम जीवनम्.....।

अब प्रिया ठीक उसी स्वरमें स्वर मिलाकर गुनगुनाने लगती हैं; पर स्वर अस्पष्ट है। कुछ क्षण गुनगुन करती हुई रुककर उस मञ्जरीको पनबट्टा लानेके लिये कहती हैं। मञ्जरी पनबट्टा लाती है। श्रीप्रिया संकेतमें ही मञ्जरीसे कुछ देनेके लिये कहती हैं। मञ्जरी संकेत समझ जाती है। वह पनबट्टा खोलकर सरौतेसे एक लवङ्गको अत्यन्त शीघ्रतासे पतली सींककी तरह काट-छाँटकर श्रीप्रियाके हाथमें पकड़ा देती है। श्रीप्रिया उसी लवङ्गसे कदम्बके पत्तेपर गुनगुनाती हुई लिखने लगती हैं—

रहसि संविदं हृच्छयोदयं प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम्।
बृहदुरःश्रियो वीक्ष्य धाम ते मुहुरतिस्पृहा मुह्यते मनः॥
(श्रीमद्भागवत—१०/३१/१७)

पत्तेपर यह लिखकर प्यारे श्यामसुन्दरकी ओर देखती हुई कहने लगती हैं—प्राणाधार! सब स्मरण है। आह! वह दृश्य भी कभी भूल सकती हूँ?

फिर श्रीप्रिया कुछ सोचने लगती हैं। फिर कुछ देर बाद कहती हैं—पवन! जिस तरह तू मेरे प्राणनाथका अङ्ग-सौरभ अपने हृदयमें छिपाकर ले आया है, उसी तरह मेरे इस पत्रको भी हृदयमें छिपाकर प्राणनाथके पास पहुँचा दे।

यह निवेदन करनेके बाद श्रीप्रिया उस पत्तेको आकाशमें उछाल देती है। उछालकर अपनी आँखें कुछ क्षणके लिये मूँद लेती हैं। पत्ता वायुमें कुछ क्षण भँवराकर क्षणके नीचे गिर जाता है, पर रानी उसे देख नहीं पातीं। प्रेममें डूबी हुई रानी समझने लगती हैं कि पवन मेरा पत्र ले गया है। इस बातसे रानीका अणु-अणु प्रसन्नतासे भर जाता है।

कुछ ही क्षण बाद रानीकी प्रेममयी आँखें अधीर हो उठती हैं। रानी देखना चाहती हैं कि मेरे प्राणनाथ मेरा वह पत्र पढ़ लें। रानी देर होते देखकर उस मञ्जरीसे कहती हैं—अच्छा, तू देख! श्यामसुन्दरके पास वह पत्र पहुँच गया है या नहीं। मेरी आँखें ठीकसे नहीं देख रही हैं। वह पत्र अवश्य पहुँच गया होगा।

रानीकी बात सुनकर मञ्जरी कुछ विचारमें पड़ जाती है कि क्या उत्तर दूँ। इसी समय मधुमङ्गल श्यामसुन्दरके कंधेको हिलाकर एवं हाथमें कुछ लेकर उन्हें दिखलाने लगता है। इसे देखकर रानी समझती हैं कि मेरा वह पत्तेवाला पत्र ही मधुमङ्गलने श्यामसुन्दरको दिया है। अतः रानी स्वयं कह उठती हैं—वह देख, पत्र पढ़ रहे हैं।

इतना कहते ही रानी मूर्च्छित हो जाती हैं। मञ्जरी उन्हें सँभाल लेती है। श्यामसुन्दर प्रियाका वदन छिप जानेके कारण वंशी बजाना बंद करके उठकर खड़े हो जाते हैं और उधर ही देखने लगते हैं। कुछ क्षणमें ही श्रीप्रियाको अपने-आप चेतना आ जाती है। श्रीप्रिया पुनः घेरेपर शरीरका भार देकर प्यारे श्यामसुन्दरकी ओर देखने लग जाती हैं।

इसी समय नन्दरायजी तीव्र गतिसे चलते हुए वहाँ आ जाते हैं, जहाँ श्यामसुन्दर खड़े हैं। अपने पिताको आये हुए देखकर श्यामसुन्दर कुछ झेंपते हुए-से फुर्तीसे शिलासे नीचे उतर पड़ते हैं। नन्दरायजी बड़ी शीघ्रतासे श्यामसुन्दरको चिपटा लेते हैं। कुछ क्षण बाद कहते हैं—बेटा! तेरी माँ बावली हो रही है कि कनुआ कहाँ चला गया? तू शीघ्र चल!

पिताकी बात सुनकर श्यामसुन्दर शीघ्रतासे चल पड़ते हैं। कुछ ही दूर पश्चिमकी ओर बढ़े थे कि मैया आती हुई दीखती है। दोनोंकी दृष्टि मिल जाती है। श्यामसुन्दरको देखकर मैयाको किंचित् संतोष हो जाता है। वे गायोंकी भीड़में इधर-उधर अपने लल्लाको ढूँढती हुई फिर रही थीं, पर श्यामसुन्दर गोशालाके सर्वथा पूर्वी किनारेपर आ गये थे, अतः मैयाको मिले नहीं थे। इसीलिये मैया व्याकुल हो गयी थीं। श्यामसुन्दर अब मैया यशोदाके पास आ पहुँचते हैं। मैया हृदयसे लगाकर सिर सूँघने लगती हैं। फिर हाथ पकड़े हुए महलकी ओर बढ़ने लगती हैं। श्यामसुन्दर कहते हैं—मैया! थोड़ी देर और रहने दे। गायोंको यथास्थान पहुँचा दूँ।

मैया कहती हैं—ना, मेरे लाल! अब अँधेरा हो गया है। अब घर चल चलो।

माँका प्रेमभरा आग्रह श्यामसुन्दर टाल नहीं सके। मैया महलकी ओर चलने लगती हैं। अन्यान्य गोप गायोंको विश्रामस्थलकी ओर हाँक

ले चलते हैं। गायें एवं बछड़े बार-बार श्यामसुन्दरको ओर देखते हैं। श्यामसुन्दर चलते हुए अपने महलके बरामदेमें जा पहुँचते हैं। रानी एकटक देखती रहती हैं। कुछ क्षण बरामदेमें खड़े रहकर श्यामसुन्दर भी रानीके महलकी ओर देखते रहते हैं। फिर मैया आग्रह करती हुई श्यामसुन्दरको भीतर लेकर चली जाती हैं। रानीको जब श्यामसुन्दरका दिखलायी देना बंद हो जाता है तो वे आँखें मूँद लेती हैं। कुछ देर खड़ी रहकर वहीं छतपर बैठ जाती हैं। सामने मञ्जरी बैठी है। उसके बायें कंधेपर हाथ रखकर वे कुछ क्षण उसके मुखकी ओर देखती हैं। मञ्जरी कहती है—मेरी रानी! अब नीचे चली चलो।

रानी कुछ नहीं बोलतीं; पर कुछ क्षण बाद करुणाभरी मुद्रामें धीरे-धीरे यह गाने लगती हैं—

मोहनी मूरत साँवरि सूरति नैना बने बिसाल।
अधर सुधारस मुरली राजत उर बैजंती माल॥
बसो मोरे नैनन में नंदलाल॥

एक-दो बार इतनी-सी कड़ीकी आवृत्ति करके रानी चुप हो जाती हैं। कुछ क्षण बाद उस मञ्जरीको अपने हृदयसे लगाकर रोने लग जाती हैं। मञ्जरी कुछ समझ नहीं पाती कि रानीको कैसे शान्त करूँ। ललितादि मैया यशोदाके घर बहुत-से पकवान आदि लेकर गयी हुई हैं। प्यारे श्यामसुन्दरके लिये रानीने बहुत-सी भोजन-सामग्री बनायी थी, वही लेकर गयी हुई हैं। नीचे एक-दो मञ्जरी और हैं, पर रानीके पास इस समय एक वही मञ्जरी है।

कुछ देरतक आँसू बहानेके बाद रानी फिर चुप हो जाती हैं तथा कहती हैं—तू जो वह पद उस दिन मधुर कण्ठसे गा रही थी, आज भी गा।

मञ्जरी गाने लग जाती है—

ऐसो पिये जान न दीजै हो।
चलो री सखी मिलि राखिये नैनन रस पीजै हो।
स्याम सलोनो साँवरो मुख देखत जीजै हो॥
जोइ जोइ भेष सों हरि मिलै सोइ सोइ कीजै हो।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर बड़भागन रीजै हो॥

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

प्रेमाप्लावन लीला

श्रीयमुनासे निकले हुए स्रोतके उद्गमपर नीले रंगका पुल शोभा पा रहा है। उसी पुलके घेरेपर दक्षिणकी ओर मुख करके झुकी हुई श्रीप्रिया खड़ी हैं। प्यारे श्यामसुन्दरके आनेकी प्रतीक्षामें प्रिया उसी पुलपर बैठी थीं, पर हृदयका प्यार उद्वेलित हो जानेसे बैठी नहीं रह सकीं। घेरेपर शरीरका भार देकर खड़ी हो गयीं तथा उसी पथकी ओर देखने लगीं जिससे श्यामसुन्दरके आनेकी सम्भावना है।

रात्रि प्रहरभर व्यतीत हो चुकी है। आज कृष्णपक्षकी प्रतिपदा है, फिर भी चन्द्रदेव काफी ऊपर उठ चुके हैं। चन्द्रबिम्ब स्रोतके जलमें प्रतिबिम्बित हो रहा है तथा धाराके वेगसे हिल रहा है। उसी हिलते हुए चन्द्रबिम्बकी ओर रानीकी दृष्टि चली जाती है। रानीकी दृष्टिमें श्यामसुन्दरकी त्रिभङ्गी मोहिनी छवि बसी हुई है, इसलिये उनको उस चन्द्रबिम्बमें भी प्यारे श्यामसुन्दर ही दीख पड़ रहे हैं। वही चिर परिचित हँसता हुआ मुखारविन्द रानीको स्रोतके निर्मल जलमें नाचता हुआ दीख रहा है।

पासमें बायीं ओर विशाखा खड़ी हैं। रानी हाथ बढ़ाकर विशाखाका दाहिना हाथ पकड़ लेती हैं। हाथकी एक-एक अँगुलीको क्रमसे स्पर्श करती हैं, फिर कुछ हँसकर कहती हैं—विशाखे! तू जानती है, श्यामसुन्दरको नाचना किसने सिखाया?

विशाखा भी कुछ हँसकर उत्तर देती हैं—तुम्हारी आँखोंने।

रानी विशाखाके हाथको झकझोरती हुई कहती हैं—मैं तुमसे सच्ची बात पूछ रही हूँ और तू विनोद कर रही है।

विशाखा बायें हाथसे रानीके दाहिने कंधेको पकड़ लेती हैं तथा मुस्कुराकर कहती हैं—विनोद नहीं, मैंने बिल्कुल सच्ची बात कही है।

यह सुनकर रानी कुछ देरतक चुप हो जाती हैं तथा एक बार गगनस्थित चन्द्रको एवं एक बार स्रोतके जलमें प्रतिबिम्बित बिम्बको

देखती हैं। पुनः दोनों जगह ही रानीको श्यामसुन्दरका मुख दीखता है। अब रानी कहती हैं—किसने नाचना सिखाया, मैं बताऊँ ?

विशाखा—बता !

रानी जलमें प्रतिबिम्बित बिम्बकी ओर अँगुलीसे संकेत करके कहती हैं—उधर देख।

विशाखा उधर ही देखती हैं। रानी भी दृष्टि गड़ाकर देखती हैं। इस बार रानीको स्रोतका जल एवं चन्द्रबिम्ब सर्वथा नहीं दीखता। उन्हें स्पष्ट प्रतीत होता है कि स्रोतकी बालुकापर अपने अङ्गोंको हिलाते हुए श्यामसुन्दर खड़े हैं। रानी झटपट बोल उठती हैं—अरे ! वे तो आ गये !

रानीकी यह बात सुनकर विशाखा खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं। उसे हँसती देखकर रानी लजा जाती हैं तथा यह समझने लगती हैं कि मुझे भ्रम हो गया था, यह इसलिये ही हँस रही है।

यमुनाकी धारा झर-झर करती हुई स्रोतकी राहसे प्रवाहित हो रही है। रानी अब उस फेनिल (फेनसे भरी हुई) धाराकी ओर देखने लगती हैं। कुछ देर देखती रहती हैं। दृष्टि फेनपर है, पर मन भावोंकी तरंगोंमें डूबकर किसी सुदूर नीरव शान्त निकुञ्जमें प्रियतम श्यामसुन्दरके साथ विनोद करनेका अनुभव कर रहा है। विशाखा चाहती हैं कि यह विशेष गम्भीर चिन्तामें न डूबे। इसलिये रानीकी ठोड़ीको हिलाकर कहती हैं—क्यों, बोलती नहीं ? चुप क्यों हो गयी ?

रानी भाव-राज्यसे नीचे उतर आती हैं तथा भाव छिपानेके उद्देश्यसे हँसने लगती हैं। फिर कुछ सोचकर कहती हैं—चल, पुलके नीचे चलें।

अब रानी विशाखाका हाथ पकड़े हुए खींचती हुई-सी पश्चिमकी ओर चलने लगती हैं। पुलकी सीमा आनेपर दक्षिणकी ओर मुड़कर सुन्दर सीढ़ियोंपर पैर रखती हुई पुलके नीचे स्रोतके जलके पास पहुँच जाती हैं तथा जलको स्पर्श करती हुई सीढ़ीके ऊपरवाली सीढ़ीपर बैठ जाती हैं। विशाखा श्रीप्रियाकी बायीं ओर खड़ी रहती हैं, अवश्य ही रानीके द्वारा दाहिना हाथ पकड़े रहनेके कारण कुछ झुक-सी गयी हैं।

चन्द्रमाकी शुभ्र किरणें जलपर, जलके फेनपर, सीढ़ियोंपर एवं रानीके मुखारविन्दपर पड़ रही हैं। पुलके नीचेसे आनेके कारण धारा मँडराकर कभी-कभी भँवरका आकार धारण कर लेती है। फेनके बुलबुले नाचते हुए सीढ़ियोंसे टकराते हैं एवं विलीन हो जाते हैं। रानी हाथपर बुलबुलोंको उठा लेती हैं। हाथपर आते ही वे बुलबुले विलीन हो जाते हैं। बात यह थी कि उन बुलबुलोंमें भी रानीको प्यारे श्यामसुन्दरकी छवि दीखती है। रानीका प्यारभरा हृदय भोली बालिकाके हृदय-जैसा बन जाता है, इसलिये बुलबुलोंको उठानेके लिये बार-बार हाथ बढ़ाती हैं।

विशाखा हँसती हुई कहती हैं—क्या कर रही है?

रानी विशाखाके हाथको झटका देकर उन्हें पासमें बैठा लेती है तथा एक आशाभरी मुद्रामें कहती हैं—अच्छा, तू उठा तो सही। सम्भवतः तेरे हाथपर बुलबुले आ जायँ।

विशाखा राधारानीके प्रेमभरे हृदयका अनुमान लगा लेती हैं और कहती हैं—मैं उठा लूँगी तो क्या देगी?

रानी चटपट बोल उठती हैं—तू जो कहेगी, वही दूँगी।

विशाखा हँसती हुई अपने दोनों हाथोंकी अञ्जलिमें फेनका जल उठा लेती हैं। दोनों हाथोंमें उठानेके कारण विशाखाकी अञ्जलिमें बुलबुले कुछ क्षण बने रहते हैं। रानी उनमें प्यारे श्यामसुन्दरकी छवि स्पष्ट देख पाती है तथा देखकर आनन्दमें निमग्न हो जाती हैं। विशाखा हँसती हुई तुरंत अञ्जलिसे जल गिरा देती हैं और कहती हैं—देख, मैंने बुलबुले उठा लिये न!

रानी प्रेममें भरकर विशाखाको हृदयसे लगा लेती हैं। फिर विशाखाके अञ्चलसे अपना दाहिना हाथ पोंछती हुई रानी उठकर दो सीढ़ी ऊपर चढ़ जाती हैं तथा नीचेकी सीढ़ीपर पैर लटकाकर बैठ जाती हैं। विशाखा रानीकी दाहिनी ओर चली आती हैं तथा उनके पासमें बैठ जाती हैं। कुछ मञ्जरियाँ एवं तुङ्गविद्या, इन्दुलेखा, चम्पकलता सीढ़ियोंसे उतरती हुई इसी समय वहाँ आ जाती हैं तथा रानीको घेरकर इधर-उधर बैठ जाती हैं। चित्रा रानीकी पीठके पास बैठी हैं। वे गर्दन

घुमाकर एक बार पीछे देखती हैं तथा चित्राको बैठी देखकर कहती हैं—अच्छा, तू आ गयी। अब एक कथा सुना।

चित्रा कहती है—सायंकाल हमलोगोंके पीछेसे तू जो सुन रही थी, उसे ही पूरा होने दे।

चित्राकी बात सुनकर रानी अतिशय उल्लासमें भरकर कहती हैं—हाँ, हाँ, उसे भुला! बहुत ठीक याद दिलायी।

चित्रा एक मञ्जरीको पुकारती है। मञ्जरी ऊपर बैठी हुई पुष्पोंकी माला बना रही थी। पुकार सुनते ही डलिया हाथमें लिये ही दौड़ पड़ती है तथा ऊपरकी सीढ़ीपर खड़ी होकर पूछती है—क्यों चित्रारानी! मुझे पुकारा है क्या?

उसकी बोली सुनकर राधारानी अतिशय प्यारसे कहती हैं—हाँ, हाँ, इधर आ।

मञ्जरी डलिया रख देती है तथा रानीके सामने आकर खड़ी हो जाती है। रानी हाथ पकड़कर उसे बैठा लेती हैं। मञ्जरी नीचेकी सीढ़ीपर बैठ जाती है। रानी अपने दोनों हाथ उसके गलेमें डाल देती हैं। कुछ क्षण उसके मुखकी ओर देखती रहती हैं, फिर प्यारमें भरकर उसके होठोंको चूम लेती हैं। मञ्जरी प्रेममें डूब जाती है। उसकी आँखोंसे प्रेमके आँसू बहने लगते हैं। रानी अपने अञ्चलसे उसकी आँखें पोंछने लगती हैं। कुछ क्षण वहाँ एक भाव भरी नीरवता-सी छा जाती है। अब रानी अतिशय उत्कण्ठाके स्वरमें कहती हैं—हाँ, अब आगे सुना।

मञ्जरी अपना बायाँ हाथ श्रीप्रियाके दाहिने जंघेपर रख देती है तथा प्रियाके मुखारविन्दकी ओर देखती हुई कहना प्रारम्भ करती है—रानी! फिर मैं साहस करके उद्यानके भीतर प्रवेश कर गयी। कुछ दूर दक्षिणकी ओर बढ़ती चली गयी। आगे बढ़नेपर देखती हूँ कि मल्लिका पुष्पोंकी अतिशय सुन्दर क्यारियाँ लगी हैं। टहनियाँ पुष्पोंसे लद रही हैं। मैं आनन्दमें भर गयी। बायें हाथसे अञ्चलकी झोली बनाकर दाहिने हाथसे पुष्पोंको तोड़कर अञ्चलमें रखने लगी। उस समय मेरा मन किसी अनिर्वचनीय सरसतासे उत्तरोत्तर भरता जा रहा था। हृदयमें एक

गुदगुदी-सी हो रही थी। मैं अपने हृदयके भावोंको संवरण करनेमें असमर्थ-सी होने लग गयी। इसलिये भावके वेगको कुछ हल्का करनेके लिये मैं मधुर कण्ठसे गाने लगी—

चालाँ वाही देस प्रीतम पावाँ चालाँ वाही देस।
कहो कसूमल साड़ी रँगावाँ कहो तो भगवाँ भेस॥
कहो तो मोतियन माँग भरावाँ कहो छिटकावाँ केस॥ —मीरा

मैं बार-बार आवृत्ति करने लगी—'कहो तो मोतियन माँग भरावाँ, कहो तो मोतियन माँग भरावाँ, कहो छिटकावाँ केस, कहो छिटकावाँ केस'। साथ ही पुष्प भी तोड़ती जा रही थी। उसी समय मेरी आँखें पश्चिम एवं दक्षिणकी ओर चली गयी। मैं देखती हूँ कि मुझसे केवल दस-बारह हाथ दूर एक वन्य वृक्षके नीचे प्यारे श्यामसुन्दर खड़े हैं तथा प्यारभरी दृष्टिसे मेरी ओर देख रहे हैं। श्यामसुन्दरको वहाँ खड़े देखकर मैं लज्जित हो गयी। जीवनमें अकेलेमें श्यामसुन्दरके दर्शनका यह प्रथम अवसर था।...

प्यारे श्यामसुन्दर मधुर कण्ठसे बोले— री! तू तो बहुत सुन्दर गाती है।

श्यामसुन्दरके मुखसे यह सुनकर मैं और भी लज्जित हो गयी। कुछ भी बोल नहीं सकी। प्यारे श्यामसुन्दरने अतिशय सरलतासे पूछा—इस समय यहाँ पुष्प क्यों तोड़ रही है?

मैं धीरेसे बोली—रानीने ही पुष्प तोड़ लानेके लिये कहा है, इसलिये आयी हूँ।

रानी! तुम्हारा नाम सुनते ही प्यारे श्यामसुन्दरकी आँखोंमें आँसू भर आये; पर उन्होंने उसे छिपा लेना चाहा। शीघ्रता पूर्वक पीताम्बरसे अपना मुँह पोंछनेके बहानेसे आँसू पोंछ लिये, फिर बोले—इधर आ, एक बात सुन।

रानी! प्यारे श्यामसुन्दरके उस स्वरमें कुछ ऐसी अद्भुत मधुरता थी, उस ध्वनिसे कुछ ऐसा निर्मल प्रेम टपक रहा था कि मैं अपनी सुध-बुध खोने लग गयी। यह स्मरण था कि प्यारे श्यामसुन्दरने मुझे बुलाया है;

पर पैर भूमिसे नहीं हटते थे मानो वे भूमिसे सर्वथा चिपके हुए हों। पुनः श्यामसुन्दरकी कण्ठ-ध्वनि सुनायी पड़ी—क्यों, नहीं आयेगी ?

अब अपनेको सँभाल नहीं सकी। भूमिपर वहीं बैठ गयी। बैठते ही मूर्च्छित हो गयी। मुझे यह भी ज्ञान नहीं रहा कि यहाँ क्या हो रहा है ! कुछ देर बाद चेतना आयी। मैं देखती हूँ कि प्यारे श्यामसुन्दर पासमें खड़े हैं। वे मन्द-मन्द मुस्करा रहे हैं। मेरा अञ्चल पुष्पोंसे भरा है। मैं आश्चर्यसे श्यामसुन्दरकी ओर देखती हुई सोचने लगी कि मैं तो बहुत कम पुष्प तोड़ पायी थी, इतने पुष्प मेरे अञ्चलमें कैसे आ गये। मैं सरलतासे प्यारे श्यामसुन्दरसे पूछ बैठी—इतने पुष्प कहाँसे आ गये ?

श्यामसुन्दर खुलकर हँसने लगे; फिर बोले—बावली ! तू आयी थी पुष्प तोड़ने और यहाँ नींद लेने लग गयी ! अपनी रानीके पास खाली हाथ जाती और रानीसे सब बातें कहती तो तेरी रानी मुझे उपालम्भ देती कि तुम्हारे कारण उसे खाली हाथ लौटना पड़ा, तुमने उसे खाली हाथ लौटा दिया। इसलिये मैंने पुष्प तोड़कर तुम्हारे अञ्चलमें रख दिये ! तेरा कार्य कर दिया।

प्यारे श्यामसुन्दरकी बात सुनकर मैं पुनः प्रेममें विभोर होने लग गयी। वे खड़े रहकर सरल हँसी हँस रहे थे। मैं एकटक उनकी ओर देखती जा रही थी। फिर कुछ देर बाद इच्छा न होने पर भी ऊपरसे बोली—तो मैं अब जाती हूँ।

प्यारे श्यामसुन्दर बोले—अरी ! मैंने तेरा काम कर दिया, फिर इतनी शीघ्रतासे कृतघ्न बन गयी !

मैं हँस पड़ी और हँसती हुई बोली—बोलो, बदलेमें क्या चाहते हो ?

प्यारे श्यामसुन्दरने कहा—तू भी मेरा एक काम कर दे।

मैं अब खिलखिलाकर हँस पड़ी। अब संकोच कम हो गया था। श्यामसुन्दरने फिर कहा—पर इस बातको कोई जानने न पावे।

मैं बोली—पहले काम तो बताओ।

श्यामसुन्दरने हँसकर कहा—बता, किसीसे बतायेगी तो नहीं ?

मैं बोली—यह पहले कैसे कह दूँ ?

श्यामसुन्दर इस बार कुछ गम्भीर होकर बोले—सचमुच तेरेसे एक काम लेना है। तू विनोद मत समझ।

मैं भी गम्भीर होकर बोली—मैं कहाँ विनोद समझ रही हूँ।

श्यामसुन्दर अतिशय प्रेमसे बोले—देख, संध्या समय गोष्ठमें जहाँ बैठकर मैं वंशी बजाऊँगा, उसके ठीक सामने दक्षिणकी तरफ यमुना-तटपर एक घड़ी रात बीत जानेपर तू आ जाना। वहाँ तुझे सुबल खड़ा मिलेगा। वह तुझे जो दे, उसे तू अपनी रानीको ले जाकर दे देना। समझी ?

मैं बोली—अच्छी बात है।

श्यामसुन्दर—पर उसके पहले तुमसे एक वस्तु लेनी है।

मैं—कैसी वस्तु ?

श्यामसुन्दर—तू देगी तो ?

मैं कुछ सोचकर बोली—हाँ, दे दूँगी।

श्यामसुन्दर—तेरे पास एक अँगूठी है न ?

मैं—मेरे पास तो बहुत-सी अँगूठियाँ हैं।

श्यामसुन्दर हँसकर बोले—मैं उसकी बात कह रहा हूँ, जिसके नगमें तेरी रानीका चित्र अङ्कित है।*

मैं—तो फिर ?

श्यामसुन्दर—तू मुझे वह दे दे।

मैं—बहुत ठीक, दे दूँगी; पर तुम लेकर क्या करोगे ?

यह सुनते ही श्यामसुन्दरकी आँखें भर आयीं। वे बोलने चले, पर बोल नहीं सके, उनका गला रुँध गया। कुछ क्षणोंके बाद गद्गद कण्ठसे

---

* मञ्जरीकी उस अँगूठीमें राधारानीका एक सुन्दर चित्र इस ढंगसे जड़ा हुआ है कि उसे आँखके पास ले जाकर देखनेसे वस्तुतः ऐसा दिखलायी देता है कि मानो सचमुच साक्षात् रानी सामने खड़ी हो; पर वह अनजानको नहीं दीख सकता। जो उसे देखनेकी कला जानता हो, उसे ही दीखेगा।

बोले—देख, जितनी देर तेरी रानी पास रहती है, उतनी देर तो इस संसारको ही नहीं, अपने-आपतकको भूला रहता हूँ; पर प्रियाके जाते ही मन विक्षिप्त हो जाता है। आँखोंसे चारों ओर केवल प्रिया-ही-प्रिया दीखने लगती हैं। आवेशमें आकर प्रियाको हृदयसे लगाने बढ़ता हूँ, पर जितना आगे बढ़ता हूँ, मेरी प्रियाकी वह छवि पुनः उतनी ही दूर आगे हटकर खड़ी प्रतीत होने लगती है। इस प्रकार बहुत बार करनेपर समझ पाता हूँ कि नहीं, यह मेरा भ्रम है। मेरी प्रिया होतीं तो मुझे व्याकुल नहीं देख सकतीं। मैं हताश होकर बैठ जाता हूँ; पर मेरे प्राण और भी अधिक छटपटाने लगते हैं। कुछ भी उपाय नहीं सूझता। आज रूपने तेरी उस अँगूठीकी चर्चा की थी। उसे सुनकर मैं सोचने लगा कि यदि तू वह अँगूठी दे दे तो फिर उस अँगूठीको ही हृदयसे लगा-लगा करके अपनी विरह-व्यथा कम करता रहूँगा।

प्यारे श्यामसुन्दरकी बात सुनकर मैं स्वयं प्रेमसे रोने लग गयी। रोती हुई, अपनी अँगुलीसे अँगूठी उतारकर प्यारे श्यामसुन्दरकी अँगुलीमें पहनाने चली। मेरा सारा शरीर काँप रहा था। बड़ी कठिनतासे धैर्य धारण करके मैंने प्यारे श्यामसुन्दरकी अँगुलीमें अपनी अँगूठी पहना दी। पहनाकर अलग हटकर खड़ी हो गयी।

प्यारे श्यामसुन्दरने गद्गद कण्ठसे कहा—तुमने आज मुझे मोल ले लिया।

प्यारे श्यामसुन्दरके मुखसे यह सुनकर मेरा हृदय और भी कातर हो गया। मैं मन-ही-मन सोचने लगी—प्यारे श्यामसुन्दर यह क्या कह रहे हैं? रानीके अणु-अणुपर, रानीसे सम्बद्ध समस्त वस्तुओंके अणु-अणुपर उनका अनादिसिद्ध अधिकार है। अँगूठी ही नहीं, उसके साथ-साथ मेरा अणु-अणु उनका ही है। अपनी वस्तु लेनेमें प्यारेको संकोच क्यों हुआ?

रानी! यह सोचते-सोचते मैं इतनी अधीर हो उठी कि मेरे लिये खड़ी रहना असम्भव हो गया। मैं बैठ गयी। मेरी आँखोंसे छल-छल करते हुए आँसू बह रहे थे। प्यारे श्यामसुन्दर बैठ गये। अपने पीताम्बरसे मेरे आँसू पोंछने लगे। कुछ देर बाद मुझे धैर्य हुआ। प्यारे श्यामसुन्दरने इस बार मुस्कुराकर कहा—देख! तुझे ज्ञान नहीं। दिन बहुत अधिक

ढल चुका है। तुझे बहुत विलम्ब हो गया है। तेरी रानी तुम्हारी बाट देख रही होगी। अब शीघ्र जाकर पुष्प दे दे।

प्यारे श्यामसुन्दरकी यह बात सुनकर मुझे चेत हुआ। मैं तुरंत ही खड़ी हो गयी। प्यारे श्यामसुन्दरने कहा—मेरे पीछे चली चल। मैं तुम्हें यमुना-तटपर पहुँचा दूँगा, नहीं तो तू पुनः रास्ता भूल जायेगी।

वे आगे-आगे चलने लगे और मैं पीछे-पीछे चल पड़ी। थोड़ी देरमें ही यमुना-तटपर आ पहुँची। वहाँ पहुँचकर वे मेरी ओर अतिशय प्यारभरी दृष्टिसे देखने लगे। मैं संकोचवश कभी उनकी ओर देखती, कभी नीचे दृष्टि कर लेती। वे हँसते हुए फिर बोले—बावली! देर हो गयी है, शीघ्र चली जा।

फिर वे हँसते हुए एक झाड़ीके पीछे जाकर सघन वनमें प्रवेश कर गये। कुछ क्षण मैं खड़ी-खड़ी देखती रही। फिर आनन्दमें भरी हुई पुष्पोंको अञ्चलमें लिये हुए शीघ्रतासे लौटी। महलके पास पहुँची तो देखा कि रूपदेवी शीघ्रतासे मेरी ओर दौड़ रही है। पास पहुँचकर रूपदेवी बोली—री! तुमने तो आज बहुत सुन्दर शृङ्गार किया है। मैं तो भ्रममें पड़ गयी। पहचान ही नहीं सकी कि तू है। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि रानी आ रही हैं। मैं घबराकर दौड़ी कि रानी यहाँ इस समय कैसे आ गयीं। पास आनेपर देखा कि ना, रानी नहीं, तू है।

अब रूपदेवी मुझपर प्यारकी वर्षा करने लगी। कुछ क्षण एकटक मेरी ओर देखती रहनेके बाद उन्होंने मुझे हृदयसे लगा लिया। वह मेरे सिरपर हाथ फेरने लगी। मेरा अञ्चल खिसक गया। रूपदेवी पुनः सचकित स्वरमें बोली—महा आश्चर्य! तू तो हम सबकी अपेक्षा भी चतुर हो गयी? इतनी सुन्दर वेणी तो मैं भी नहीं बना सकती।

रूपदेवीकी बात सुनकर मैं पुनः विचारमें पड़ गयी और सोचने लगी—अयँ! यह कैसे हो गया? मैं तो स्नान करके कपड़े पहनकर कञ्चुकी कसती हुई तुरंत चल पड़ी थी। रानीने कहा था कि नहाकर तुरंत चली जा; इसलिये केशोंको भी भीगे छोड़कर उन्हें पीठपर बिखेरकर दौड़ पड़ी थी। फिर किसने वेणी बनायी? किसने पुष्प खोंसे? किसने

सब अङ्गोंका शृङ्गार किया ! ओह ! जब मैं मूर्च्छित हो गयी थी, उस समय प्यारे श्यामसुन्दरने मेरे अञ्चलमें फूल भर दिये थे। अहा ! निश्चय ही उन्होंने उस समय मेरे केश भी सँवारे, मेरी वेणी बनायी एवं मुझे सजाया।

यह सब सोचकर मैं प्रेममें डूब गयी। रूपदेवीको सारी बातें सुना दी। सुनकर रूपदेवीकी आँखोंसे प्रेमके आँसू बह निकले। उसने मुझे पुनः हृदयसे लगा लिया एवं बार-बार मेरे होठोंको चूमने लग गयी। फिर वह बोली—चल, तुझे रानीके पास ले चलूँ। तू आज सायंकाल रानीको सब सुना देना।

रूपदेवीके साथ मैं तुम्हारे पास आयी। मुझे देखते ही तुम्हें प्यारे श्यामसुन्दरकी अङ्ग-गन्ध मिली और तुम मूर्च्छित……।

मञ्जरी यह कह ही रही थी कि रानीने अपने दोनों हाथ बढ़ाकर उस मञ्जरीको हृदयके पास खींच लिया। रानीकी दशा प्रेमके कारण कुछ विचित्र-सी हो गयी। वह मञ्जरीको मानो अपने हृदयके भीतर घुसा लेना चाहती हो, इस प्रकार उसे कसकर हृदयसे चिपटा लिया। मञ्जरी रानीके हृदयसे लगकर प्रेममें इतनी तल्लीन हो गयी कि अब उससे कुछ भी बोला नहीं जाता था। सभी सखियाँ एवं अन्य मञ्जरियाँ भी सुनती-सुनती प्यारे श्यामसुन्दरके ध्यानमें इतनी तल्लीन हो गयीं कि अधिकांश बाह्य ज्ञान खो बैठीं।

इसी समय ललिता एवं अन्यान्य मञ्जरियोंके साथ प्यारे श्यामसुन्दर घाटपर आ पहुँचते हैं; पर यहाँ तो इतनी नीरवता छायी हुई है कि मानो मुनि-मण्डली समाधि लगाये बैठी हो। किसीको यह पता नहीं चला कि प्यारे श्यामसुन्दर आये हैं।

अब श्यामसुन्दर दबे पाँव घाटसे नीचे उतरते हैं। धीरे-धीरे आकर चित्राके बगलमें बैठ जाते हैं तथा अपने दोनों हाथोंसे रानीकी आँखोंको पीछेसे मूँद लेते हैं। रानी अपने प्रियतमका कर-स्पर्श पाकर एक बार तो चौंक जाती हैं, पर फिर सोचती हैं कि किसने आँखें मूँदी हैं ? प्यारे प्रियतम प्राणनाथ तो नहीं हैं ? ना, वे अभीतक सम्भवतः नहीं

आये होंगे। फिर हँसकर उच्च स्वरसे कहती हैं—हाँ, हाँ, पहचान गयी। ललिता? ना, ना, चित्रा?

रानी अपने हाथोंको ऊपर उठाकर प्यारे श्यामसुन्दरकी कलाईके पास ले जाती हैं। रानीके हाथ श्यामसुन्दरके कङ्कणसे छू जाते हैं। रानी अकचकाकर उच्च स्वरसे कह उठती हैं—अरे!

अब रानी बल लगाकर हाथोंको आँखोंसे हटाकर देखती हैं। श्यामसुन्दर दीख पड़ते हैं। रानी हँसती हुई शीघ्रतासे खड़ी हो जाती हैं। सभी सखियाँ एवं मञ्जरियाँ भी हँसती हुई खड़ी हो जाती हैं। प्यारे श्यामसुन्दर रानीको हृदयसे लगा लेते हैं। गलबाँही डाले हुए प्रिया-प्रियतम सीढ़ियोंपर पैर रखते हुए सोतके घाटके ऊपर चले आते हैं। वृन्दादेवी सबको ऊपरकी एक वेदीपर ले जाती हैं। वेदी अतिशय सुन्दर ढंगसे सजी हुई है। प्रिया-प्रियतम वेदीपर अपने पैर नीचे लटकाकर बैठ जाते हैं। वृन्दा एवं वृन्दाकी दासियाँ सेवामें लग जाती हैं। मधुमतीमञ्जरी वीणाके तारोंको छेड़ती हुई अतिशय सुरीले कण्ठसे गाने लगती है—

नंद-कुल-चंद वृषभानु-कुल-कौमुदी, उदित वृन्दा-विपिन विमल अकासे।
निकट बेष्टित सखि-वृंदवर-तारिका लोचन चकोर तिन रूप-रस-प्यासे॥
रसिक-जन-अनुराग-उदधि तजि मरजाद, भाव अगनित कुमुदिनी-गन-विकासे।
कहि गदाधर सकल विस्व असुरनि बिना, भानु भव ताप अग्यान न बिनासे॥

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

निशानुरञ्जन लीला

श्रीयमुना-पुलिनपर प्रिया-प्रियतम घूम रहे हैं। सखियोंकी टोली आगे-पीछे तथा दाहिने-बायें घेरे हुए चल रही है। श्यामसुन्दरने बायें हाथसे श्रीप्रियाजीकी कमरके दाहिनी ओरके अञ्चलके एक छोरको पकड़ रखा है तथा प्रियाजी श्यामसुन्दरके बायें कंधेको दाहिने हाथसे पकड़े हुई हैं एवं बायें हाथसे कमलका पुष्प डंटीके सहारे पकड़कर घुमाती जा रही हैं। श्यामसुन्दरके दाहिने हाथमें सोनेकी बनी हुई मुरली है। इस प्रकार प्यारसे सने हुए दोनों एक-दूसरेकी ओर बीच-बीचमें झुकते हुए वनकी शोभा निहारते हुए बढ़ रहे हैं। मुख्य रूपसे पूर्वकी ओर बढ़ रहे हैं, पर पुष्पोंका चयन करते हुए पथ छोड़कर कभी उत्तरकी ओर एवं कभी दक्षिणकी ओर मुड़ जाते हैं।

चन्द्रदेवकी शुभ्र चाँदनीसे वन जगमग-जगमग कर रहा है। श्रीप्रिया एवं सभी सखियाँ चम्पई रंगकी रेशमी साड़ियाँ पहने हुए हैं। साड़ियोंकी ज्योतिसे चन्द्रमाकी किरणोंका संयोग होकर एक विचित्र ही आभा फैल रही है। श्यामसुन्दर धोती पहने हुए हैं तथा उनके कंधेपर दोनों ओर लटकती हुई गाढ़े पीले रंगकी चादर शोभा पा रही है। चादरपर जरीका काम किया हुआ है, जो चाँदनीमें चमचम कर रहा है। श्रीश्यामसुन्दरके अङ्गसे नीलिमा-मिश्रित एवं श्रीप्रियाके अङ्गसे पीत-पुटित शुभ्र ज्योति निकल रही है तथा अत्यन्त मनमोहक सुगन्धि बढ़-बढ़कर वन्य पुष्पोंकी सुगन्धिको अनन्त गुना बना रही है।

शीतल-मन्द-सुगन्धित पवन प्रवाहित हो रहा है। पवनके झोंकोंसे चम्पा, स्थल-कमल एवं विभिन्न पुष्पोंके वृक्ष हिल रहे हैं। हिल-हिलकर वे सभी अत्यन्त उतावलीसे प्रिया-प्रियतमको बुला रहे हैं और प्रार्थना कर रहे हैं—आओ, मेरे जीवन-सर्वस्व! तुम्हारे लिये ही पुष्पोंकी डाली सजा रखी है। अपने प्यारभरे हाथोंसे इस उपहारको ग्रहण करो!

प्रिया-प्रियतम, दोनों ही वृक्षोंकी मूक भाषाकी प्रार्थना सुनते हैं और

पुलिन-पथके प्रत्येक पुष्प-वृक्षके पाँच-सात पुष्पोंका चयन करके एक-दोको सूंघ करके गुणमञ्जरीकी डलियामें उन्हें धीरेसे रख देते हैं। कभी श्यामसुन्दर प्रियाजीको खींचते हैं, खींचते-से ले जाते हैं तथा कभी प्रियाजी श्यामसुन्दरको खींचती हुई ले जाती हैं। किसी वृक्षके पास पहुँचकर प्रियाजी आनन्दमें भरकर उन्मुक्त कण्ठसे हँस पड़ती हैं तथा वृक्षकी फूलोंसे लदी हुई किसी शाखाको झुकाकर श्यामसुन्दरके मुँहके पास ले जाती हैं। ऐसा करनेपर श्यामसुन्दर अत्यन्त प्यारसे श्रीप्रियाकी ठोड़ीको छूकर हँसते हुए उस शाखासे एक-दो पुष्प तोड़कर श्रीप्रियाके सिरपर रख देते हैं। श्रीप्रिया उसी पुष्पको श्यामसुन्दरके कंधेपर रख देती हैं तथा फिर सिर झुकाकर मुस्कुराने लगती हैं। इस प्रकार कभी कुछ एवं कभी कुछ क्रीड़ा करते हुए प्रत्येक वृक्ष-लता आदिको छू-छूकर उनका आनन्दवर्द्धन करते हुए पूर्व दिशाकी ओर बढ़ते चले जा रहे हैं।

मयूरोंकी टोली आनन्दमें भरकर पंख फैलाकर नृत्य कर रही है। श्यामसुन्दरको खींचती हुई श्रीप्रिया किसी टोलीके पास आ पहुँचती हैं। उनके पास पहुँचते ही मयूरगण 'को-ओं, को-ओं' बोलते हुए प्रिया-प्रियतमकी प्रदक्षिणा करने लगते हैं। श्यामसुन्दर कहते हैं—मयूरों! मेरी तरह रास-नृत्य करके दिखाओ तो सही!

इतना कहते ही मयूरी एवं मयूरका एक जोड़ा खड़ा हो जाता है। उसे घेरकर मण्डलाकार मयूरी एवं मयूरका दल खड़ा हो जाता है। फिर मध्यमें स्थित मयूरी प्रियाजीकी ओर देखकर सिर नवाती है एवं मयूर श्यामसुन्दरकी ओर सिर नवाता है। फिर मयूर कुछ संकेत-सा करता है। श्यामसुन्दर हँस पड़ते हैं तथा कहते हैं—हाँ-हाँ, मैं मुरली बजाता हूँ, तुम नृत्य आरम्भ करो।

श्यामसुन्दर मुरली होठोंसे लगाकर तान छेड़ते हैं। तानके चढ़ाव-उतारकी गतिपर मयूरी-मयूरोंका दल पैरोंको ठीक प्रकारसे नचाते हुए मध्य-स्थित मयूरी-मयूरके जोड़ेके चारों ओर घूमने लगता है। मध्य-स्थित मयूरी एवं मयूर, दोनों अपने चोंचोंको मिलाकर वहीं अपने स्थानपर ही मुरलीके सुरके अनुसार थिरकते हुए घूम रहे हैं। श्यामसुन्दर एवं प्रियाजीका मुख इस समय दक्षिणकी ओर है तथा सखियाँ मयूर-मण्डलीको चारों ओरसे घेरे हुए क्रीड़ा देख रही हैं। श्रीप्रिया खिलखिलाकर हँस

पड़ती हैं। गुणमञ्जरीके पास पुष्पोंसे भरी हुई जो डलिया है, उसमेंसे रानी अपनी दोनों अञ्जलिमें पुष्प भर लेती हैं तथा इस प्रकार बिखेरती हैं कि सभी मयूरी-मयूरोंपर एक-दो पुष्प अवश्य गिरते हैं। पुष्प गिरते ही मयूरोंका दल आनन्दमें विह्वल होकर कलरव करने लगता है। सखियाँ एवं प्रियाजी और भी हँसने लगती हैं और सारा वन गूँजने लग जाता है। इस प्रकार सखियाँ एवं प्रियाजी हँसते-हँसते लोट-पोट होने लगती हैं। श्रीप्रिया अत्यधिक हँसती हुई और श्यामसुन्दरकी पीत चादरको झटकती हुई वहीं उनके चरणोंके पास बैठकर लोट-पोट होने लगती हैं। श्रीप्रियाके बैठते ही श्यामसुन्दर भी वहीं धीरेसे बैठ जाते हैं, पर मुरली बजाना बंद नहीं करते। इसपर प्रियाजी खिलखिलाकर हँसती हुई, दाहिने हाथसे श्यामसुन्दरका बायाँ कंधा पकड़कर, बायें हाथसे मुरलीको होठोंसे हटा देती हैं। अब श्यामसुन्दर भी अत्यधिक हँसने लगते हैं। मुरली बंद होते ही मयूरी-मयूरोंका दल नृत्य बंद करके चुपचाप खड़ा हो जाता है, पर सखियोंके तथा प्रिया-प्रियतमके हँसनेका एवं मयूरोंके कलरवका तार कुछ क्षणोंतक टूटता नहीं। कुछ क्षणके बाद श्यामसुन्दर पहले सँभलते हैं, फिर प्रियाजी हँसी सँभालती हैं तथा अन्य सभी सखियाँ भी। अब जो सखियाँ मण्डलाकार खड़ी थीं, वे दौड़-दौड़ करके श्यामसुन्दर एवं प्रियाजीके पास आकर खड़ी हो जाती हैं। अभी भी बीच-बीचमें कोई-कोई सखी हँस पड़ती है। फिर कुछ क्षणके लिये नीरवता छा जाती है। अब इस नीरवताको भंग करके मुस्कुराते हुए श्यामसुन्दर कहते हैं—प्रिये! मयूरी-मयूरोंको नृत्यका पुरस्कार दो!

राधारानी मुस्कुराती हुई खड़ी हैं। श्यामसुन्दरकी बात सुनकर वे हँस पड़ती हैं। तत्पश्चात् वे गुणमञ्जरीको कुछ संकेत करती हैं। गुणमञ्जरी अपने हाथकी पुष्पोंवाली डलिया रूपमञ्जरीको पकड़ा देती है तथा वहाँसे दक्षिणकी ओर दौड़कर चली जाती है। मयूरी-मयूरोंका दल अब कुछ शान्त-सा हो जाता है तथा अपने पंखोंको कभी फैलाता एवं कभी समेटता हुआ पूर्वकी ओर मुख करके एक पंक्तिमें खड़ा हो जाता है। गुणमञ्जरी एवं वृन्दादेवीकी दासियाँ इसी समय सोनेकी छः परातोंमें मिठाइयाँ लेकर आ पहुँचती हैं। मिठाइयाँ पीले रंगकी हैं तथा बनकर सोने एवं चाँदीके वरक चढ़ाये हुए हैं। मिठाईकी एक परात गुणमञ्जरी उठाती है। श्यामसुन्दर एवं श्रीप्रिया, दोनों मयूरोंकी पंक्तिके पास

जाकर खड़े होते हैं। श्यामसुन्दरकी बायीं ओर श्रीप्रिया हैं एवं श्रीप्रियाकी बायीं ओर गुणमञ्जरी मिठाईवाली परात लिये खड़ी है। श्रीप्रिया अपने हाथसे परातमेंसे मिठाई लेकर श्यामसुन्दरके हाथमें देती हैं तथा श्यामसुन्दर मयूरोंको खिलाना प्रारम्भ करते हैं। सखियाँ इस समय ऐसा देखती हैं कि प्रत्येक मयूरी एवं मयूरके पास श्यामसुन्दर खड़े होकर एक साथ ही सबको अत्यन्त प्यारसे खिला रहे हैं। मिठाई खिलाते हुए बीच-बीचमें मयूरी-मयूरोंके सिरपर अपना बायाँ हाथ रखकर उन्हें सहलाते हैं। इस प्रकार कुछ देरतक उन्हें खिलाकर फिर सोनेके कटोरेमें जल भरकर जल पिलाते हैं और अपने पीताम्बरसे मयूरोंकी चोंचोंको पोंछते हैं।

उन्हें खिला-पिलाकर सखियोंकी मण्डलीके सहित पहलेकी तरह ही श्रीप्रियाके अञ्चलसे सटे हुए श्यामसुन्दर पूर्वकी ओर बढ़ते हैं। जिस समय ऊँचे-ऊँचे वृक्षोंके पास वे आते हैं, उस समय वृक्ष अपनी डालियोंको हिला-हिलाकर पुष्पोंकी वर्षा करने लगते हैं। श्रीप्रिया अपना अञ्चल तथा श्यामसुन्दर अपना पीताम्बर फैला देते हैं। क्षणभरमें ही ऊपरसे गिरे हुए पुष्पोंसे अञ्चल एवं पीताम्बरकी झोली भर जाती है। उसे वे दोनों ही मञ्जरियोंकी अलियोंमें उड़ेल देते हैं। भौंरे गुन-गुन करते हुए चारों ओर मँडरा रहे हैं। कभी-कभी एक-दो भ्रमर श्यामसुन्दरके एवं प्रियाके गलेमें झूलती हुई वनमालापर बैठ जाते हैं। सखियाँ उन्हें उड़ा देती हैं। इस प्रकार वृक्ष-लताओंको छू-छूकर उन्हें प्रेममें विभोर बनाते हुए तथा उनके द्वारा दिये हुए पुष्पोंके उपहारोंको ग्रहण करते हुए वे दोनों अत्यन्त विशाल एवं सुन्दर ढंगसे बनी हुई एक गोलाकार वेदीके पास जा पहुँचते हैं।

वेदी संगमरमरकी बनी हुई है। उसका व्यास करीब एक सौ गज है। वेदी भूमिसे एक हाथ ऊँची है। उसके चारों ओर दो-दो हाथके अन्तरपर केलेके वृक्ष लगे हैं तथा प्रत्येक वृक्षके कुछ पत्तोंके आपसमें जुड़ जानेसे मेहराब बन गया है। वेदीके चारों ओर कमलके पुष्पोंसे पिरोकर चार-चार हाथके अन्तरसे चार-चार हाथ लम्बे बेंचके आकारके आसन सजाये हुए हैं। वेदीपर नीली कालीन बिछी है, जिसपर अत्यन्त सुन्दर ढंगसे जरीकी चित्रकारी की हुई है। उसके दक्षिणके भागमें किनारेसे सात-आठ हाथ हटकर अत्यन्त सुन्दर पुष्पोंका बना हुआ सिंहासन है।

बेला-चमेली आदि पुष्पोंका बना हुआ छत्र सिंहासनके पिछले भागको सुशोभित कर रहा है। चन्द्रमाकी किरणोंका प्रवेश होने देनेके लिये चाँदनी तो हटा दी गयी है, पर प्रत्येक केलेके स्तम्भ, जो वेदीके चारों ओर लगे हैं, उनसे सम्बद्ध करते हुए पतली लताओंके द्वारा अत्यन्त विशाल गुम्बद वेदीके ऊपर बना हुआ है। लताओंमें तरह-तरहके पुष्प खिले हुए हैं। गुम्बदके बीचमें अर्थात् शिखरके पास नीचे एवं ऊपर दो मणियाँ जड़ी हुई हैं, जिनकी किरणोंसे अत्यन्त सुन्दर उज्ज्वल शीतल प्रकाश निकल रहा है। वह प्रकाश इतना अधिक है कि दिन-सा हो गया है। वेदी चमचम कर रही है।

इसी वेदीपर श्रीप्रिया-प्रियतम सखियोंकी टोलीके साथ उत्तरकी ओरसे चढ़कर चलते हुए सिंहासनके पास आ जाते हैं। वृन्दादेवी अपने अञ्चलसे सिंहासनको पोंछती हैं तथा उसपर श्यामसुन्दर एवं राधारानीको हाथ पकड़कर बैठाती हैं। उनके बैठनेपर सखियाँ भी बैठ जाती हैं। ललिताके संकेत करते ही वृन्दाकी दासियाँ तुरंत अनेक प्रकारके वाद्य-यन्त्रोंको, जो वेदीके पश्चिमकी ओर दस गजके अन्तरपर बने हुए छोटेसे निकुञ्जमें रखे थे, ला-ला करके रख देती हैं। जिस प्रकार पश्चिमकी ओर एक निकुञ्ज है, वैसे ही पूर्व एवं दक्षिणकी ओर भी लताओंसे बनी हुई उतनी ही बड़ी एक-एक निकुञ्ज है। उत्तरकी ओर लगभग चालीस गजकी दूरीपर यमुनाजी प्रवाहित हो रही हैं। वेदीके सिंहासनपर बैठे हुए प्रिया-प्रियतम यमुनाकी ओर दृष्टि डालते हैं तथा कभी पीछे स्थित निकुञ्ज ओर।

वृन्दा पनबट्टेसे पान निकालकर प्रियाजीके संकेतके अनुसार श्रीकृष्णको देना चाहती हैं, पर श्रीकृष्ण पहले प्रियाजीको खिलानेके लिये आग्रह करते हैं। जब प्रियाजी वृन्दाके हाथसे पहले पान नहीं स्वीकार करतीं तो श्रीकृष्ण वृन्दाके हाथसे पान ले लेते हैं तथा बायें हाथसे श्रीप्रियाके कंधेको पकड़े रखकर दाहिने हाथसे पानको राधारानीके होठोंसे लगा देते हैं। रानी लजायी-सी होकर पानको अपने दाँतोंसे थोड़ा पकड़ लेती हैं। उनके ऐसा करते ही श्यामसुन्दर पानको झटक लेते हैं तथा हँसते हुए यह कहकर कि अच्छा, मैं ही पहले खाता हूँ, तुम्हारी हो जीत सही, वह पान अपने मुँहमें रख लेते हैं। प्रियाजीने बड़ी शीघ्रतासे हाथ बढ़ाया, पर उनका हाथ

पहुँचनेके पहले ही पानको श्यामसुन्दरने अपने मुखमें रख लिया।

प्रियाजी तिरछी चितवनसे विहँसती हुई बोलीं—धूर्त……!

इधर सखियाँ हाथोंसे वाद्य-यन्त्रोंका सुर ठीक कर रही हैं; पर उनकी दृष्टि श्यामसुन्दरके मुखारविन्दपर ही टिकी है। प्रियाजीके मुखसे 'धूर्त' शब्द सुनकर सभी खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं। श्यामसुन्दर बड़े प्रेमसे कहते हैं—अच्छा, अब ऐसा नहीं करूँगा। तुम्हींने तो वृन्दाको संकेत किया था कि पान पहले मैं खाऊँ। इसलिये कि कहीं तुम रुष्ट न हो जाओ, मैंने पहले खा लिया। अब तुम खा लो।

श्यामसुन्दर वृन्दाके हाथसे बीड़ा लेकर प्रियाजीके मुँहमें देने लगते हैं। प्रियाजी इस बार श्यामसुन्दरका हाथ पकड़े रहती हैं तथा सावधानीसे बीड़ेको अपने मुँहमें धीरे-धीरे ले लेती हैं। इन दोनोंको बीड़ा खिलाकर वृन्दा सभी सखियोंको बीड़ा खिलाने चलती हैं; पर श्यामसुन्दर सिंहासनसे उठकर स्वयं पनबट्टेसे पान निकालते हैं तथा सखियोंको खिलाते हैं। प्रत्येक सखी ऐसा अनुभव कर रही है कि श्यामसुन्दर मुझे पहले पान खिलाने आये हैं, अतः आनन्दमें विह्वल हो जाती है; पर साथ ही नखरेसे यह कहती है—मैं तो अभी सुर ठीक कर रही हूँ। पहले उसे दे आओ, मुझे फिर दे देना।

श्यामसुन्दर अत्यन्त प्यारसे कहते हैं—हाथसे थोड़े ही खाओगी। तू वाद्यका सुर ठीक करती रह। मैं तुम्हारे मुँहमें पान रख देता हूँ।

सखी कहती है—धूर्तता तो नहीं करोगे? (अर्थात् राधारानीकी तरह मुँहमें देकर फिर झटककर अपने मुँहमें तो नहीं रख लोगे?)

श्यामसुन्दर हँसकर कहते हैं—सर्वथा नहीं।

तब सखी पान खानेके लिये अपना मुँह खोल देती है और श्यामसुन्दर उसके मुँहमें पान रख देते हैं। उसे पान खिलाकर फिर उसके कपोलोंको अपने दाहिने हाथकी तर्जनीसे छूकर कहते हैं—देखना भला, चूना अधिक हो तो उगल देना।

सखी हँसती हुई कहती है—हाँ, हाँ उगल दूँगी।

इस प्रकार एक साथ ही सबको पान खिलाकर श्यामसुन्दर फिर राधारानीके पास आकर सिंहासनपर बैठ जाते हैं। राधारानीको पान खिलाते समय श्यामसुन्दरने अपनी मुरली सिंहासनपर रख दी थी। वे जब पान खिलाने उठे थे तो राधारानीने उसे उठाकर अपने हृदयसे लगा लिया था। ऐसा करते ही वे समाधिस्थ-सी हो गयी थीं। दृष्टि तो श्यामसुन्दरकी ओर लगी थी, परंतु मुरलीको अपने हृदयसे लगाये हुए चित्रकी तरह बैठी थीं। श्यामसुन्दर जब पुनः सिंहासनपर बैठे, तब भी श्रीप्रिया मुरली दबाये उसी प्रकार बाह्यज्ञान-हीन-सी स्थितिमें बैठी रहीं। श्यामसुन्दर निर्निमेष नयनोंसे श्रीप्रियाकी मुख-शोभा निहारते हुए कुछ देरतक सिंहासनपर शान्त भावसे बैठे रहते हैं। इसी समय दोनोंकी यह अवस्था देखकर ललिता खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं। ललिताके हँसनेसे श्यामसुन्दरकी भाव-समाधि शिथिल हो जाती है और वे रानीकी ठोढ़ीको दाहिने हाथकी अँगुलियोंसे छूकर कुछ हिलाते हुए-से कहते हैं—प्रिये! आज मुरलीका अहोभाग्य है, कि इसे तूने अपने हृदयसे लगाकर इसकी सारी व्यथा दूर कर दी। मैं जब-जब इस मुरलीको होठोंसे लगाता, तभी मुझसे यह कहा करती कि प्यारे श्यामसुन्दर! तुम मेरे अंदर 'राधा-राधा'की तान जिस समय छेड़ते हो, उस समय राधारानी विकल होकर यह देखनेके लिये दृष्टि उठाती हैं कि तुम कहाँ स्थित रहकर तान छेड़ रहे हो, पर तुम्हें नहीं देखकर वे रो पड़ती हैं और कहती हैं कि कृष्णकी प्यारी मुरलिके! तू तो स्त्री है। स्त्रीके कोमल हृदयमें जब वियोगकी आग भभक उठती है, उस समयकी व्याकुलता कितनी असह्य होती है, बहिन! इसे तू जानती होगी। फिर इस प्रकार मेरी वञ्चना तू क्यों करती है? बहिन! मैं जिधर कान लगाती हूँ, जिस दिशामें कान लगाकर सुनती हूँ, उसी दिशामें तू बजती हुई प्रतीत होती है। मैं निर्णय नहीं कर पाती कि मेरे प्रियतम श्यामसुन्दर किस दिशामें हैं, कहाँपर हैं? ऐसा कहकर राधारानी अत्यन्त व्याकुल हो जाती हैं। इसलिये मेरे प्यारे श्यामसुन्दर! एक बार जब तुम दोनों साथ रहो, तब रानीके हृदयके पास मुझे पहुँचा दो। फिर मैं रानीको इसका वास्तविक रहस्य समझा दूँगी कि रानी! मैं वञ्चना नहीं करती हूँ, अपितु तुम्हारा हृदय ही तुम्हारी वञ्चना करता है। मेरी प्यारी रानी! तुम्हारे इस हृदयमें निरन्तर श्यामसुन्दर बसे ही रहते हैं। एक निमेषके लिये भी यहाँसे नहीं निकलते। यही कारण है कि तुम्हारा

यह हृदय भी श्यामसुन्दरका निरन्तर संग करते-करते श्यामसुन्दरकी तरह तुम्हें ठगने लग गया है। मेरी बात सच है या झूठ, इसकी अभी-अभी जाँच कर लो। देखो, मैं तुम्हारे हृदयको दबाकर बैठी हूँ, तुमने मुझे अपने हाथोंमें ले रखा है, श्यामसुन्दर तुम्हारे बगलमें बैठे हैं, पर तुम्हारा हृदय तुम्हें यह सुझा रहा है कि यहाँसे दूर किसी रमणीय कदम्बकी छाँहमें त्रिभङ्गी होकर श्यामसुन्दर मुरलीमें मेरा नाम गाते हुए मुझे बुला रहे हैं। प्रिये! मैंने मुरलीको वचन दे रखा था कि आज प्रिया राधासे तुम्हें एक बार हृदयसे लगानेके लिये प्रार्थना करूँगा, सो तुमने बड़ी कृपा की। तुमने मेरे वचनकी रक्षा अपने-आप कर दी। देखना भला, अब बेचारी मुरलिकासे अच्छी तरह पूछ-पूछ करके अपना सारा संदेह मिटा लेना।

श्यामसुन्दरकी वाणी कानोंमें पड़ते ही श्रीप्रियाकी भाव-समाधि कुछ शिथिल तो हो गयी थी, पर वह अभी पूर्णतः टूटी नहीं थी। श्रीप्रिया ठीक उसी प्रकार अनुभव कर रही थीं कि श्यामसुन्दर कुछ दूरपर कदम्बकी छायामें खड़े रहकर मेरे नामकी तान भरते हुए मुझे बुला रहे हैं। अब जब श्यामसुन्दरने बोलना बंद कर दिया, तब श्रीप्रियाको चेत हुआ। उन्होंने देखा कि श्यामसुन्दर मुस्कुरा रहे हैं। श्रीप्रिया अर्द्ध-बाह्य-ज्ञानकी-सी दशामें श्यामसुन्दरकी उन सब बातोंको भी प्रायः सुन चुकी थीं। अब चेत आ जानेपर उन्होंने सारी परिस्थिति समझ ली कि श्यामसुन्दर जब सखियोंको पान खिलाने गये थे, उस समय मैंने मुरलीको उठाकर अपने हृदयसे लगाया था। लगाते ही मैं सुध-बुध खो बैठी।

रानी संकुचित-सी हो गयीं तथा दाहिने हाथसे श्यामसुन्दरके कंधेको हिलाती हुई एवं बायेंसे मुरलीको श्यामसुन्दरके होठोंपर रखती हुई बात बदलनेके उद्देश्यसे बोल उठीं—प्यारे श्यामसुन्दर! आज विशाखाने मुझे संध्याके समय बड़ा ही सुन्दर एक गीत सुनाया था। मैं फिर सुनूँगी। तुम विशाखाकी वीणाके सुरमें मुरली बजा दो। देखना, जान-बूझकर सुर नहीं बिगाड़ना।

श्यामसुन्दर हँसते हुए कहते हैं—विशाखे! गा, पर मुरली बजानेका ठीक-ठीक पारिश्रमिक मुझे तुम्हारी सखीसे मिल जाना चाहिये, नहीं तो मैं तुमसे दूना लूँगा।

विशाखा तिरछी चितवनसे श्यामसुन्दरकी ओर देखती हुई मुस्कुराकर कहती हैं—यह पहलेसे ही कह देती हूँ कि तुमने कहीं अनाप-शनाप पारिश्रमिक माँगा तो मैं उत्तरदायी नहीं हूँ।

अबतक सभी सखियोंने वीणा, मृदङ्ग एवं अन्यान्य वाद्योंके सुर मिला लिये थे। सभी बजानेकी मुद्रामें प्रस्तुत बैठी हैं। विशाखाकी बात सुनकर ललिता कहती हैं—श्यामसुन्दर! सज्जन गायक एवं बजानेवाले मोल-तोल नहीं करते। वे श्रोताको प्रसन्न करते हैं। तुम पहले मेरी सखीकी मुरली सुनाकर प्रसन्न करो, घबराते क्यों हो?

श्यामसुन्दर बड़ी उत्सुकतासे हँसते हुए कहते हैं—बस, बस, ललिते! तू अपना यह वचन याद रखना। मैं तुम्हारी सखीको प्रसन्न करनेकी चेष्टा करता हूँ।

श्यामसुन्दर होठोंपर मुरली रखकर दोनों हाथोंकी अँगुलियोंसे छिद्रकी सँभाल रखते हुए विशाखाकी वीणाके सुरमें सुर मिलाकर तान छेड़ते हैं। कुछ क्षणतक केवल वाद्य-यन्त्रोंकी ध्वनि गूँजती रहती है। सर्वत्र मधुरिमा बिखरने लगती है तथा अत्यन्त कोमल एवं अतिशय मधुर स्वरमें विशाखा गाती हैं।

सखि हौं स्याम रंग रँगी।
देखि बिकाइ गई वा मूरति सूरति माँहि पगी॥
संग हुतो अपनो सपनो सो सोइ रही रस खोई।
जागेहु आगे दृष्टि परै सखि नेकु न न्यारो होई॥
एक जु मेरी अँखियनिमें निस दीस रह्यो करि भौन।
गाइ बरावन जात सुन्यौ सखि सो धौं कन्हैया कौन॥
कासौ कहौं कौन पतिआवै कौन करै बकवाद।
कैसे कै कहि जात गदाधर गूँगे को गुड़ स्वाद॥

गीत समाप्त होते ही सारी मण्डली प्रेममें बेसुध-सी हो जाती है। श्यामसुन्दर तिरछी चितवनसे श्रीप्रियाको देखकर मुस्कुरा पड़ते हैं। श्रीप्रिया कुछ क्षणतक तो हक्की-बक्की-सी मुद्रा बनाये हुए बैठी रहीं, पर फिर श्यामसुन्दरके बायें कंधेको हिलाकर जोरसे हँस पड़ती हैं।

श्यामसुन्दर कहते हैं—विशाखा रानी ! अपनी सखीसे पूछो कि मुरली ठीकसे बजी या नहीं और उन्हें सुख मिला या नहीं। यदि सुख नहीं मिला तो फिर दूसरी बार कुछ बजा करके सुनाऊँ और यदि उन्हें सुख मिला तो मेरा पारिश्रमिक पुरस्कारके साथ मिलना चाहिये।

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर विशाखा वीणाको अपने सामने रख देती हैं तथा मुस्कुराती हुई उठकर राधारानीके पास जाकर खड़ी हो जाती हैं। रानी संकेतके द्वारा ललितासे कुछ कहती हैं। ललिता आकर श्यामसुन्दरके सामने खड़ी हो जाती हैं तथा कहती हैं—देखो, न्यायकी बात यह है कि पुरस्कार तो मुरलीको मिले और पारिश्रमिक तुम्हें। अवश्य ही यह ठीक है कि मुरली भी तुम्हारी ही है और प्रकारान्तरसे यह पुरस्कार तुम्हारे ही पास आ जायेगा, पर यह हमारी जातिकी है, इसलिये इसे तुम्हारे सामने हमलोगोंके द्वारा दिये हुए पुरस्कारसे भूषित होनेमें संकोच होगा। इसलिये इसे हमें दे दो। राधासे हमारी बात हो गयी है। मैं इसे पुरस्कार देकर फिर तुम्हारे पास ला दूँगी तथा पारिश्रमिककी बात तुम विशाखासे करो। मैं उस सम्बन्धमें कुछ नहीं जानती।

श्यामसुन्दर मुस्कुराकर कहते हैं—अरे, तू अच्छी पंच बनी ! तुम्हें पता है, यह मुरली हमसे कितना प्रेम करती है। मुझे तुम्हारी सखीको तो मनानेमें अत्यधिक अनुनय करना पड़ता है और यह लाज छोड़कर मेरे संकेतसे ही अपने होठोंको मेरे होठोंपर रखकर जो मैं कहता हूँ, वही करने लग जाती है। इसे मेरे सामने पुरस्कार स्वीकार करनेमें तनिक भी संकोच नहीं होगा। तू लाकर दे तो सही।

ललिता मुस्कुराती हुई कहती हैं—अच्छा, यही सही। क्या करूँ, तुम मानते ही नहीं। हमें यदि देते तो अधिक लाभ होता, पर जाने दो। अच्छा, सुनो। जितनी देर तुमने इसे होठोंपर रखकर विशाखाके संगीतके लिये इसमें सुर भरा है, उतनी देर मेरी सखी राधा इसे अपने होठोंपर रखकर इसका सम्मान करती हुई तुम्हारे गानेके समय इसमें सुर भरेंगी।

श्यामसुन्दर बहुत प्रसन्न होकर कहते हैं—ललिते ! सुन्दरसे सुन्दर। तुम एवं तुम्हारी सखीने बहुत उदारतासे पुरस्कार दिया है। अब आशा है कि पारिश्रमिक पाकर तो मैं निहाल ही हो जाऊँगा; क्योंकि पारिश्रमिक तो पुरस्कारकी अपेक्षा बहुत अधिक होता है, यह सदाका नियम है।

श्यामसुन्दर बड़ी फुर्तीसे श्रीप्रियाके होठोंपर वंशी रख देते हैं। श्रीप्रिया उसके ऊपरी छिद्रमें फूँक भरने लगती हैं, बायें हाथसे वंशीको पकड़े रहती हैं और दाहिना हाथ श्यामसुन्दरके बायें कंधेपर ही रखे रहती हैं। श्यामसुन्दर कुछ तिरछे बैठकर वंशीके अन्य छिद्रोंको अपने दोनों हाथोंसे दबाते-उठाते हुए सुर ठीक करते हैं। फिर वीणा एवं अन्यान्य वाद्य-यन्त्र बजने लगते हैं एवं मधुरतम-सुन्दरतम स्वरमें श्यामसुन्दर गाना प्रारम्भ करते हैं—

प्यारी तेरे नैननि को ब्यौहार।
रूप तुरंग चढ़े मदमाते मृग मन करत सिकार॥
भौंह कमान रही चढ़ि दिन प्रति चितवनि बान सुचार।
सहज अरुन अति घूम घुमारे खूनी खून खुमार॥
कज्जल रेख अनी अति तीखी निरखि डरत सत मार।
अलबेलि अलि प्रान बिहंगम परे प्रेम के जार॥

श्यामसुन्दरके कण्ठकी मधुरिमासे सारा वन रसमय हो उठता है। वेदीके चारों ओर जो केलेके वृक्ष लगे हैं, उनमेंसे भी रस चूने लग जाता है। यद्यपि श्यामसुन्दर संगीत बंद करके मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए श्रीप्रियाके मुखारविन्दकी ओर देख रहे हैं, पर अभी भी दिशाओंसे यह ध्वनि अत्यन्त मधुरातिमधुर होकर गूँजती हुई सुन पड़ रही है—'अलबेली अलि प्रान बिहंगम परे प्रेम के जार'।

श्रीप्रिया अब बहुत धीरेसे खड़ी हो जाती हैं तथा चित्राको संकेतसे अपने पास बुलाती हैं। वे उसके कानमें कुछ धीरेसे कहती हैं। चित्रा श्यामसुन्दरसे कहती है—देखो श्यामसुन्दर! अब मेरी सखी गाना चाहती है, पर यह वचन देना पड़ेगा कि तुम संगीत समाप्त होनेतक स्थिरतापूर्वक बैठे-बैठे सुनते रहोगे।

श्यामसुन्दर कुछ देरतक सोचते रहते हैं। फिर मुस्कुराकर कहते हैं—अच्छी बात है, जबतक संगीत होता रहेगा, तबतक मैं स्थिरतापूर्वक बैठकर सुनता रहूँगा।

श्रीप्रिया विशाखाके हाथसे वीणा ले लेती हैं तथा वीणा-विनिन्दित स्वरमें गाने लगती हैं—

जब रूप के रंग रँगी सजनी, तब मोहि पलोटि सुभावहि को।
मुख कंज मनोज मैं भृंगिनि सी लपटी चपटीन उछावहि को॥
जब मादक माधुरी पान पगी तब घूँघट ओट दुरावहि को।
गुनवारे गुपाल की आँखिन सौं उरझी अँखियाँ सुरझावहि को॥

श्यामसुन्दर मन्द-मन्द मुसकराते हुए श्रीप्रियाकी ओर एकटक देखते हैं। श्रीप्रिया दृष्टि उठाकर कई बार देखती हैं, पर श्यामसुन्दरको अपनी ओर देखते हुए देखकर दृष्टि मिल जानेसे लजाकर आँखें नीची कर लेती हैं। श्रीप्रिया गाती जाती हैं तथा वे बीच-बीचमें इस प्रकार दृष्टि उठाकर श्यामसुन्दरको देखनेकी चेष्टा करती हैं। अन्तिम चरण पूरा होते ही कई सखियाँ धीरे-से एक साथ ही बोल उठती हैं—सखि! बंद मत कर देना। एक और, एक और।

सखियोंके अनुरोधपर प्रिया फिर गाती हैं—

चख कोर चकोर बनाय भटू, ससि आनन सो सरसावहि को।
मृदु बोलन गाउ कपोल हँसी, फँसि रूप सरोवर पावहि को॥
सुर तान ते मोहि मृगी ज्यों अलि बहुरो मन बाँधि मिलावहि को।
गुनवारे गुपाल की आँखिन सो उरझी अँखियाँ सुरझावहि को॥

इस बार अन्तिम चरण गाते-गाते श्रीप्रियाका कण्ठ भर आता है। गला रुँधकर स्वर अस्पष्ट होने लग जाता है। सारा शरीर पसीनेसे भर जाता है। आँखें बंद हो जाती हैं। वे मूर्छित होकर गिरनेवाली ही थीं कि श्यामसुन्दर चटपट आसनसे उठकर श्रीप्रियाको सँभालते हैं। श्रीप्रिया यन्त्रकी तरह श्यामसुन्दरकी गोदमें सिर रखकर लेट जाती हैं। श्यामसुन्दर अपने दाहिने हाथसे श्रीप्रियाके ललाटको सहलाने लगते हैं। अभी सखियोंमें प्रेम उमड़ रहा है। श्रीप्रियाके गीतको सुनकर प्रायः सभी बाह्य-ज्ञान-शून्य-सी हो गयी हैं। केवल दो-चार मञ्जरियाँ बड़ी कठिनाईसे अपनेको सँभाले रखकर खड़ी हैं तथा निर्निमेष नयनोंसे श्यामसुन्दरकी रूप-सुधाका पान कर रही हैं।

कुछ देरतक शान्ति, आनन्द तथा प्रेमका प्रवाह इतना अधिक प्रबल रहता है कि सर्वत्र नीरवता छायी रहती है। प्रिया अपनी आँखें खोलकर देखती हैं, पर आँखें फिर बंद हो जाती हैं। धीरे-धीरे सखियाँ भी भाव-

समाधिसे जागकर श्यामसुन्दरको देखती हुई मुस्कुराने लगती हैं। अब प्रियाजी भी आँखें खोलकर मुस्कुराती हुई श्यामसुन्दरकी गोदसे उठकर बैठ जाती हैं तथा बायें हाथसे श्यामसुन्दरके कंधेको एवं दाहिने हाथसे श्यामसुन्दरकी ठोड़ीको हिलाती हुई मुस्कुराकर कहती हैं—तुमने अपना वचन भङ्ग क्यों कर दिया ? संगीतके बीचमें ही उठकर क्यों आये ?

श्यामसुन्दरने हँसते हुए कहा मैंने वचन भङ्ग सर्वथा नहीं किया है। जबतक संगीत (सं = गीत, अर्थात् ठीक-ठीक तरहसे गाया जानेवाला गीत) था, तबतक स्थिरतापूर्वक सुनता रहा। तुमने संगीतको बिगाड़ दिया (अर्थात् तेरी बाणी लड़खड़ाने लग गयी) तो मैं फिर बन्धनमें क्यों रहता ?

सभी सखियाँ हँसने लगती हैं। वहीं श्रीवृन्दाकी सखियाँ पीले रंगके पात्की पत्तियोंके बने हुए बीड़े सोनेकी परातमें लाकर रख देती हैं। इस बार श्रीप्रिया चटसे दो बीड़े उठाकर श्यामसुन्दरके मुखमें रख देती हैं। श्रीश्यामसुन्दर बीड़ा खाने लगते हैं। श्यामसुन्दर दो बीड़े उठाकर श्रीप्रियाको खिलाना चाहते हैं, पर प्रिया कहती हैं—मुझे तो प्यास लगी है।

श्यामसुन्दर कहते हैं—प्यास तो मुझे भी लगी थी, पर तुमने मुँहमें पहले पान खिला दिया। अब तुम्हारे हाथका पान कैसे छोड़ देता !

श्रीप्रिया रूपमञ्जरीको संकेत करती हैं। रूपमञ्जरी प्यालेके आकारके, पर प्यालेसे कुछ लम्बी आकृतिके सोनेके गिलासमें शीतल सुवासित जल लाती है तथा प्रियाजीके हाथोंमें पकड़ा देती है। श्रीप्रिया गिलास लेकर पानी पीनेके लिये श्यामसुन्दरको संकेत करती हैं। रानीके हाथसे श्यामसुन्दर गिलास पकड़ लेते हैं। विशाखा उठकर श्यामसुन्दरके मुँहके पास पीकदानी ले जाती है। श्यामसुन्दर उसमें पानको उगल देते हैं। फिर गिलाससे घूँट भरकर उस सोनेके कटोरेमें, जिसे लवङ्गमञ्जरी पासमें लिये हुई खड़ी है, कुल्ला कर देते हैं। फिर वे आधा गिलास पानी पी जाते हैं। इसके बाद गिलासको राधारानीके होठोंसे लगा देते हैं। रानी लजाते-लजाते पाँच-छः घूँट पानी पी लेती हैं। चित्रा दोनोंके मुखको क्रमशः सुन्दर रूमालसे पोंछ देती हैं। फिर रानी अत्यन्त प्यारसे श्यामसुन्दरके मुखमें एक बीड़ा

रख देती हैं। श्यामसुन्दर रानीके मुखमें दो बीड़े एक साथ ही रख देते हैं। श्यामसुन्दरने जान-बूझकर दो बड़े बीड़े उठाये थे। एक साथ ही उनको मुखमें दे देनेके कारण रानीका दाहिना कपोल किंचित् ऊँचा-सा हो जाता है। श्यामसुन्दर मुस्कुराते हुए उसे देखने लग जाते हैं। प्रिया कुछ और भी लजा जाती हैं तथा शीघ्रतापूर्वक पानको दाँतोंसे कुचलकर पतला बना लेती हैं। पहलेकी ही तरह श्यामसुन्दर सखियोंको भी एक साथ ही एक क्षणमें पान खिला देते हैं। अब परातके पान आधे हो जाते हैं।

राधारानी उठ पड़ती हैं। श्यामसुन्दर भी उठ पड़ते हैं। इसी समय वृन्दाकी दासी सामने बहती हुई श्रीयमुनाजीके प्रवाहमेंसे एक कमल तोड़कर लाती है और श्रीप्रियाके हाथमें दे देती है। श्रीप्रिया कमलको हाथमें लेकर कहती हैं—री! एक और तोड़ ला।

श्यामसुन्दर श्रीप्रियाकी बात सुनकर चटपट बोल उठते हैं—प्रिये! चलो, आज नावपर चढ़कर कमलके फूल तोड़ें।

श्यामसुन्दरकी बात सुनते ही कई सखियाँ एक साथ बोल उठती हैं—हाँ, हाँ, चलो।

विशाखा मुस्कुराती हुई उत्तरकी ओर मुँह करके चल पड़ती हैं। श्यामसुन्दर हँसते हुए कहते हैं—विशाखा रानी! मेरा पारिश्रमिक मिलना अभी शेष है। यमुनाके कमल-वनसे पार होनेतक मुझे मिल जाना चाहिये। इसका दायित्व तुमपर है।

विशाखा मुस्कुराती हुई आकर श्रीराधाके कानमें धीरेसे कुछ कहनेके लिये रानीका हाथ पकड़कर उन्हें अपनी ओर झुका लेती हैं तथा कानमें कुछ कहती हैं। रानी मुस्कुराती हुई कहती हैं—बहुत ठीक।

विशाखा कहती हैं—हाँ, श्यामसुन्दर! मिल जायेगा! मेरी सखीकी आज्ञा हो गयी है।

बात समाप्त करके श्रीप्रिया-प्रियतम मन्द-मधुर गतिसे उत्तरकी ओर चलते हुए कमल-वन-विहारके लिये यमुना-तटपर आकर खड़े हो जाते हैं।

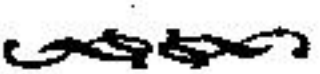

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

रासनृत्य लीला

श्रीश्यामसुन्दर एवं राधारानी नौका-विहारके पश्चात् नावसे उतरकर पुलिनपर खड़े हैं। चन्द्रमाकी शुभ्र चाँदनीमें पुलिनकी बालुका अतिशय चमचम कर रही है। श्रीयमुनाके जलको स्पर्श करता हुआ शीतल पवन मन्द-मन्द प्रवाहित हो रहा है। पवन श्रीवृन्दावनके पुष्पोंकी सुगन्धिसे सुगन्धित तो था ही, इसपर श्रीप्रिया-प्रियतमके अङ्गोंकी सुगन्धिसे युक्त होकर यह अनन्तगुना सुगन्धित हो गया है।

श्रीश्यामसुन्दरने अपने दुपट्टेको कमरमें कस लिया है, इससे कमरके ऊपरका भाग पूर्णतः खुला हुआ है। हाथमें वंशी है। बड़ी मतवाली चालसे वे उत्तर एवं पश्चिमके कोनेकी ओर चलने लग जाते हैं। श्रीश्यामसुन्दरके बायें हाथमें पीले रंगका रूमाल है, जिसके नीचेकी छोरपर एक गाँठ लगी है। वे कुछ दूर चलकर फिर ठहर जाते हैं तथा पीछेकी ओर मुँह करके खड़े हो जाते हैं। इस समय श्यामसुन्दरका मुख पूर्व एवं दक्षिणके कोनेकी ओर है। वे मन्द-मन्द मुस्करा रहे हैं।

श्रीश्यामसुन्दरसे पाँच-छः हाथ हटकर उनके पूर्वकी ओर श्रीराधारानी खड़ी हैं। श्रीराधारानीका मुख ठीक उत्तर एवं पश्चिमके कोनेकी ओर है। रानी एक बार तो श्यामसुन्दरके मुखकी ओर देखती हैं, फिर पीछे मुड़कर कुछ दूरपर पूर्वकी ओर खड़ी हुई विशाखाको देखती हैं तथा संकेतसे उसे अपने पास बुलाती हैं। विशाखा पासमें आ जाती हैं। रानी विशाखाके कानमें कुछ कहती हैं। विशाखा वहाँसे दाहिनी ओर कुछ हट जाती हैं तथा नीचे झुककर पुलिनपरसे थोड़ी बालुका उठा लेती हैं। बालुकाको एक रूमालमें शीघ्रतासे बाँधकर उसमें ठीकसे गाँठ लगा देती हैं। गाँठ लगाकर बायें हाथसे गुणमञ्जरीके हाथमें दे देती हैं। श्रीकृष्ण विशाखाकी इस चेष्टाको देख लेते हैं तथा वहाँसे दक्षिणकी ओर चलकर उस स्थानपर पहुँचते हैं, जहाँ यमुनाका प्रवाह पुलिनको छूता हुआ बह रहा है। जलके पास पहुँचकर श्यामसुन्दर एड़ी डूबनेतक पानीमें

प्रवेश कर जाते हैं तथा अपनी पीठ राधारानीकी ओर करके पश्चिमकी ओर मुख करके खड़े हो जाते हैं। फिर वे झुककर पानीमें हाथ डालते हैं। और ऐसी मुद्रा बनाते हैं मानो पानीसे आँख धो रहे हों। इसी बीचमें पानीके भीतरसे थोड़ी गीली बालुका बहुत शीघ्रतासे निकालकर अपने रूमालमें, जो कमरमें आगेकी ओर लटक रहा था, बाँध लेते हैं।

राधारानी कुछ तीव्र गतिसे चलती हुई ठीक उसी समय उनके पीछे आकर खड़ी हो जाती हैं। रानी श्यामसुन्दरके कंधेको पीछेसे पकड़कर खिलखिलाकर हँसती हुई हिला देती हैं। श्यामसुन्दर पीछे मुड़कर राधारानीकी ओर मुख करके खड़े हो जाते हैं। रानी झुक करके अपनी अञ्जलिमें थोड़ा यमुना-जल भर लेती हैं तथा एक श्लोक पढ़ती हुई श्रीश्यामसुन्दरके मुखपर धीरेसे कुछ छींटे दे देती हैं। रानीने जो श्लोक पढ़ा है, उसका भावार्थ यह है कि आजके रास-यज्ञकी निर्विघ्न सम्पन्नताके लिये मैं वृन्दावनके देवताका अभिषेक कर रही हूँ।

श्रीश्यामसुन्दर रानीके हाथसे छींटे लगते ही उसी प्रकार थोड़ा जल लेकर रानीके मुखपर छींटे देते हुए यह कहते हैं—नहीं, वनदेवीका अभिषेक पहले होना चाहिये।

राधारानी रूमालसे मुँह पोंछने लग जाती हैं। मुँह पोंछकर फिर दाहिने हाथसे श्रीकृष्णका दाहिना हाथ पकड़ लेती हैं तथा झटका देती हुई पानीसे बाहर निकल आती हैं। अब श्रीश्यामसुन्दर एवं राधारानी, दोनों ठीक पूर्वकी ओर मुख किये हुए खड़े हैं। श्रीश्यामसुन्दर मुरलीको अपनी फेंटमें खोंस लेते हैं तथा कमलके पत्तेकी एक छोटी-सी पुड़िया अपनी कमरसे निकालते हैं। पुड़ियाको खोलकर, उसमें जो हरे रंगकी चूर्णवत् कोई वस्तु है, उसे अपनी अँगुलियोंमें लगा लेते हैं। फिर राधारानीको संकेतसे कहते हैं कि चुप रहना, कुछ बोलना नहीं! इसके बाद वे आगे बढ़ जाते हैं एवं गुणमञ्जरीके पास जाकर खड़े हो जाते हैं। श्यामसुन्दरको अपनी ओर आते देखकर गुणमञ्जरी समझ गयी कि ये बालुकाकी पोटली मुझसे छीनने आ रहे हैं, अतः वह उनके आनेके पहले ही पोटलीको रूपमञ्जरीके हाथमें देकर दोनों हाथोंको कमरपर रखकर खड़ी हो जाती है तथा श्यामसुन्दरके पास आनेपर पूछती है—क्यों, क्या बात है?

श्रीश्यामसुन्दर समझ जाते हैं कि इसने पोटली तो कहीं आगे बढ़ा दी है, इसलिये तुरंत ऐसी मुद्रा बना लेते हैं मानो वे सचमुच दूसरे कामसे उसके पास आये हों। श्यामसुन्दर कहते हैं—री! एक काम कर। दौड़कर वहाँसे थोड़ा घिसा हुआ चन्दन ले आ।

वहाँसे लगभग पचास गज उत्तर-पश्चिमकी ओर हटकर विस्तृत रासवेदी सजी हुई है। श्यामसुन्दर अँगुलीसे संकेत करते हुए वहींसे चन्दन लानेके लिये कह रहे हैं। गुणमञ्जरी हँसती हुई चन्दन लानेके लिये चली जाती है। श्यामसुन्दर श्रीप्रियासे प्रेमभरी दृष्टिसे पूछते हैं—प्रिये! बता दे, बालुकाकी पोटली किसके पास है?

राधारानी संकेत कर देती हैं—ठीक पीछे देखो!

श्रीश्यामसुन्दरके कुछ दूर पीछे चित्रा खड़ी हैं। चित्राका मुख पश्चिमकी ओर है। वायुके हिलोरेसे चित्राके सिरका आँचल सरककर कंधेपर आ गया है। वह किसी ध्यानमें इतनी तल्लीन है कि उसको यह पता ही नहीं है कि पीछे क्या हो रहा है? श्रीकृष्ण पीछेसे आकर चित्राकी वेणीको पकड़कर हिलाते हुए पूछते हैं—चित्रारानी! वह पोटली कहाँ है?

पोटली वास्तवमें चित्राके पास नहीं थी। चित्राके पास ही इन्दुलेखा खड़ी थी, उन्हींके पास पोटली थी एवं राधारानीने उन्हींके लिये संकेत भी किया था। पर इन्दुलेखाने यह देख लिया कि राधाने मेरी ही ओर संकेत कर दिया है, अतः शीघ्रतासे वे उत्तरकी ओर हट गयी थीं। श्रीकृष्णने चित्राको ही अपने ठीक पीछे पाया था, इसीलिये उसकी वेणीको हिलाकर पूछ रहे थे। वेणी हिलानेपर चित्राको चेत होता है। वे प्रेमभरी आँखोंसे,पर कुछ चिढ़ी हुई-सी मुद्रामें देखती हुई कहती हैं— कैसी पोटली?

श्यामसुन्दर समझ जाते हैं कि पोटली इसके पास नहीं है, पर तुरंत प्रश्न करते हैं—क्यों, कल मैंने तुम्हें बालुकाकी कुछ पोटलियाँ बनानेके लिये कहा था न?

श्रीश्यामसुन्दर सचमुच ही कल चित्राको बालुकाकी कुछ पोटलियाँ बनानेके लिये कह चुके थे। इन पोटलियोंसे यह होड़ होनेवाली थी कि

नौका-विहारके समय जलमें कौन कितनी दूर पोटलीको फेंक सकती है। अतः चित्रा मुस्कुराकर कहती हैं—हाँ! बन चुकी है। वहाँ वेदीके पास है।

श्रीश्यामसुन्दर अब रास वेदीकी ओर बढ़ने लगे जाते हैं। श्रीराधारानी उनके पीछे पीछे चल रही हैं। श्यामसुन्दर रह-रहकर श्रीप्रियाकी ओर देखने लगते हैं, फिर ठहर जाते हैं तथा श्रीप्रियाके दाहिने कंधेपर हाथ रखकर चलने लगते हैं। सखियाँ एवं मञ्जरियाँ भी उनके इधर-उधर एवं कुछ मञ्जरियाँ-सखियाँ पीछे-पीछे चल रही हैं। चलते-चलते श्यामसुन्दर रास-वेदीके पास पहुँच जाते हैं। श्यामसुन्दर वेदीके ऊपर दाहिना पैर एवं नीचे बायाँ पैर रखे रहकर राधारानीसे संकेतमें कुछ पूछते हैं। रानी विशाखाकी ओर अँगुलीसे संकेत कर देती हैं। श्यामसुन्दर विशाखासे कहते हैं—विशाखे! आज तुम्हें दाहिनी ओर रहना होगा।

श्रीविशाखा अत्यन्त प्यारभरी तिरछी चितवनसे श्यामसुन्दरकी ओर देखती हैं तथा अपने सुन्दर नयनोंको कोयोंमें घुमाती हुई मुस्कुराकर कहती हैं—अच्छी बात है।

श्यामसुन्दर श्रीप्रियाके कंधेपर हाथ रखे हुए श्रीप्रियाको खींचते हुए-से वेदीपर चढ़ जाते हैं। सखियाँ एवं मञ्जरियाँ भी चढ़ जाती हैं। आज वेदीकी सजावट तो निराली ही है। चारों ओरसे चन्दनकी एक हाथ चौड़ी पाटीको जोड़-जोड़कर गोलाकार विस्तृत वेदी बनायी गयी है। वेदीका व्यास लगभग एक सौ गज है। बीचके भागमें बालूको भरकर उस गोलाकार स्थलको चन्दनकी पाटी जितना ऊँचा बना दिया गया है। फिर उसपर पीले रंगकी अत्यन्त सुन्दर कालीन बिछा दी गयी है। वेदीके चारों ओर किनारे-किनारे दो-दो हाथके अन्तरपर सोनेके गमले रखे हुए हैं, जिनमें दो-दो हाथ ऊँचे हरी लतासे लिपटे हुए पुष्पोंके हरे-हरे वृक्ष हैं। उनमें कुन्दकी तरह पीले रंगके पुष्प खिले हुए हैं। किसी-किसी वृक्षमें तो इतने अधिक पुष्प खिले हुए हैं कि ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो पुष्पमय पौधा हो। उन पुष्पोंसे विलक्षण जातिकी सुगन्धि निकल-निकलकर समस्त पुलिनको अतिशय सुवासित कर रही है। गमलोंकी एक कतारके बाद दो हाथ स्थान छोड़कर फिर एक और कतार सोनेके गमलोंकी है, जिनमें एक-एक हाथ ऊँचे बहुत ही सघन एवं महीन पत्तियोंके कोई

वृक्ष-विशेष लगे हुए हैं। उनमें भी गुलाबके छोटे-छोटे पुष्प खिले हुए हैं तथा उन वृक्षोंकी पत्तियों एवं पुष्पोंसे भी अतिशय मधुर-मधुर सुगन्धि निकल रही है।

वेदीके किनारे-किनारे तीन-तीन हाथके अन्तरपर खंभे हैं। ये खंभे वेदीसे सटे हुए हैं तथा लगभग सोलह-सोलह हाथ ऊँचे हैं। खंभे चन्दनके बने हुए हैं, पर उनमें चारों ओरसे खिले हुए उजले कमलके पुष्पोंको इस प्रकार पिरो दिया गया है मानो कमलके पुष्पोंका ही खंभा बना हुआ है। उन खंभोंको भी ऊपरसे एक-दूसरेसे चन्दनकी पतली छड़ियोंसे जोड़ दिया गया है तथा उनमें भी उजले कमल इसी प्रकार पिरोये हुए हैं। उन छड़ियोंके सहारे प्रत्येक तीन हाथके अन्तरपर एक-एक गमला लटक रहा है। वह भी कमलके पुष्पोंसे ऐसा पिरो दिया गया है कि उसके चारों ओर केवल खिले हुए कमल ही दीख पड़ रहे हैं मानो कमलोंका ही गमला हो। उन गमलोंमें भी छोटे-छोटे पुष्पोंके पौधे लगे हुए हैं तथा उनमें भी पुष्प खिले हुए हैं। एक खंभेसे दूसरे खंभेको ऊपर-ही-ऊपर जोड़ते हुए कमलके पुष्पोंका ही अत्यन्त सुन्दर मेहराब है। उन मेहराबोंमें एवं खंभोंमें स्थान-स्थानपर अत्यन्त विलक्षण मणियाँ पिरोयी हुई हैं, जिनके भिन्न-भिन्न प्रकारके प्रकाशसे वेदीकी चमक आज अत्यन्त विलक्षण बन गयी है।

वेदीसे नीचे उतरकर पुलिनकी बालुकापर छः-छः हाथके अन्तरपर कुछ बड़े आकारके गमलोंमें लगभग पाँच हाथ ऊँचे-ऊँचे रजनीगन्धा पुष्पके वृक्ष लगे हुए हैं। उनमें पुष्पोंके गुच्छे लटक रहे हैं। वेदीसे लगभग चालीस हाथ दक्षिणकी ओर एवं बीस हाथ उत्तरकी ओर, दोनों ओरसे श्रीयमुनाकी धारा प्रवाहित हो रही है। इन दोनों धाराओंके पास जानेके लिये वेदीसे सटाकर तीन हाथ चौड़ा पथ बनाया गया है। पथ भी वेदीके स्थान जैसा ही सुन्दर बना हुआ है। पथके दोनों किनारोंके गमलोंमें उसी प्रकार रजनीगन्धाके वृक्ष लगे हुए हैं।

वेदीके पश्चिमी किनारेपर ठीक बीचमें स्थलसे आठ हाथ ऊँचाईपर पुष्पोंका एक सिंहासन बना हुआ है। सिंहासनके पास जानेकी जो सीढ़ियाँ बनी हैं, उन सीढ़ियोंसहित सिंहासनको चारों ओरसे उजले कमलोंसे पिरो दिया गया है। उनके चारों ओरके एक-एक हाथ स्थानको

कमलके पत्तोंसे एवं और भी कई प्रकारकी हरी-हरी पत्तियोंसे सजा दिया गया है। उस आसन एवं सीढ़ियोंके चारों ओर नीले रंगके रेशमी वस्त्र लगा दिये गये हैं। उनपर मणियोंकी एवं चन्द्रमाकी शुभ्र किरणोंके पड़नेसे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यमुनाके प्रवाहमें कमलका वन हो और उसपर स्वाभाविक ही अत्यन्त सुन्दर ढंगसे कमलका एक सिंहासन बन गया हो। यमुना-पुलिनपर बहते हुए शीतल-मन्द-सुगन्ध वायुका झोंका रह-रहकर उन टँगे हुए रेशमी वस्त्रोंको किंचित् हिला देता है। उस समय ऐसा प्रतीत होता है मानो सचमुच यमुनाका जल वायुके कारण हिल रहा हो।

वेदीके बीचका स्थान रास-नृत्यके लिये खाली है। श्रीश्यामसुन्दर श्रीप्रियाके साथ पूर्वकी ओरसे वेदीपर चढ़कर सिंहासनकी ओर बढ़ने लग जाते हैं। श्रीवृन्दा तुरंत ही आगे बढ़ जाती हैं तथा श्यामसुन्दरके पहुँचनेके पहले ही वेदीके पास पहुँच जाती हैं। श्रीश्यामसुन्दरके आनेपर वृन्दा राधारानीका हाथ पकड़ लेती हैं तथा विशाखा श्यामसुन्दरके दाहिने हाथकी कलाई पकड़ लेती हैं एवं उनके दाहिनी ओर खड़ी हो जाती हैं। रानी श्यामसुन्दरके बायीं ओर हैं। उनका दाहिना हाथ श्यामसुन्दरके बायें कंधेपर है। वृन्दा प्रिया-प्रियतमको साथ लेकर सिंहासनपर चढ़ना चाहती हैं कि इसी समय श्यामसुन्दर कुछ संकेत करते हैं। वृन्दा रुक जाती हैं तथा ललिताको पुकारती हैं। ललिता रानी कुछ दूरपर खड़ी रहकर कुछ मञ्जरियोंको यह बता रही थीं कि कौन किस वाद्य-यन्त्रको आज बजायेगी और कौन कहाँपर खड़ी होगी। उन्हें पुकारकर वृन्दादेवी कहती हैं—ललितारानी! श्यामसुन्दर तुम्हें बुला रहे हैं।

ललिता धीरे-धीरे चलती हुई श्यामसुन्दरके पास आ जाती हैं तथा मुस्कुराती हुई कहती हैं—क्यों, बोलो!

श्यामसुन्दर कहते हैं—अपना रूमाल दे।

ललिता कुछ कपट-क्रोध करके कहती हैं—अभीसे छेड़खानी आरम्भ कर दी? राधाका रूमाल ले लो, मैं नहीं देती।

श्यामसुन्दर मुस्कुराते हुए अपनी कलाई विशाखाके हाथसे छुड़ाकर बड़ी फुर्तीसे ललिताकी कमरमें लटकते हुए रूमालको छीन लेते हैं तथा

उसमें पोंछ देते हैं वह हरे रंगकी चूर्णवत् कोई वस्तु, जो उन्होंने अपनी अँगुलीमें कुछ देर पहले लगायी थी। फिर विशाखाकी कलाई पकड़कर वृन्दा एवं श्रीप्रियाके साथ श्यामसुन्दर सीढ़ियोंपर चढ़ते हुए ऊपर सिंहासनपर जा पहुँचते हैं। वहाँ श्रीप्रिया-प्रियतम पूर्वकी ओर मुख करके बैठ जाते हैं।

विशाखा कलाई छुड़ाकर रानीके पास जाकर कानमें बहुत धीरेसे कुछ कहती है; पर श्यामसुन्दर उसे सुन लेते हैं और कहते हैं—नहीं, आज तो विशाखा रानी ही हमारे दाहिनी ओर रहेंगी। अब मैं किसीका कोई प्रस्ताव नहीं सुनूँगा।

वेदीके पश्चिमकी ओर रेशमी वस्त्रोंसे निर्मित अत्यन्त सुसज्जित एक कुञ्ज है। अब वृन्दादेवीकी दासियाँ उस कुञ्जके अंदरसे सेवाके विभिन्न प्रकारके सामान लाकर सीढ़ीके नीचे रख देती हैं। शीतल जलकी झारियाँ, पानोंसे भरी परात, कुल्ला करनेके लिये सुन्दर आकारवाले सोनेके गमले, गुलाबपाश, पिचकारी, छोटी-छोटी सोनेकी प्यालियोंमें खस, गुलाब, मेंहदी, मोतिया आदिके अत्यन्त सुगन्धित इत्र और फिर इन प्यालियोंसे भरी परात, इस प्रकार सेवाके विभिन्न सामानोंसे सिंहासनके नीचेका कुञ्ज दूरतकका स्थल भर जाता है। विचित्र-विचित्र वाद्य-यन्त्रोंको ला-लाकर वृन्दाकी दासियोंने सिंहासनके पास सजा-सजाकर रख दिया है।

ललिता, विशाखा, वृन्दा एवं अन्यान्य मञ्जरियाँ मिलकर सेवा प्रारम्भ करती हैं। श्रीप्रिया-प्रियतम पहले शीतल जलका पान करते हैं, फिर पानका बीड़ा मुखमें लेते हैं। कोई सखी सीढ़ियोंपर बैठी हुई है, कोई खड़ी है तथा प्रिया-प्रियतमके मुखारविन्दकी शोभा निहार रही है। यद्यपि देखनेमें सीढ़ी बहुत बड़ी नहीं है, पर आश्चर्यकी बात यह है कि सभी सखियाँ-मञ्जरियाँ एवं वृन्दाकी बहुत-सी दासियाँ यह अनुभव कर रही हैं कि मैं सीढ़ीके पास या सीढ़ीपर खड़ी या बैठी हूँ।

स्वयं जल पीकर एवं पान खाकर श्यामसुन्दर उठते हैं तथा एक साथ ही सब सखियोंको अपने हाथोंसे सुमधुर जल पिलाते हैं तथा मुँहमें पान खिलाते हैं। इसके पश्चात् श्यामसुन्दर रानीको कुछ संकेत करते हैं। रानी अत्यन्त प्यारभरे स्वरमें कहती हैं—वृन्दे! मेरे प्यारे श्यामसुन्दर

आज अपने हाथोंसे तुम्हारी दासियोंको पान खिलाना चाहते हैं। अतः सब दासियोंसे मेरी ओरसे अनुरोध कर दे कि मेरी प्रार्थना मानकर सभी श्यामसुन्दरके हाथसे पान खा लें। कोई तनिक भी संकोच नहीं करे।

रानीकी बात सुनकर वृन्दा मुस्कुरा देती हैं तथा कहती हैं अच्छी बात है।

वृन्दादेवी फिर दासियोंके प्रति कहती हैं—बहिनों! रानीकी आज्ञा है, इसलिये संकोच छोड़कर हमलोगोंको श्यामसुन्दरके हाथसे पान खा ही लेना है।

वृन्दाके ऐसा कहते ही श्यामसुन्दर एक साथ ही वृन्दाकी दासियोंको तथा मञ्जरियोंको पान खिलाकर अपनी प्रेमभरी दृष्टिसे तथा अपने मधुर कर-स्पर्शसे सभीको आनन्द एवं प्रेममें विभोर बना डालते हैं।

वेदीके मेहराबोंपर, खंभों एवं पुष्प-वृक्षोंकी टहनियोंपर बैठकर भिन्न-भिन्न जातिके सुन्दर पक्षी कलरव कर रहे हैं। पुष्पोंपर गुन-गुन करते हुए भौंरे मँडरा रहे हैं। पुलिनकी बालुकापर मयूरी एवं मयूरोंका दल आनन्दमें डूबा हुआ विचरण कर रहा है। श्रीयमुनाकी धारापर जलजातीय पक्षियों एवं हंसोंका समूह तैरता हुआ अपनी मधुर बोलीसे वन एवं पुलिनको निनादित कर रहा है। इन सबकी ओरसे प्रतिनिधिके रूपमें वृन्दा कहती हैं—प्यारे श्यामसुन्दर! अपने वनके समस्त चर-अचर प्राणियोंकी ओरसे मैं प्रार्थना कर रही हूँ कि अपनी प्रिया एवं सखियोंके साथ रास करके हमलोगोंके नयनोंको शीतल करो। प्यारे! असंख्य वर्षोंसे मैं तुम्हारा रास देख रही हूँ। प्रत्येक रात्रिको ही तुम रास रचाकर हमारे नयनोंको शीतल करते हो; पर प्यारे श्यामसुन्दर! तुम्हारा यह रास नित्य नूतन ही रहता है। मेरी प्रिय सहेलियोंने अत्यन्त उत्साहके साथ वेदी सजायी है। इस वेदीको अपने चरण-स्पर्शका दान करके मेरी सखियों एवं दासियोंकी सेवा स्वीकार कर लो।

श्रीश्यामसुन्दर अत्यन्त प्यारभरी दृष्टिसे वृन्दा एवं वृन्दाकी दासियोंको देखते हैं। उनकी दृष्टि पड़ते ही सब प्रेम एवं आनन्दमें बेसुध होने लगती हैं। श्रीश्यामसुन्दर सिंहासनकी सबसे नीचेवाली सीढ़ीपर खड़े हैं। श्रीप्रिया निर्निमेष नयनोंसे श्यामसुन्दरके सुन्दर मुखारविन्दकी

शोभा निहार रही हैं। श्रीश्यामसुन्दर श्रीप्रियासे रास-मण्डलमें पधारनेके लिये अनुरोध करते हैं। श्रीप्रिया मुस्कुराती हुई सिंहासनसे नीचे उतर पड़ती हैं तथा श्यामसुन्दरका कंधा पकड़कर खड़ी हो जाती हैं। उन्हें साथ लेकर अत्यन्त मदभरी चालसे चलते हुए श्यामसुन्दर वेदीके बीचमें आकर खड़े हो जाते हैं।

श्रीप्रिया बायीं ओर खड़ी होती हैं। विशाखा दाहिनी ओर तथा ललिता श्रीराधाके बायीं ओर खड़ी होती हैं; चित्रा विशाखाके दाहिनी ओर। इस प्रकार श्यामसुन्दरको लेकर पाँच तो बीचमें दक्षिणकी ओर मुख करके खड़ी हो जाती हैं तथा शेष सखियों एवं मञ्जरियोंकी मण्डली इन पाँचोंको घेरकर गोलाकार खड़ी हो जाती है। उनके इस प्रकार खड़ी हो जानेपर अर्द्धचन्द्राकारमें मञ्जरियोंका एक-एक दल चारों दिशाओंके ठीक बीच-बीचमें सुन्दर-सुन्दर वाद्य-यन्त्रोंको लेकर खड़ा हो जाता है। वेदीका शेष अंश वृन्दाकी दासियोंसे ठसाठस भर जाता है। सभी सखियों, दासियों एवं मञ्जरियोंके बदनपर चम्पई रंगकी साड़ियाँ अत्यन्त सुन्दर लग रही हैं। सबके शीशपर एक-से-एक बढ़कर सुन्दर-सुन्दर चन्द्रिका शोभा पा रही हैं तथा उनपरकी मणियोंके लाल, नीले, पीले, उजले, हरे, नारंगी एवं बैंगनी रंगके प्रकाशसे एवं चन्द्रमाकी अत्यन्त शुभ्र चाँदनीसे—इन सबसे वहाँकी चमक-दमक एवं शोभा सर्वथा अवर्णनीय हो गयी है। श्रीप्रिया, श्रीश्यामसुन्दर, सखियों, मञ्जरियों और दासियोंके अङ्गोंसे ज्योति एवं सुगन्धके फैलनेसे समस्त पुलिन ही प्रकाश तथा सुवाससे कुछ इतना अधिक परिपूरित हो उठा है कि उसका वर्णन सर्वथा असम्भव है।

श्रीश्यामसुन्दरके दाहिने हाथमें मुरली है। बायें हाथसे वे श्रीप्रियाके दाहिने कंधेको पकड़े हुए हैं। सर्वत्र आनन्द एवं अनुरागकी धारा बह रही है। इसी समय सबसे प्रथम श्रीश्यामसुन्दर मुरलीमें सुर भरते हैं। उनके सुर भरते ही वाद्य-यन्त्र बजानेवाली मञ्जरियोंके चारों दल भी एक साथ ही श्यामसुन्दरके सुरमें सुर मिलाकर वाद्य बजाना प्रारम्भ करते हैं। मुरली एवं वाद्य-यन्त्रोंकी मधुरिमासे पुलिन रसमय बन जाता है। श्यामसुन्दर सुर भरकर रुक जाते हैं। उनके रुकते ही सब वाद्य-यन्त्र भी तत्क्षण रुक जाते हैं। वे दो-तीन क्षणके लिये रुकते हैं। उस रुकनेके

क्षणमें सखियाँ, मञ्जरियाँ एवं दासियाँ—सभी मिलकर एक साथ ही अपने एक पैरको ऐसी चतुराई एवं विलक्षण रीतिसे किंचित् हिला देती हैं, जिससे घुँघरू एक साथ एक स्वरमें बज उठते हैं तथा उनका अनिर्वचनीय मधुरिम स्वर समस्त पुलिनपर बिखर जाता है। वह ध्वनि सर्वत्र गूँजने लग जाती है। ऐसा प्रतीत होता है मानो यमुनाके प्रवाहके अन्तरालमें, बालुका-कणोंके हृदयमें, पुष्प-वृक्षोंके अन्तरतममें, सर्वत्र घुँघरू बज रहे हों। घुँघरूकी ध्वनि बंद होते ही दूसरे क्षण फिर वही मुरलीका मधुरतम स्वर और वाद्य-यन्त्रोंका सुन्दरतम स्वर गूँजने लगता है। इस प्रकार घुँघरू एवं मुरली तथा वाद्य-यन्त्रोंकी ध्वनि क्रमशः गूँजती है। प्रत्येक बार स्वरका तार पहलेकी अपेक्षा दीर्घ होता जा रहा है, अर्थात् उत्तरोत्तर अधिक समयके लिये स्वरकी गति चालू रखी जाती है।

श्रीप्रिया अपने बायें हाथको अब ऊँचा उठा लेती हैं तथा स्वरका निर्देश करती हुई उसे अत्यन्त सुन्दर रीतिसे धीरे-धीरे ऊपर-नीचे एवं बायें-दाहिने घुमा रही हैं। श्रीश्यामसुन्दर अब अपना बायाँ हाथ श्रीप्रियाकी दाहिनी बाँहके भीतर ले जाकर श्रीप्रियाके दाहिने हाथकी अँगुलियोंको अपने बायें हाथकी अँगुलियोंसे पकड़ लेते हैं।

श्रीप्रियाके बायें हाथका अँगुली-संचालन ही सबको स्वरकी सूचना देता जा रहा है। ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो उन अँगुलियोंसे कोई छिपी हुई शक्ति निकल करके श्यामसुन्दरकी मुरली एवं अन्यान्य वाद्य-यन्त्रोंको श्रीप्रियाकी इच्छानुसार नचा रही हो। श्यामसुन्दरके मुखारविन्दपर मन्द-मन्द मुस्कान है। सखियों एवं दासियोंकी आँखें प्रेममें झूम रही हैं। श्रीप्रिया अपनी सुन्दर आँखोंकी पुतलियोंको कोयोंमें इस प्रकार नचा रही हैं कि देखते-देखते दर्शक-मण्डली बेसुध-सी होती जा रही है।

अब वाद्य-यन्त्रोंकी मधुरिमाके साथ ही मञ्जरियोंके चार दलोंमें जितनी मञ्जरियाँ थीं, वे सब अत्यन्त मधुर कण्ठसे एक साथ स्थायी स्वरमें गाना प्रारम्भ करती हैं—

(राग कान्हरो)

बन्यौ मोर मुकुट नटवर वपु स्याम सुंदर कमल नैन
बाँकी भौंह ललित भाल घुँघरवारो अलकें।

पीत बसन मोती माल हिये पदिक कंठ लाल
हँसनि बोलनि गावनि मंडन स्रवन कुंडल झलकें ॥
कर पद भूषन अनूप कोटि मदन मोहन रूप
अद्भुत वदन चंद देख गोपी भूली पलकें ॥
कहैं भगवान् हित राम राय प्रभु ठाढ़े रास मंडल मधि
राधा सों बाँह जोटी किये हिये प्रेम ललकें ॥

गीत समाप्त होनेपर दो-तीन क्षण सर्वत्र नीरवता छा जाती है। फिर तुरंत ही श्रीप्रिया अपने घुँघरूओंको बजा देती हैं। उनके ऐसा करते ही घुँघरू एवं वाद्य-यन्त्र एक साथ बज उठते हैं। इस बार विश्वमोहन नृत्य प्रारम्भ होता है। स्वरके साथ वह मण्डली, जो श्रीप्रिया-प्रियतम एवं ललिता-विशाखा-चित्राको घेरकर गोलाकार खड़ी थी, अपने पैरोंको उठाती-गिराती हुई घूमने लगती है तथा श्रीप्रिया-प्रियतम एवं ललिता-विशाखा-चित्रा अपने स्थानपर ही उसी प्रकार अपने पैरोंको नचाती हुई घूमने लगती हैं। नृत्य-मण्डलीकी गति पूर्वसे पश्चिमकी ओर है। इसी समय श्यामसुन्दर, जितनी सखियाँ हैं, उतने रूपोंमें प्रकट होकर प्रत्येकके बीचमें खड़े हो जाते हैं तथा सबका हाथ पकड़कर नृत्य करते हैं। अब सखी-श्यामसुन्दर, सखी-श्यामसुन्दर, सखी-श्यामसुन्दर, सखी-श्यामसुन्दरकी जोड़ी हाथोंसे हाथ मिलाये हुए नृत्य कर रही है। श्रीप्रिया एवं सखियाँ एक साथ ही स्वरके क्षणिक लय एवं सामयिक परिवर्तनके अवसरपर 'तत-थेई थेई, तत-थेई थेई' आदि शब्दोंको इतने मधुरतम स्वरमें उच्चारण करती हैं कि वेदीकी समस्त दर्शक-मण्डली आनन्दमें विभोर होकर भावके वेगको सँभाल नहीं पाती और तद्भावाविष्ट होकर 'थेई थेई' उच्च स्वरसे बोल उठती है। अब नृत्यकी गति तीव्र हो जाती है तथा उसी नृत्यके स्वरमें स्वर मिलाकर मञ्जरियोंके चारों दल मधुर कण्ठसे गाने लगते हैं—

देखो देखो री नागर नट निर्तत कालिंदी तट
गोपिन के मध्य राजे मुकुट लटक (री)।
काछिनी किंकिनि कटि पीतांबर की चटक
कुंडल किरन रवि रथ की अटक (री)॥
तत थेई तत थेई सबद सकल घट
उरप तिरप गति पग की पटक (री)।
रास में श्रीराधे राधे मुरली में एक रट
नंददास गावें तहाँ निपट निकट (री)॥

नृत्यकी गति और भी तीव्रतर होती है तथा गोपसखियोंका दल इसी पदको नृत्यके स्वरमें स्वर मिलाकर गाता है।

इस बार सखियाँ और श्यामसुन्दर परस्परका हाथ छोड़कर अपने-अपने दोनों हाथोंसे भाव बताना प्रारम्भ करते हैं। समस्त सखियोंके समस्त अङ्ग नृत्यके चढ़ाव-उतारके साथ विचित्र-विचित्र भङ्गिमाका प्रकाश करते हुए सबको आश्चर्यमें डाल रहे हैं। नृत्यके समय अङ्गोंको झुकाने, मोड़ने आदिके ढंगको देखनेपर ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो इन सखियोंके अङ्गोंमें अस्थि-संस्थान है ही नहीं और इनके अङ्ग सर्वथा सुन्दरतम सुकोमल माँससे निर्मित हैं, जो इच्छानुसार सब ओर सभी स्थानोंसे मुड़ जा सकते हैं। नृत्य करते-करते सखियोंका अञ्चल सिरसे सरक जाता है। श्यामसुन्दर बड़ी सावधानीसे उनके अञ्चलको बीच-बीचमें ठीक कर देते हैं।

अब नृत्यके आवेशमें श्रीप्रिया एवं ललिता आदि भी बेसुध होने लगती हैं। बीचमें भी एक मण्डल बन गया है, जिसमें ललिता-श्यामसुन्दर, प्रिया-श्यामसुन्दर, विशाखा-श्यामसुन्दर, ये छः हैं। ये मण्डलियाँ इस प्रकार स्थित हैं—

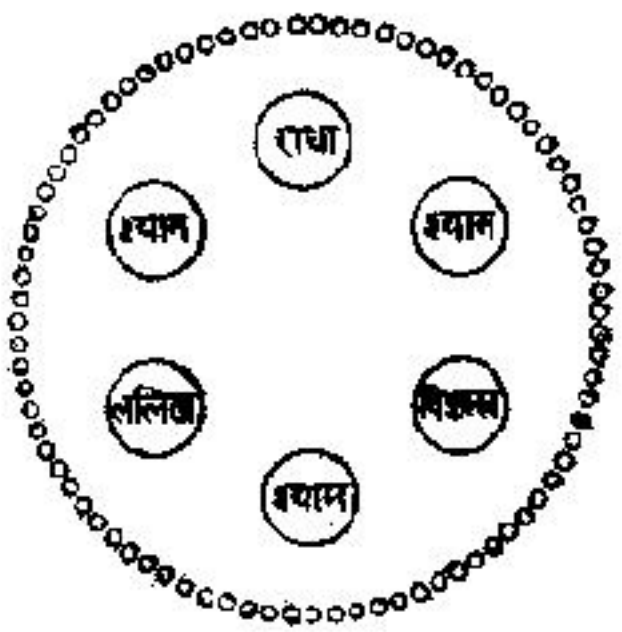

मध्यस्थित श्रीप्रिया एवं ललिताकी मण्डली ज्यों-की-त्यों नृत्य करती हुई अपने स्थानपर ही घूम रही है, पर बाहरवाली मण्डली नृत्यके आवेशमें

बहुत ही सुन्दर दूसरा आकार धारण कर लेती है। वह आकार ऐसा है—

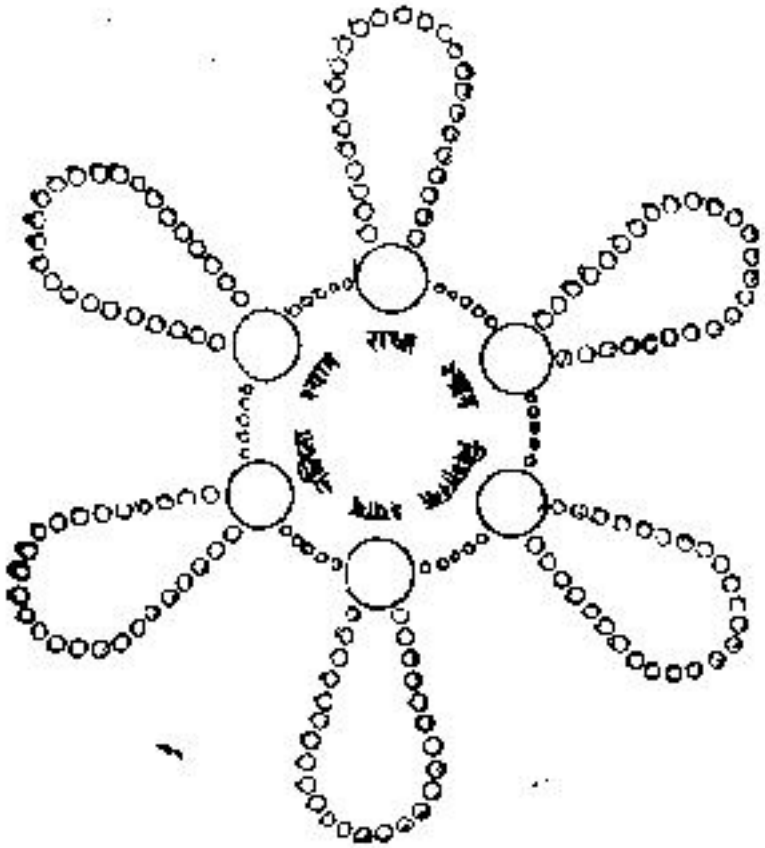

फिर कुछ देर बाद मण्डली जो तीसरा आकार धारण करती है, वह है—

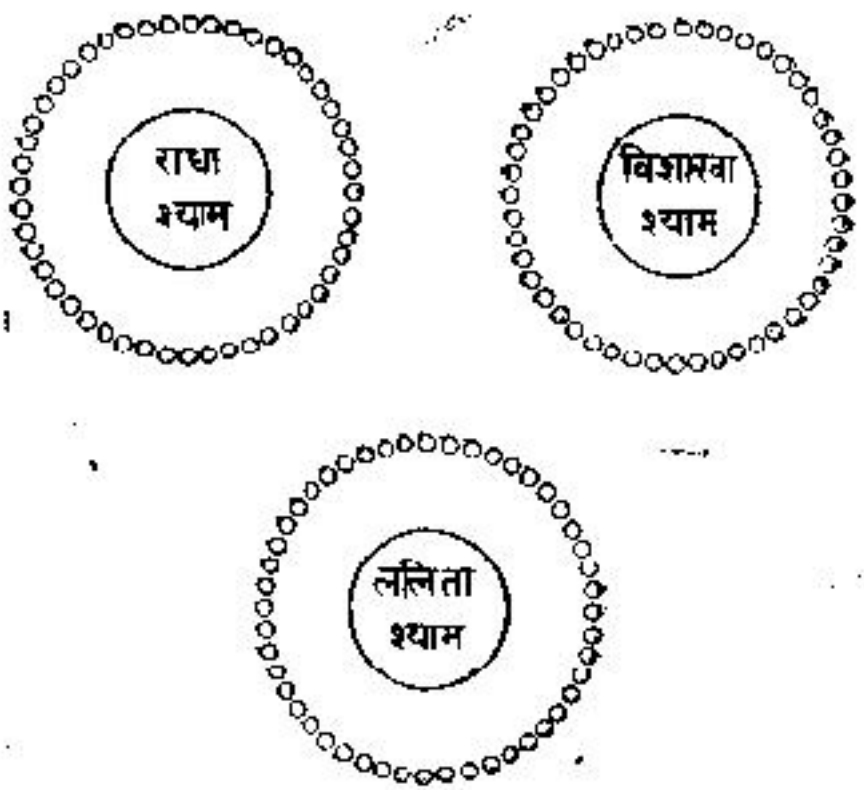

कुछ देर बाद चौथा आकार धारण कर लेती है, वह यह है—

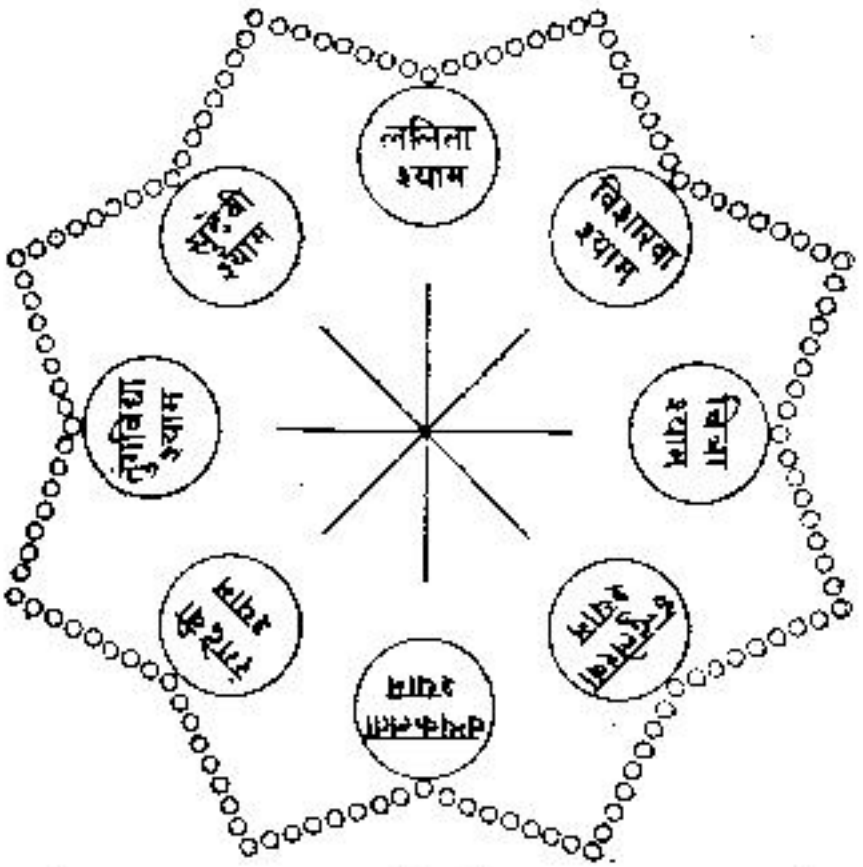

कुछ देर बाद इस प्रकारका पाँचवाँ आकार धारण करती है—

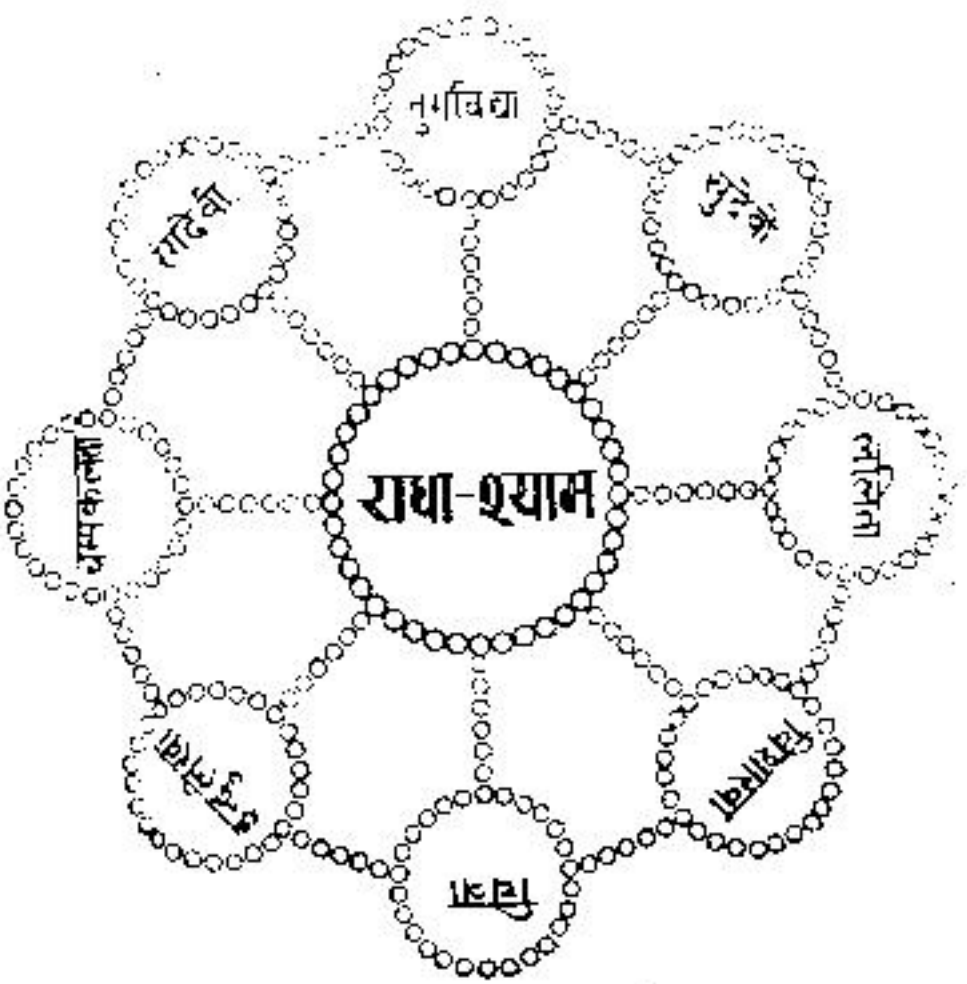

उपर्युक्त पाँचों आकारोंमें ही यह बात निश्चित रूपसे है कि प्रत्येक सखीके पास श्यामसुन्दर हैं। इन पाँच प्रकारके ढंगसे बहुत देरतक मधुरतम नृत्य एवं संगीतका सरस प्रवाह बहता रहा। अब रात्रिका समय अढ़ाई प्रहरसे कुछ अधिक व्यतीत हो जाता है, पर किसीको भी इसकी सुधि नहीं है।

श्रीप्रिया एवं सखियोंकी वेणियाँ खुल गयी हैं। उनमेंसे फूल झर-झरकर गिर रहे हैं। मुखारविन्दपर प्रस्वेद-कण मोतीकी तरह झलमल-झलमल कर रहे हैं। श्रीप्रिया आनन्दमें मूर्च्छित होकर गिरने लगती हैं। इसी समय श्यामसुन्दर मुरली होठोंसे अलग करके प्रियाको हृदयसे लगा लेते हैं। मुरली बंद होते ही और वाद्य-यन्त्र भी बंद हो जाते हैं। प्रत्येक सखीको श्यामसुन्दर अपने हृदयसे लगाकर अपने पीताम्बरसे उसका मुँह पोंछने लगते हैं।

श्रीप्रिया आनन्दमें कुछ देरतक मूर्च्छित रहती हैं। कई सखियाँ भी मूर्च्छित हैं। कोई-कोई अर्द्ध-बाह्य-ज्ञानकी दशामें हैं। सभीको श्यामसुन्दर हृदयसे लगाये-लगाये अपने पीताम्बरसे पंखा झल रहे हैं। धीरे-धीरे सखियाँ पूर्णतः प्रकृतिस्थ हो जाती हैं। प्रकृतिस्थ होते ही श्यामसुन्दर अपने और सब रूपोंको छिपा लेते हैं तथा एक श्यामसुन्दर बचे रहते हैं, जो राधारानीको गोदमें लिये बैठ जाते हैं। थोड़ी देर बाद रानी भी प्रकृतिस्थ हो जाती हैं। रानी हँसती हुई उठ बैठती हैं तथा अपना अञ्चल सँभालने लगती हैं।

वृन्दा आनन्दमें डूबती-उतराती हुई श्रीप्रियाका हाथ पकड़ लेती हैं तथा प्यारवश हाथोंसे प्रियाके हाथोंको दबाने लग जाती हैं। वृन्दाकी दासियाँ गुलाबपाशसे सुन्दर-शीतल जल श्रीप्रिया, श्यामसुन्दर एवं सखियोंपर धीरे-धीरे छींटती हैं। यमुना-पुलिनका शीतल-मन्द समीर यद्यपि प्रवाहित हो रहा है, फिर भी वृन्दाकी दासियाँ कमलके फूलोंसे पिरोये हुए सुन्दर-सुन्दर बड़े-बड़े पंखोंको लेकर धीरे-धीरे झलने लग जाती हैं। वृन्दा श्यामसुन्दरके वस्त्रोंमें अत्यन्त सुगन्धित इत्र लगाती हैं। उन्हें इत्र लगाती देखकर रानी भी थोड़ा इत्र लेकर श्यामसुन्दरके कंधेपरके दुपट्टेमें लगा देती हैं। वृन्दाकी सभी दासियाँ फिर ऐसा अनुभव करती हैं कि मुझे प्यारे श्यामसुन्दरके वस्त्रमें इत्र लगानेके लिये अवसर मिला है और

वे श्यामसुन्दरके अङ्गोंका स्पर्श पाकर आनन्दमें बेसुध-सी हो जाती हैं। फिर श्यामसुन्दर एवं सभी सखियाँ मिलकर रानीके वस्त्रोंमें इत्र लगाती हैं। इसके बाद श्यामसुन्दर सभी सखियोंके वस्त्रोंमें एक साथ ही इत्र लगाते हैं।

सर्वत्र आनन्द-ही-आनन्द छाया हुआ है। इस समय श्रीप्रिया-प्रियतमका मुख पूर्वकी ओर है। श्रीवृन्दाकी दासियोंकी टोली झारीमें जल एवं कुल्ला करनेके लिये चौड़े मुँहका गमला लिये हुये आ खड़ी होती हैं। दूसरी टोली सोनेकी परातोंमें सजा-सजाकर सोनेकी तश्तरियोंमें दूधकी मलाई एवं बरफके संयोगसे बनी हुई विभिन्न आकार एवं स्वादकी मिठाइयाँ लिये हुए खड़ी हैं। श्रीश्यामसुन्दर एवं श्रीप्रिया कुल्ला करती हैं। दासियोंकी टोली बड़ी शीघ्रतासे सबको कुल्ला करा देती है। कुल्ला कर लेनेके पश्चात् तश्तरी-भरी परातको श्यामसुन्दरके आगे रख देती है। रानी तश्तरीसे मिठाई निकालकर अत्यन्त प्यारपूर्वक श्यामसुन्दरके मुखमें देती जाती हैं। श्यामसुन्दर श्रीप्रियाके मुखारविन्दकी शोभा निहारते हुए मिठाई खा रहे हैं। कुछ मिठाई खाकर कहते हैं—न, अब तू जबतक नहीं खायेगी, तबतक मैं और नहीं खाऊँगा।

श्रीप्रिया कहती हैं—मैं पीछे खा लूँगी।

श्रीश्यामसुन्दर कहते हैं—तब न सही, मैं भी अब और नहीं खाऊँगा।

श्रीप्रिया प्रेममें भर जाती हैं तथा कहती हैं—अच्छा, मैं खा लूँगी; पर मैं जितनी मिठाई खाऊँ तुम्हें फिर उससे चौगुनी खानी पड़ेगी।

श्यामसुन्दर अत्यन्त प्यारसे कहते हैं—चौगुनी ही सही, इसपर भी यदि मैं अपने हाथसे खिलाऊँ और तू ठीकसे खा ले तो तुमसे आठ गुना अधिक खा लेनेका वचन दे रहा हूँ।

श्रीप्रिया सकुचा जाती हैं। सभी सखियाँ भी आनन्दमें विभोर हो जाती हैं। श्रीप्रिया चुप बैठी रहती हैं। श्यामसुन्दर मुस्कराकर पूछते हैं—क्यों प्रिये! मेरी बातको स्वीकार करती हो या नहीं?

रानी बहुत सकुचाये स्वरमें धीरेसे कहती हैं—अच्छा, खिला दो।

श्यामसुन्दर अत्यन्त प्यारसे श्रीप्रियाके हाथको पकड़ लेते हैं तथा फिर दाहिने हाथसे श्रीप्रियाके मुखमें मिठाईका एक छोटा-सा खण्ड रख देते हैं। श्रीप्रिया मिठाईको मुखमें लेकर प्रेममें इतनी अधीर होने लगती हैं कि सँभलकर बैठे रहना कठिन हो जाता है। रूपमञ्जरी तुरंत पीछेसे आकर उन्हें सँभाल लेती है। श्रीप्रिया उसीके सहारेसे बैठकर मिठाई खाती हैं। स्वयं श्यामसुन्दर ही अब प्रेममें इतने अधिक विभोर हो जाते हैं कि मिठाईका खण्ड हाथमें लेकर चुपचाप बैठे रह जाते हैं। न प्रियाको यह ज्ञान है कि मैं मिठाई खा रही हूँ, न श्यामसुन्दरको यह ज्ञान ही है कि मैं मिठाई खिला रहा हूँ। दोनों निर्निमेष नयनोंसे एक-दूसरेके मुखारविन्दको देखते हुए चित्रकी भाँति बैठे हैं। सखियाँ भी इनकी दशा देखकर प्रेममें पगली होती जा रही हैं। फिर ललिता कुछ सँभलकर रानीके मुखमें मिठाई देती हैं। रानी यन्त्रकी भाँति मिठाईको धीरे-धीरे कण्ठसे नीचे उतार लेती हैं। श्यामसुन्दर भी यन्त्रकी भाँति मिठाई उठा-उठाकर ललिताके हाथोंमें देते चले जाते हैं। श्रीप्रिया-प्रियतम, दोनोंकी ही अवस्था विचित्र हो गयी है।

ललिता कुछ मिठाई खिलाकर शीतल-सुवासित जलके गिलासको श्रीप्रियाके होठोंसे लगा देती हैं। श्रीप्रिया जलके कुछ घूँट पी लेती हैं। ललिता रानीके होठोंको जलसे पोंछकर चाहती हैं कि रूमालसे पोंछ दूँ, पर श्यामसुन्दर अपना पीत दुपट्टा ललिताके हाथमें दे देते हैं। ललिता मुस्कुराती हुई उसी दुपट्टेसे रानीका मुँह पोंछ देती हैं। अब रानीको चेत हो आता है। श्यामसुन्दरकी भी भाव-समाधि टूट जाती है। दोनों ही एक-दूसरेको देखकर हँस पड़ते हैं। श्यामसुन्दर फिर सखियोंको उसी प्रकार एक साथ मिठाई खिलाते हैं। फिर आपसमें एक-दूसरेको पान भी उसी प्रकार खिलाते हैं।

अब रात्रि लगभग तीन पहर पूरी होनेको आ गयी है। श्रीश्यामसुन्दरकी आँखोंमें प्रेमभरा आलस्य-सा झलकने लगता है। श्रीप्रिया मुस्कुराती हुई उठ पड़ती हैं। मण्डलीके सहित श्यामसुन्दर विश्राम-कुञ्जकी ओर चलने लगते हैं। श्रीयमुनाके उत्तरी तटपर विश्राम-कुञ्जकी पंक्तियाँ लगी हुई हैं। आज जिस कुञ्जमें विश्राम करना है, उसी ओर

वृन्दा आगे-आगे चल रही हैं। उनके पीछे प्रिया-प्रियतम एवं उनके पीछे सखियाँ चल रही हैं।

बालुकामय पुलिन एवं तटके बीचमें यमुनाकी एक धारा बहती है। उसपर नावका अत्यन्त सुन्दर पुल है। उसीपर चढ़कर श्रीप्रिया-प्रियतम किनारेपर पहुँचते हैं। मार्गमें चलते हुए आपसमें अत्यन्त प्रेममय विनोद होता जा रहा है। श्रीप्रिया-प्रियतम एवं सखियाँ कुछ सघन वन-श्रेणीको पार करती हैं तथा मणियोंके प्रकाशमें चमचम करते हुए सुन्दर पथसे चलकर रत्नमय निकुञ्ज-भवनमें आ पहुँचती हैं।

निकुञ्ज-भवनकी शोभा अनुपम ही है। उसमें प्रत्येक सखी, दासी एवं मञ्जरीके विश्रामके लिये अलग-अलग स्थान बने हुए हैं। निकुञ्ज-भवनके मध्यमें अत्यन्त सुसज्जित कमरा है, जिसमें सेवाकी सब सामग्रियाँ हैं। अत्यन्त सुन्दर मखमली शय्या बिछी है। उसके पास ही कमलोंकी एक और पुष्प-शय्या है। समस्त कमरेमें अपूर्व शान्ति-आनन्द-उल्लास भरा हुआ है। रानी आकर श्यामसुन्दरको मखमली शय्यापर बैठा देती हैं। श्यामसुन्दर सुस्ताने लग जाते हैं। कुछ देर आपसमें निर्मल विशुद्ध प्रेममय विनोद होता रहता है।

फिर ललिता उठकर खड़ी हो जाती है। अत्यन्त प्यारसे कहती है—मुझे नींद आ रही है, मैं सोने जा रही हूँ।

श्यामसुन्दर चाहते हैं कि ललिताको पकड़कर बैठा लें, पर वे फुर्तीसे बाहर निकल आती हैं तथा समीपस्थ कमरेमें शीघ्रतासे जाकर द्वार बंद कर लेती हैं। इसी प्रकार और-और, सखियाँ भी कोई किसी मिससे, कोई किसी मिससे बाहर आ जाती हैं। सबसे पीछे रूपमञ्जरी निकलती है। बाहर आकर वह द्वारको बंद कर देती है।

द्वारके पास ही दो पंक्तियोंमें, छः इस ओर एवं छः उस ओर अत्यन्त सुन्दर मखमली गद्दोंकी शय्याएँ लगी हुई हैं। रूपमञ्जरीके द्वारा द्वार बंद कर दिये जाते ही बारह मञ्जरियाँ उन्हीं शय्याओंपर लेट जाती हैं। उनकी चार-चारकी एक टोली बारी-बारीसे प्रत्येक घंटेमें जागती रहती है

कि जिससे कहीं कुञ्ज सेवाकी आवश्यकता होनेपर प्रिया-प्रियतमको कष्ट न हो जाये।

वृन्दा प्रत्येक सखीके द्वारके पास जाती हैं तथा छिद्रसे देखकर मुस्कुराती हुई आगे बढ़ती हैं। प्रत्येक जगह जा-जाकर जब वृन्दा स्वयं देख लेती हैं कि सब विश्रामके स्थानमें ठीक-ठीक पहुँच गयी हैं, तब अपनी दासियोंके साथ उसी महलके समीपस्थ महलमें जाकर विश्राम करती हैं।

शीतल-मन्द-सुगन्धित पवन प्रवाहित हो रहा है। यमुनाका प्रवाह बड़ी शान्तिकी अवस्थामें है। सर्वत्र एक अनिर्वचनीय शान्ति फैली हुई है। अवश्य ही कान लगाकर सुननेसे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वन एवं यमुना-पुलिनका अणु-अणु धीरे-धीरे जप रहा है—

'राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम।'

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

शृङ्गार लीला

श्रीप्रिया-प्रियतम श्रीविशाखाकी कुञ्जमें कदम्बकी छायामें विराजमान हैं। कदम्बके चारों ओर फूल खिले हुए हैं। उनपर भौंरे गुञ्जार कर रहे हैं। कदम्बके नीचे आलबाल (गड्ढा) बना हुआ है, जो भूमिसे लगभग डेढ़ हाथ ऊँचा है। आलबालके चारों ओरकी भूमिपर आठ-आठ हाथतक संगमरमर लगा हुआ है। इसके बाद बेला-पुष्पके पौधोंकी गोलाकार क्यारी लगी हुई है। बेलेके बाद दूसरी गोलाकार क्यारी मल्लिकाके फूलोंकी है। इसके बाद भूमिपर हरी-हरी दूब लगी हुई है। स्थान-स्थानपर स्थल-कमल एवं अत्यन्त सुगन्धित फूलोंकी छोटी-छोटी झाड़ियाँ भी लगी हुई हैं।

श्रीप्रिया-प्रियतम दक्षिणकी ओर मुँह किये बैठे हैं। दोनोंकी पीठ गद्दोंके सहारे टिकी हुई है। श्रीश्यामसुन्दरकी बायीं ओर श्रीप्रियाजी बैठी हैं। दोनोंके आगे बाँसकी बनी हुई डलियामें बेला एवं चमेलीके फूल रखे हुए हैं। बाँसकी डलिया केलेके हरे एवं पीले पत्तोंसे जड़ दी गयी है तथा उसपर पानीकी कुछ बूँदें झलक रही हैं। श्रीप्रिया-प्रियतम एक धागेमें फूलोंको पिरो-पिरोकर गजरा बना रहे हैं। धागेके एक छोरको पकड़कर श्रीप्रिया फूल पिरो रही हैं तथा दूसरे छोरको पकड़े हुए श्यामसुन्दर फूल पिरो रहे हैं। फूल तोड़ती हुई कुछ सखियाँ पासमें ही बेले एवं चमेलीकी क्यारियोंमें खड़ी हैं। वे सब फूल तोड़-तोड़कर अपने-अपने अञ्चलोंमें रखती जाती हैं। जब कुछ इकट्ठे हो जाते हैं तो वे उन्हें लाकर श्यामसुन्दरके आगे रखी हुई डलियामें उड़ेल देती हैं।

यद्यपि अत्यन्त शीतल-मन्द-सुगन्धित पवन चल रहा है, फिर भी विमलामञ्जरी खसके बने हुए एक पंखेको धीरे-धीरे झल रही है। विमलामञ्जरी उत्तरकी ओर मुँह किये खड़ी है। श्रीप्रिया-प्रियतमके मुखारविन्दपर रह-रहकर अत्यन्त मधुर मुसकान झलक जाती है, पर दोनों ही उसे रोकनेकी चेष्टा करके ऐसा भाव व्यक्त करते हैं मानो दोनों ही सर्वथा एकान्त मनसे फूलोंको पिरो रहे हैं। श्रीप्रिया कनखीसे

श्यामसुन्दरको देखती हैं तथा श्यामसुन्दर श्रीप्रियाजीको। इस चेष्टामें जब दोनोंकी आँखें मिल जाती हैं तो प्रिया लज्जित होकर कभी ललिता, कभी विशाखाका नाम लेकर पुकार उठती हैं और कहती हैं—ललिते! देख, जल्दी और फूल ला। अब डलियाके फूल समाप्त हो चले हैं।

श्यामसुन्दर भी श्रीप्रियाकी बातोंको विनोदमें उड़ा-सा देते हुए कहते हैं—हाँ-हाँ, अब फूल बहुत कम रह गये हैं, शीघ्र ला।

गजरेके दोनों छोरोंको बार-बार इकट्ठा करके श्रीप्रियाजी एवं श्यामसुन्दर देखते हैं कि गाँठ देने जितनी माला पिरोयी जा चुकी है कि नहीं। ऐसा करते समय श्रीप्रिया एवं श्यामसुन्दर, दोनोंकी अँगुलियाँ छू जानेके कारण दोनोंमें ही प्रेम उफनने लगता है, जिससे दोनोंके ही शरीर काँप जाते हैं तथा कभी दोनोंके मुखारविन्द प्रस्वेद-कणोंसे भर जाते हैं। क्रमशः गजरा तैयार हो जाता है। श्रीप्रिया गाँठ देनेके लिये गजरेके दूसरे छोरको पकड़ लेती हैं। गाँठ देनेका कार्य हो चुकनेके बाद श्यामसुन्दर पिरोनेके लिये फूलोंको डलियामेंसे छाँट-छाँटकर अलग अपने पीताम्बरके एक किनारेपर रख रहे हैं। अब श्यामसुन्दर उस सुन्दर गजरेको अपने हाथमें लेकर उस गजरेमें लटकनेवाले गुच्छेका निर्माण करनेके लिये फूल पिरोने लगते हैं। कदम्बके पुष्पोंकी मीठी-मीठी सुगन्ध आ रही है। श्यामसुन्दरकी वनमालासे निकली हुई सुगन्धिके कारण भौंरोंका एक दल बार-बार मँडराकर आता है। वह चाहता है कि वनमालापर बैठ जाये, पर प्रिया अपने हाथमें रूमाल उठाकर उन्हें उड़ा देती हैं।

श्यामसुन्दर फूल पिरो रहे हैं। श्रीप्रिया चुन-चुनकर उनके हाथोंमें फूल देती चली जा रही हैं। जब गजरा बन जाता है तो श्यामसुन्दर उसे अपने हाथोंमें लेकर प्रियाको पहनानेके लिये खड़े हो जाते हैं; पर प्रिया गजरेको पकड़ लेती हैं तथा कहती हैं—नहीं, इसे मैं तुम्हें पहनाऊँगी।

श्यामसुन्दर कहते हैं—नहीं, इसे मैं तुम्हें पहनाऊँगा। प्रतिदिन मेरा शृङ्गार तू पहले करती है, आज मैं तुम्हारा करूँगा।

सभी सखियोंके सामने श्यामसुन्दरके द्वारा शृङ्गार करानेमें श्रीप्रिया लज्जाका अनुभव करती हैं, अतः वे कहती हैं—नहीं।

श्रीललिता आती हैं तथा दाहिने हाथसे श्रीराधारानीके बायें कंधेको पकड़कर कहती हैं—देखो, मैं निर्णय कर देती हूँ। पर इसमें फिर किसीको आनाकानी नहीं करनी पड़ेगी।

श्रीराधा—क्या निर्णय, बताओ!

श्रीललिता—पहले यह बता, तू मान लेगी न?

श्रीराधा—ऐसे कैसे हाँमी भर लूँ? तू पहले निर्णयका रूप बता दे, फिर 'हाँ' या 'ना' कहूँगी।

श्यामसुन्दरने बीचमें ही रोककर कहा—मैं तो मान लूँगा।

श्यामसुन्दरके इस प्रकार कहते ही सबको आश्चर्य हुआ कि आज श्यामसुन्दर बिना किसी आनाकानीके ललिताका बताया हुआ निर्णय कैसे मान रहे हैं? क्या बात है? अब सभी सखियाँ राधारानीपर भी दबाव डालने लगती हैं कि तू भी मान ले। सखियोंके कहनेपर राधारानी भी हाँमी भर देती हैं कि मैं भी मान लूँगी।

ललिता बेलेके बड़े-बड़े फूल उठा लेती हैं तथा दोनोंके सामने फूलकी एक पँखुड़ीपर 'राधा' तथा दूसरे फूलकी एक पँखुड़ीपर 'श्याम'का चिह्न बना करके दोनों फूलोंको हाथकी अञ्जलिमें रखकर कहती हैं—तुम दोनों आँखें मूँद लो। मैं इन्हें उलटकर रख देती हूँ। फिर राधा एक फूल उठा ले। जिसका नाम उसमें रहेगा, उसीको आज गजरा पहनाने तथा शृङ्गार करनेका अधिकार समझा जायेगा।

श्रीप्रिया-प्रियतम आँखें मूँद लेते हैं। ललिता दोनों फूलोंको उलटकर रख देती हैं तथा कहती हैं—आँखें खोलो!

राधारानी आँखें खोलकर बड़े विचारमें पड़ जाती हैं तथा सोचने लगती हैं कि कौन-सा उठाऊँ। सोचते-सोचते वे एक फूल उठा लेती हैं। संयोगवश वे उसीको उठाती हैं, जिसपर 'श्याम' नाम लिखा था। श्रीकृष्ण उनके उठाते ही दूसरा फूल उठा लेते हैं तथा देखते हैं कि किसका नाम प्रिया राधाने उठाया है। देखते ही वे आनन्दमें भरकर गजरा श्रीप्रियाके गलेमें डाल देते हैं तथा सखियाँ आनन्दमें निमग्न होकर ताली बजाने लगती हैं।

अब फूलोंका शृङ्गार आरम्भ होता है। श्रीप्रियाके लिये श्यामसुन्दर भाँति-भाँतिके फूलोंके गहनोंका निर्माण करते हैं तथा उनसे प्रियाको सजाते हैं। सखियाँ भी विभिन्न प्रकारके फूलोंको ला-लाकर डलियामें उड़ेलती जा रही हैं। अन्तमें श्यामसुन्दर फूलोंकी अत्यन्त सुन्दर चन्द्रिका बनाते हैं। उसे प्रियाके सिरपर बाँधनेके लिये वे प्रियासे पहलेवाली रत्न-मणि-मोती-जटित चन्द्रिकाको उतारनेके लिये कहते हैं। प्रियाका संकेत पाकर विशाखा धीरेसे अञ्चल हटाकर और बन्धन खोलकर उसे उतार लेती हैं। श्यामसुन्दर प्रियाके मस्तकपर पुष्पोंकी चन्द्रिका बाँधते हैं। बाँधते समय प्रेमावेशके कारण श्यामसुन्दरका हाथ काँपने लगता है तथा बहुत चेष्टा करनेपर भी हाथ स्थिर नहीं रह पाता। श्रीप्रिया मुस्कुराकर कहती हैं—खेल मत करो। शीघ्र बाँध दो।

श्यामसुन्दर उसे नहीं बाँध पाते। श्यामसुन्दरकी यह प्रेमावस्था देखकर श्रीप्रियामें भी प्रेमका संचार होने लगता है। उनका शरीर भी कुछ काँपने-सा लगता है। श्यामसुन्दर अपनेको कुछ सँभालकर मुस्कुराते हुए कहते हैं—मैं क्या करूँ? तू सिर हिला दे रही है, इसीसे मैं बाँध नहीं पा रहा हूँ।

श्रीप्रिया मुस्कुराती हुई चन्द्रिकाको अपने हाथोंसे पकड़ लेती हैं तथा कहती हैं—लो, देखो! मैं स्वयं बाँध लेती हूँ।

श्यामसुन्दरका हाथ काँप रहा था, इसलिये वे चन्द्रिकाको श्रीप्रियाके हाथोंमें दे देते हैं। प्रियाजी चन्द्रिका बाँधने लगती हैं। श्यामसुन्दर सामने पड़े हुए दर्पणको उठाकर श्रीप्रियाके मुखके सामने करते हैं, फिर भी हाथ रह-रहकर काँप जाता है, जिससे दर्पण हिल जाता है। इधर श्रीप्रिया दर्पणमें अपना मुख देखना चाहती हैं तथा चाहती हैं कि उसमें देखकर चन्द्रिका ठीकसे बाँध लूँ; पर दर्पणमें उन्हें अपना मुख नहीं दीखता। अपने मुखके स्थानपर उन्हें दर्पणमें श्यामसुन्दरका ही सुन्दर मुख दीखता है। अतः बड़ी कठिनतासे वे चन्द्रिकाको अपने सिरपर बाँध पाती हैं। चन्द्रिका बाँधते ही वे प्रेमसे मूर्च्छित होकर श्यामसुन्दरकी गोदमें गिर पड़ती हैं। श्यामसुन्दर उन्हें अपनी गोदमें लिटाकर अपने बायें हाथसे खसके पंखेको पकड़कर झलने लगते हैं तथा दाहिने हाथसे

प्रियाजीके शरीरको धीरे-धीरे सहलाते हैं। मधुमतीमञ्जरी वीणाके तारोंको शीघ्रतासे ठीक करके सुर मिलाकर अत्यन्त मधुर-मधुर स्वरमें गाने लगती है—

तू है सखी बड़भाग भरी नंदलाल तेरे घर आवत हैं ।
निज कर गूँथि सुमन के गजरे हरषि तोहि पहरावत हैं ॥
तू अपनो सिंगार करति जब दरपन तोहि दिखावत हैं ।
आनँदकंद चंद मुख तेरो निरखि निरखि सुख पावत हैं ॥
जाके गुन सब जगत बखानत सो तेरो गुन गावत हैं ।
नारायन बिन दाम आजकल तेरेहि हाथ बिकावत हैं ॥

श्रीप्रियाकी मूर्च्छा टूट जाती है तथा वे अपनेको श्यामसुन्दरकी गोदमें पड़ी हुई पाती हैं। वे लज्जाका अनुभव करती हुई घबराकर शीघ्र उठ जाती हैं और अपना अञ्चल सँभालने लगती हैं। श्यामसुन्दर हँसने लगते हैं। सखियाँ भी हँसने लगती हैं। अब श्यामसुन्दरके शृङ्गारकी बारी आती है। सभी सखियाँ आनन्दमें फूली हुई भाँति-भाँतिके आभूषण बनाती हैं तथा राधारानीके हाथोंमें देती जाती हैं। श्रीराधारानी श्यामसुन्दरको सजा रही हैं।

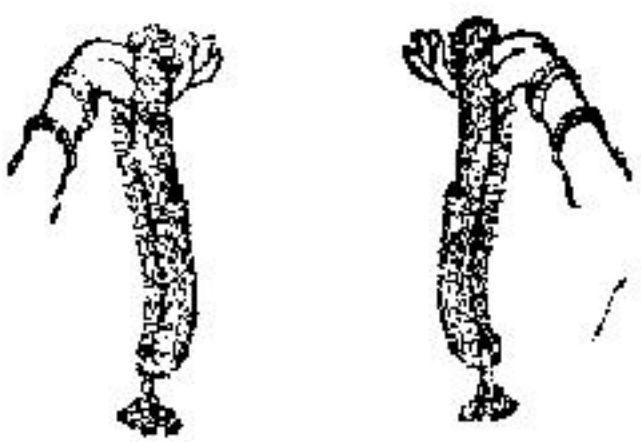

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

आँखमिचौनी लीला

श्रीचित्राके कुञ्जमें श्रीप्रिया-प्रियतम अत्यन्त सुन्दर पुष्पोंसे लदी हुई एक झाड़ीकी छायामें बैठे हैं। श्रीकृष्ण झाड़ीकी जड़में पीठ टेककर उत्तरकी ओर मुख किये बैठे हैं। वे दोनों पैर फैलाये हुए हैं। श्रीप्रिया उनकी बायीं ओर उसी प्रकार झाड़ीकी मूलसे अपनी पीठ टेके हुए बैठी हैं, पर उनका दाहिना हाथ श्यामसुन्दरके बायें कंधेपर है। श्रीललिता श्रीश्यामसुन्दरकी दाहिनी ओर कुछ दूरपर खड़ी हैं। सामने विशाखा एवं चित्रा एक कपड़ेके दोनों छोरोंको पकड़कर उसमें शर्बत छान रही हैं। शर्बत छन-छनकर चौड़े मुखके स्वर्णपात्रमें गिर रहा है। उस स्वर्णपात्रसे शर्बत गिलासमें भरकर रूपमञ्जरी दूसरे-दूसरे गिलासोंमें भरती जा रही है। विमलामञ्जरी उन गिलासोंको सजा-सजाकर बहुत बड़ी सोनेकी परातमें रखती जा रही है।

श्यामसुन्दर बीच-बीचमें मुरलीको होठोंसे लगाकर उसमें एक-दो बार फूँक भर देते हैं। फूँक भरते ही उसकी स्वर-लहरी वनमें गूँजने लगती है तथा सखियों एवं राधारानीका शरीर उतनी देरतक प्रेमसे काँप उठता है। श्यामसुन्दर बीच-बीचमें श्रीप्रियाकी ओर देख भी लेते हैं। श्रीप्रिया मुस्कुराकर अपने हाथोंसे कभी-कभी श्यामसुन्दरकी आँखें मूँद देती हैं।

संकेतके पाते ही रूपमञ्जरी शर्बतका एक गिलास लाकर श्रीप्रियाके हाथोंमें पकड़ा देती है। श्रीप्रिया उसे श्यामसुन्दरके होठोंसे लगा देती हैं। श्रीश्यामसुन्दर एक घूँट शर्बत पीते हैं और फिर श्रीप्रियाके मुखारविन्दकी शोभा निहारने लगते हैं। श्रीप्रिया इस बार दाहिने हाथसे गिलासको पकड़े रहती हैं तथा बायें हाथसे श्यामसुन्दरकी आँखें मूँद देती हैं; पर श्रीप्रियाकी अँगुलियोंके छिद्रोंसे फिर भी श्यामसुन्दर श्रीप्रियाकी शोभा निहारने लगते हैं। श्रीप्रिया कुछ सकुचायी-सी होकर धीरेसे कहती हैं—तुम्हारा नटखटपना नहीं जाता। शर्बत पीनेमें इतनी देर लगाते हो!

श्रीप्रियाकी बात सुनकर श्यामसुन्दर अपना मुख ऊपरकी ओर उठा देते हैं तथा हँसते हुए कहते हैं—अच्छा ! हम तो नटखट हुए, ठीक; पर तुम्हारा लबरा क्या कम हो गया है ?

इस बार श्रीप्रिया बायें हाथसे श्यामसुन्दरके सिरको अत्यन्त प्रेमसे हिलाकर बहुत धीरेसे कहती हैं—देखो, शीघ्र पी लो। ललिता-विशाखाको इसी समय एक कामसे मुझे बाहर भेजना है।

श्यामसुन्दर इस बार श्रीप्रियाकी ओर देखते हुए शीघ्रतापूर्वक पाँच-सात घूँट पी लेते हैं। श्रीप्रिया गिलासको लेकर रूपमञ्जरीके हाथमें दे देती हैं। रूपमञ्जरी गिलासको लेकर जैसे ही पीछे हटनेके लिये पैर बढ़ाती है, वैसे ही श्यामसुन्दर गिलासको पकड़ लेते हैं तथा कहते हैं—थोड़ा और पीऊँगा।

श्रीश्यामसुन्दर गिलास लेकर श्रीप्रियाके होठोंके पास ले जाना चाहते हैं कि इतनेमें ही ललिता वहाँ आ जाती हैं तथा कहती हैं—देखो, शर्बत पीते-पीते तुमने तो इतनी देर कर दी। कलकी बात भूल गये क्या ?

श्यामसुन्दर गिलास हाथमें लिये हुए ही ऐसा भाव बनाते हैं मानो उन्हें सचमुच कोई बात स्मरण ही नहीं हो तथा आश्चर्यभरी मुद्रामें कहते हैं—कलकी कौन-सी बात ?

ललिता श्यामसुन्दरके हाथसे चटसे गिलास ले लेती हैं। श्यामसुन्दर भी बिना आनाकानीके गिलास छोड़ देते हैं। गिलास लेकर ललिता कहती हैं—ऐसे साधु बन गये मानो कुछ स्मरण ही नहीं है।

ललिताकी बात सुनकर श्यामसुन्दर मुस्कुरा पड़ते हैं और कहते हैं—हाँ, अब स्मरण आया। अभी-अभी, देख, मैं अभी एक साथ ही तुम सब लोगोंको सिखला देता हूँ।

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर ललिता कहती हैं—चतुराई रहने दो, बात पलटनेसे नहीं छोड़ूँगी। आज होड़ बदकर देख लो, तुम्हें मैं कितना छकाती हूँ।

यह सुनकर श्यामसुन्दर चटपट बोल उठते हैं—हाँ, हाँ, मैं भूल

गया था। क्या हानि है? देख ले। मैं हटता नहीं; पर एक बात तुम सबको माननी होगी।

ललिता—क्या बात?

श्यामसुन्दर—मेरी आँख मेरी प्रिया राधा मूँदेगी।

ललिता—यह तो होनेका ही नहीं है। राधाके आँख मूँदनेपर तो तुम देख ही लोगे कि मैं कहाँ छिप रही हूँ। और नहीं तो यह राधा तुम्हें व्याकुल देखकर संकेतसे ही बता देगी कि ललिता किधर गयी है।

बात यह थी कि कल श्यामसुन्दरने यह प्रतिज्ञा की थी कि आँखमिचौनीके खेलमें यदि मैं हार गया, तब तो एक दिनके लिये वंशी राधारानीके हाथ बन्धक रख दूँगा। और यदि मैं नहीं हारा तो होगा यह कि श्रीराधा या ललिता आदि सखियोंमेंसे जो-जो हारेंगी, उन सबको एक-एक घंटेतक मेरे हाथकी कठपुतली बनकर, मैं जो कहूँगा, वही-वही करना पड़ेगा। कल देर हो जानेके कारण यह खेल नहीं हो सका था, इसलिये आज ललिताने स्मरण दिलाया है तथा प्रोत्साहन दे रही है।

ललिता एवं श्यामसुन्दरमें झगड़ा होने लग जाता है। श्यामसुन्दर कहते हैं कि यदि मैं चोर बना तो प्रिया राधा ही मेरी आँखें मूँदेंगी और ललिता कहती है—ना, राधाको तो आँखें मूँदने ही नहीं दूँगी। या तो विशाखा मूँदेगी या चित्रा।

अब वृन्दा पंच बनायी जाती है। वृन्दादेवीने यह निर्णय दिया—ऐसे नहीं। राधा, विशाखा, चित्रा, तीनोंके नाम मैं तीन फूलोंपर लिखकर उन फूलोंको ऊपर आकाशमें उछाल देती हूँ। जो फूल पट गिरेगा, अर्थात् दल भूमिकी ओर एवं डंटी आकाशकी ओर होकर गिरेगा, उसे मैं छोड़ दूँगी, अर्थात् वह आँख नहीं मूँद सकेगी। यदि तीनों फूल पट गिरे तो इन तीनोंके अतिरिक्त कोई चौथी ही आँख मूँदेगी।

वृन्दा इस प्रकार कहकर तीन फूलोंको समीपस्थ डलियामेंसे उठा लेती है। एकपर 'राधा', दूसरेपर 'विशाखा' और तीसरेपर 'चित्रा' का चिह्न बनाती है तथा तीनोंको एक साथ ही आकाशमें उछाल देती है।

तीनों फूल एक साथ ही भूमिपर गिरते हैं। जिसपर श्रीराधारानीका नाम चिह्नित था, वही फूल आकाशकी ओर दल तथा भूमिकी ओर डंटी करके गिरा। अतएव श्रीकृष्णके आनन्दकी सीमा नहीं रही। वे हँसकर ताली पीटने लग जाते हैं। राधारानी कुछ लजा-सी जाती हैं।

ललिताके हाथमें अभीतक श्यामसुन्दरके अधरामृत शर्बतका गिलास उसी तरह पड़ा था। वे कुछ मुस्कुराती हुई कहती हैं—अच्छी बात है, देख लूँगी।

ऐसा कहनेके बाद वे कुछ आगे बढ़कर श्रीराधारानीका एक हाथ बायें हाथसे पकड़कर कुछ दूर पश्चिमकी ओर ले जाती हैं तथा श्यामसुन्दरकी ओर पीठ करके रानीके कानमें कुछ कहती हैं। रानी मुस्कुराती हुई सुनती हैं। कुछ ही क्षणमें बात समाप्त हो जाती है तथा ललिता उस गिलासको रानीके होठोंसे लगा देती हैं। रानी उसमेंसे चार-पाँच घूँट बहुत शीघ्रतासे पी लेती हैं। रूपमञ्जरी तुरंत वहाँ जलकी झारी लेकर पहुँच जाती है तथा सोनेके गिलासमें पानी भरकर रानीके होठोंसे लगा देती है। मुँहमें कुल्ला भरकर रानी उसे शीघ्रतासे भूमिपर ही फेंक देती हैं तथा ललिताके पास चली जाती हैं, जो वहाँसे कुछ दूर खड़ी होकर कुछ गम्भीरतासे सोच रही थीं। रानी ललिताकी कमरमें खोंसी हुई रूमाल निकाल लेती हैं तथा उससे अपना मुँह पोंछकर धीरे-धीरे श्यामसुन्दरके पास आकर खड़ी हो जाती हैं।

इसी बीच श्यामसुन्दरने भी कुल्ले कर लिये थे। वे विशाखाके हाथसे दिये हुए पानको हाथमें लेकर खड़े-खड़े श्रीप्रियाकी ओर देख रहे हैं। मुखपर मन्द-मन्द मुस्कान है। श्रीप्रियाको पास आयी देखकर श्यामसुन्दर मुस्कुराकर कहते हैं—क्यों, ललितारानीसे सीख-पढ़ लिया तो?

रानी अत्यन्त प्यारभरी मुद्रामें मुस्कुराती हुई धीरेसे कहती हैं—थोड़ा सीखना और शेष है। तुम्हारी आँखें मूँदते समय वह भी सीख लूँगी।

फिर रानी श्यामसुन्दरके दाहिने हाथको, जिसमें पानका बीड़ा था, धीरेसे पकड़ लेती हैं तथा श्यामसुन्दरके होठोंसे सटा देती हैं।

श्यामसुन्दर पान मुँहमें रख लेते हैं।

अब सारी मण्डली आँखमिचौनीका खेल खेलनेके लिये पूर्वकी ओर बढ़ने लगती है। लगभग बीस गज चलकर मेंहदीकी गोलाकार क्यारीसे घिरे हुए एक स्थलपर श्रीप्रिया-प्रियतम एवं सखियाँ पहुँच जाती हैं। मेहराबदार द्वारसे प्रवेश करके वे लोग घेरेके भीतर चली जाती हैं। घेरेका व्यास लगभग साठ गज है, जिसके चारों ओर पाँच-पाँच हाथ ऊँची मेंहदीकी झाड़ियोंकी क्यारी है। घेरेसे निकलनेके लिये चारों दिशाओंमें चार मेहराबदार द्वार हैं, जिनपर लताएँ फैली हुई हैं तथा उनमें फूल खिल रहे हैं। घेरेके भीतर सब स्थानपर पाँच, छः, सात, आठ हाथके यथायोग्य अन्तरपर छिपनेके लिये झाड़ियाँ बनी हुई हैं। उनमें भी फूल खिले हुए हैं।

घेरेके बीचमें चारों ओरसे आठ-आठ हाथका स्थान झाड़ियोंसे खाली है। उसपर हरी दूब लग रही है। दूब इतनी कोमल एवं सघन है मानो हरे रंगकी सुन्दर मखमली कालीन बिछी हुई हो। उसी स्थलपर आकर श्रीप्रिया-प्रियतम बीचमें बैठ जाते हैं। इस समय श्रीप्रिया-प्रियतमका मुख पश्चिमकी ओर है। सखियाँ भी उन्हें चारों ओरसे घेरकर कुछ तो बैठ जाती हैं, कुछ खड़ी रहकर ही श्यामसुन्दरके मुखारविन्दकी शोभा निहार रही हैं। अब यह विचार होने लगता है कि खेलमें पहले चोर कौन बने, अर्थात् किसकी आँख पहले मूँदी जाये। इसका निर्णय करनेके लिये ललिता एक बित्ता लंबी दूबका एक तिनका हाथमें उठा लेती है। उसे अपनी दोनों तलहथियोंको सटाकर इस प्रकार रख लेती हैं कि तिनकेका एक छोर तो तलहथीके भीतर छिप जाता है एवं दूसरा बाहर लटकता रहता है।

लगभग दो-तिहाई तिनका बाहर निकला हुआ है और एक-तिहाई ललितारानीकी सटी हुई तलहथीके अंदर छिपा हुआ है। ललिता कहती हैं—देखो, श्यामसुन्दर! तुम एवं मेरी सभी सखियाँ इस तिनकेको थोड़ा-थोड़ा बाहरकी ओर खींचो। जिसके हाथसे खींचे जाते हुए यह तिनका सम्पूर्ण रूपसे बाहर निकल आयेगा, वही पहले चोर बनेगा। उसकी आँख पहले मूँदी जायेगी।

ललिताकी बात सुनकर श्रीश्यामसुन्दर आगे बढ़कर तिनकेको किंचित् खींचते हैं। खींचकर छोड़ देते हैं तथा धीरेसे राधारानीसे कहते हैं—थोड़ा तू खींच।

ललिता हँसकर कहती है——अरे! यह कैसे खींचेगी? यह तो आँख मूँदनेवाली है।

श्यामसुन्दर कुछ मुस्कुराकर कहते हैं—तू भला थोड़े मूँदनेकी है।

श्यामसुन्दर और सखियोंको खींचनेके लिये संकेत करते हैं। विशाखा जाकर थोड़ा खींच लेती है, फिर चित्रा खींचती है, फिर इन्दुलेखा, चम्पकलता, तुङ्गविद्या, सुदेवी, रङ्गदेवी क्रमशः थोड़ा-थोड़ा खींचती हैं। अब तिनका अधिकांश बाहर निकल चुका है। लगभग एक-डेढ़ अंगुल भीतर छिपा है। फिर श्यामसुन्दर थोड़ा खींचते हैं और उसी प्रकार क्रमशः उपर्युक्त सभी सखियाँ खींचती हैं; पर तिनका अभी भी बाहर नहीं निकला है। किसीको पता तो था नहीं कि कितनी लंबी दूबका तिनका ललिताने चढ़ाया है। इसलिये सभी इतना कम खींचती हैं कि कठिनाईसे प्रत्येक बार तिनका एक चावलभर बाहर निकल पाता है। अब फिर श्यामसुन्दरकी बारी आ गयी। श्यामसुन्दरने तिनकेको छूआ ही था कि तिनका बाहर निकल पड़ता है। श्रीश्यामसुन्दर हँसते हुए ललिताके दोनों कंधोंको पकड़ लेते हैं तथा कहते हैं --तुमने छल किया है। जान-बूझकर मेरे छूते ही तुमने तिनका गिरा दिया है।

ललिता कहती है —नहीं, तुमने खींचा है। मैं तो जैसे पहले पकड़े हुए थी, वैसे ही पकड़े रही हूँ।

श्यामसुन्दर कंधा छोड़कर अलग हो जाते हैं तथा कहते हैं—-अच्छी बात है, देख लूँगा। पहलेसे ही कह देता हूँ, इस बार तुम्हारी ही बारी आयेगी; तू भले कहीं भी छिप जा।

अब खेल प्रारम्भ होता है। वृन्दादेवी निर्णय करनेवाली बनती हैं तथा ध्रुवस्थान श्रीरूपमञ्जरी बनती हैं। श्रीश्यामसुन्दर पूर्वकी ओर मुख करके बैठ जाते हैं। श्रीप्रिया मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई आगे बढ़कर श्रीश्यामसुन्दरकी दोनों आँखोंको पीछे रहकर अपने दोनों हाथोंकी

तलहथीसे बड़ी कोमलताके साथ मूँद लेती हैं। आँख मूँदते ही श्रीप्रियाके अङ्गोंमें प्रेमके विकार पैदा होने लगते हैं। शरीरसे हठात् इतना पसीना निकलने लग जाता है कि नीली साड़ी मानो भीग-सी जाती है तथा हाथ भी काँपने लगते हैं।

ललिता मुस्कुराकर कहती हैं—तब तो खेल हो चुका! श्यामसुन्दर! तुम हो बड़े चतुर! तुम्हारी इच्छा थी नहीं, इसीलिये तुमने राधाको चुन लिया। अब बताओ, इसकेद्वारा तो तुम्हारी आँखें मूँदी और न मूँदी जानी, दोनों एक समान ही है।

श्रीललिताकी बात सुनकर रानी कुछ लजा-सी जाती हैं। फिर वे कुछ धैर्य धारण करती हैं और कुछ लजायी मुद्रामें ललितासे डाँटती हुई कहती हैं—अच्छा-अच्छा, चल, हट! तू भला हमसे अच्छा मूँद पाती क्या?

इसके बाद श्रीप्रिया अपना रूमाल हाथमें लेकर अपना मुँह पोंछने लगती हैं। फिर तुरंत ही उस रूमालकी चार तह बनाकर श्यामसुन्दरकी आँखोंपर उस रूमालको रख देती हैं तथा इस बार बड़े साहसके साथ धीरेसे रूमालको अपने दोनों हाथोंसे दबा देती हैं। श्रीप्रियाके वैसा करते ही श्यामसुन्दर अपने दोनों हाथ आँखोंके पास ले जाते हैं। उसी समय वृन्दा सामने आ जाती हैं तथा कहती हैं—नहीं श्यामसुन्दर! यह तो अनुचित है। तुम ऐसा नहीं कर सकते। ऐसा करके तुम राधारानीके हाथोंको ढीला बना लोगे और फिर देख लोगे कि कौन कहाँ छिपती है।

श्यामसुन्दर हँसकर कहते हैं—अच्छी बात है, ऐसा नहीं करूँगा।

अब श्यामसुन्दर पालथी मारे हुए भूमिपर दोनों हाथोंको टेककर बैठे रहते हैं। श्रीवृन्दा देख लेती हैं कि आँखें ठीकसे मूँदी हुई हैं, तब वे 'एक-दो' बोलती हैं। श्रीवृन्दा साथ ही यह भी कहती हैं—आजके खेलमें कोई भी मेंहदीके घेरेके बाहर जाकर नहीं छिपेगी। यह नियम जो सखी तोड़ेगी, उसका हाथ बाँधकर मैं श्यामसुन्दरको सौंप दूँगी। श्यामसुन्दर फिर जो दण्ड देना चाहेंगे, देंगे। मैं फिर उसमें कुछ भी रोक-टोक नहीं करूँगी।

वृन्दाके 'एक-दो' बोलते ही सखियाँ इधर-उधर दौड़-दौड़कर झाड़ियोंमें जा छिपती हैं। कोई पूर्व, कोई पश्चिम, कोई उत्तर, कोई दक्षिणकी

ओर चली जाती हैं। जब सखियाँ ठीकसे छिप जाती हैं, तब वृन्दादेवी उच्च स्वरसे बोलती हैं— तीन।

वृन्दादेवीके ऐसा बोलते ही श्रीराधा श्यामसुन्दरकी आँखोंपरसे रूमाल हटा देती हैं। श्यामसुन्दर हँसते हुए उठकर खड़े हो जाते हैं तथा जहाँपर वे बैठे थे, उसी स्थानपर रूपमञ्जरी, जो कि 'ध्रुव-स्थान' बनी है, आकर बैठ जाती है। श्रीराधा रूपमञ्जरीके पीछे खड़ी होकर श्रीश्यामसुन्दरके मुखकी शोभा निहारती हैं।

श्यामसुन्दर एक बार चारों ओर दृष्टि डालकर संकेतमें श्रीप्रियासे पूछते हैं कि ललिता किधर गयी है। श्रीप्रिया एक बार तो मुस्कुरा देती हैं, फिर वृन्दाकी ओर देखने लगती हैं कि वृन्दा किधर देख रही हैं। श्रीवृन्दा इन दोनोंकी ओर देख रही थीं, इसलिये श्रीप्रिया विचारमें पड़ जाती हैं कि यदि कुछ भी संकेत किया तो वृन्दा ललितासे कह देंगी और ललिता फिर हमसे लड़ेंगी। श्रीप्रिया ऐसा सोचकर शीश नीचा कर लेती हैं। श्यामसुन्दर फिर भी कुछ दूरपर खड़े रहकर बाट देखते हैं कि मेरी प्राणेश्वरी राधा कुछ-न-कुछ संकेत करेंगी ही। अतः श्रीप्रिया एक उपाय करती हैं। वे रूपमञ्जरीकी दाहिनी ओर बैठ जाती हैं तथा पीठ उसके सहारे टेक देती हैं। श्रीवृन्दा जबतक श्रीराधाके सामने आती हैं, उसके आनेके पहले ही श्रीप्रिया अपने दोनों हाथोंसे अपने हृदयको दबाकर मुस्कुराती हुई कनखियोंसे पश्चिमकी ओरका संकेत कर देती हैं। तबतक श्रीवृन्दा सामने आकर राधाके मुखकी ओर देखने लग जाती हैं। श्यामसुन्दर मुस्कुरा देते हैं, जिससे श्रीप्रिया समझ जाती हैं कि श्यामसुन्दर समझ गये हैं। श्यामसुन्दर भी श्रीप्रियाको बचानेके उद्देश्यसे ऐसा भाव बनाते हैं मानो सोच रहे हों कि किधर चलें। पहले कुछ दूर दक्षिणकी ओर बढ़ते हैं, फिर दो झाड़ी पार करके पुनः वहीं वापस लौट आते हैं। इस बार उत्तरकी ओर बढ़ते हैं। कुछ दूर बढ़ते चले जाते हैं। इसी समय तुङ्गविद्या दक्षिणकी ओरसे दौड़ती हुई आकर ध्रुवस्थानको छू लेती हैं, छूकर हँसने लगती हैं।

श्यामसुन्दर फिर पीछे लौट आते हैं। खेलके नियमके अनुसार जो चोर बनता है, उसे ध्रुवस्थानसे पाँच हाथ अलग खड़ा रहना पड़ता है,

जिससे छिपी हुई सखियाँ आ-आकर ध्रुवस्थानको छू सकें। अतः श्यामसुन्दर ध्रुवस्थानसे पहले पाँच हाथ दक्षिण खड़े रहे, फिर उत्तरकी ओरसे लौटकर पाँच हाथकी दूरीपर दक्षिणकी ओर मुख किये खड़े हैं।

इधर ललिता पहले तो पश्चिमकी ओर गयीं। फिर लगभग दस-पंद्रह गज जाकर झाड़ियोंमें छिपती हुई उत्तर दिशाकी ओर आकर छिप गयी थीं। श्यामसुन्दर खड़े-खड़े सोच ही रहे थे, तभी पश्चिमसे विशाखा आती हैं। श्यामसुन्दर चाहते तो विशाखाको पकड़कर छू सकते थे; क्योंकि विशाखा बहुत कम दूरपर ही थीं; पर श्यामसुन्दरने तो पहलेसे ही घोषणा कर दी है कि उन्हें ललिताको चोर बनाना है, इसलिये वे इसी घातमें हैं कि वह ध्रुवस्थानको छूने न पाये।

श्यामसुन्दर विचार रहे हैं कि विशाखा एवं तुङ्गविद्या तो आ गयी हैं। अब छः सखियाँ और बची हैं, जिनमें चित्रा तो सदा उत्तरकी ओर जाया करती है, इसलिये आज भी वह उधर ही गयी होगी। प्रियाने कहा भी है कि ललिता पश्चिमकी ओर गयी है तो मैं पश्चिमकी ओर ही चलूँ।

श्यामसुन्दर पश्चिमकी ओर बढ़ते हैं तथा ललिता झाड़ियोंके छिद्रसे उन्हें पश्चिमकी ओर बढ़ते देखकर ध्रुवस्थानकी ओर बढ़ने लगती हैं। श्रीप्रियाकी दृष्टि श्यामसुन्दरकी ओर ही लगी है। वृन्दा इस बार श्रीराधाके मुखके सामनेसे हटकर पश्चिमकी ओर आ जाती हैं। उनके सामनेसे चले जानेपर श्रीप्रिया उठकर खड़ी हो जाती हैं तथा पश्चिमकी दिशामें श्यामसुन्दरकी ओर ही देखने लग जाती हैं।

श्यामसुन्दर एक झाड़ीके छिद्रसे चित्राको उत्तरकी ओर छिपी देख लेते हैं तथा कहते हैं—चित्रारानी! तुम्हें डर नहीं है। तुम स्वच्छन्द होकर जा सकती हो। मुझे तो ललिताको चोर बनाना है।

इस बातको सुनकर जो सखियाँ छिपी हुई थीं, वे कुछ साहसके साथ एक-एक करके आने लग जाती हैं। पूर्वकी ओरसे रङ्गदेवी, पश्चिमकी ओरसे सुदेवी, उत्तर एवं पश्चिमके कोनेसे चम्पकलता, दक्षिण एवं पूर्वके कोनेसे इन्दुलेखा आ-आकर ध्रुवस्थानको छू लेती हैं। अब केवल चित्रा

एवं ललिता बच जाती हैं, जिसमें चित्राको तो श्यामसुन्दरने देख लिया है; पर ललिता किस दिशामें हैं, यह अभीतक किसीको मालूम नहीं।

श्यामसुन्दर कुछ देरतक सोचते हैं। फिर कुछ सोचकर पूर्व एवं उत्तरके कोनेवाली झाड़ियोंको पार करते हुए आगे बढ़ने लगते हैं। श्रीश्यामसुन्दर पाँच-सात झाड़ियोंको पार करके आँखोंसे ओझल हो गये। उनके छिपते ही श्रीप्रियाके मुखपर अतिशय व्याकुलताके चिह्न दीखने लग जाते हैं। वे घबरायी-सी होकर पूछती हैं—विशाखे! श्यामसुन्दर कहाँ गये, किधर चले गये? ओह, ललिता भी बहुत हठीली है। जा, तुरंत उसे बुला ला।

अत्यधिक अधीर होकर राधारानी चिल्लाती हुई 'ललिता', 'ललिता' पुकारने लग जाती हैं तथा वहीं अतिशय व्याकुलतासे इधर-उधर दौड़ने लग जाती हैं।

रानीकी पुकार सुनते ही ललिता दौड़ती हुई उत्तरकी ओरसे आती हैं। रानीकी दशा उस समय बड़ी विचित्र हो गयी है। आँखोंसे झर-झर करते हुए आँसुओंका प्रवाह बह रहा है। सिरसे अञ्चल खिसक गया है। वेणीके बाल खुलकर बिखर गये हैं। वे पगली-सी होकर ललितासे आकर लिपट जाती हैं और बहुत जिज्ञासाभरे स्वरमें पूछने लगती हैं—ललिते! तुम्हें ढूँढते हुए श्यामसुन्दर किधर चले गये? देख, देख, बहिन! वे सचमुच यहाँसे चले गये हैं। यदि वे होते तो अबतक आ जाते। ओह! तुम्हें आये कितनी देर हो गयी, पर वे तो नहीं आये।

रानी यह कहते-कहते मूर्च्छित होकर गिर पड़ती हैं। ललिता सर्वथा घबरा-सी जाती हैं। उनकी आँखोंसे भी छल-छल करते हुए आँसू गिरने लग जाते हैं। वे इस समय किंकर्तव्य-विमूढ-सी हो गयी हैं। विशाखा एवं रूपमञ्जरी दोनों रानीके सिरपर गुलाबपाशसे शीतल जल छिड़क रही हैं। चित्रा पंखा झलने लग जाती हैं।

रानीकी मूर्च्छा नहीं टूटती। सखियोंमें घबराहट फैल जाती है। सबका अन्तर करुणासे भर जाता है। विशाखा बार-बार नासिकाके पास हाथ ले जाती हैं और देखती हैं कि श्वास बंद तो नहीं हो रहा है। श्वास बहुत ही धीरे-धीरे चल रहा था। बहुत-सी सखियाँ-मञ्जरियाँ

इधर-उधर घेरेमें दौड़कर उच्च स्वरमें पुकार रही हैं—प्यारे श्यामसुन्दर ! शीघ्र आओ ! अरे, खेलको फेंको खाईमें। देखो, रानीकी दशा कैसी हो गयी है !

पर श्यामसुन्दरकी ओरसे कोई उत्तर नहीं मिलता। एक क्षणमें ही सखियाँ-मञ्जरियाँ उस घेरेकी झाड़ी-झाड़ीको छान डालती हैं; पर कहीं भी श्यामसुन्दरका पता नहीं चलता। सभी निराश होकर लौट आती हैं। ललिताके मुखपर अवसन्नता छायी हुई है। वे चित्रकी भाँति मूर्तिवत् खड़ी हैं। जब दासियाँ निराश होकर लौट आती हैं तो अब ललिताका धैर्य टूट जाता है। रानीकी दशा देखकर वे विलाप करती हुई पुकारकर कहती हैं—प्यारे श्यामसुन्दर ! एक बार नहीं, हजार बार मैं चोर बनूँगी। तुम आ जाओ ! अब देर मत करो !

ललिताके इस प्रकार कहते ही मतवाली चालसे चलते हुए श्यामसुन्दर पूर्वकी ओरसे आते हुए दिखायी देते हैं। सखियोंकी दृष्टि तो पड़ जाती है, पर ललिता इतनी व्याकुल थीं कि उनकी आँखें आँसुओंसे भरी हुई थीं। उनके सामने अन्धकार-सा छाया हुआ था। वे मूर्च्छित होकर गिरनेवाली ही थीं कि श्यामसुन्दर आकर उनको पकड़ लेते हैं। हृदयसे लगाकर रूमालसे ललिताके आँसू पोंछते हुए बड़े प्रेमसे कहते हैं यह देख ! मैं आ गया ; घबराती क्यों है ?

श्रीश्यामसुन्दरका कोमल स्पर्श पाकर ललिता शान्त हो जाती हैं, पर प्रणयकोप एवं आनन्दके भावोंका आवेग अतिशय बढ़ा रहनेके कारण वे बहुत ही गम्भीर रहती हैं, कुछ भी बोलतीं नहीं। सखियोंमें आनन्द छा जाता है, पर राधारानी अभी भी मूर्च्छित ही पड़ी हैं। विशाखाकी गोदमें मूर्च्छाकी अवस्थामें रानी यह अनुभव कर रही हैं कि श्यामसुन्दरको ढूँढते-ढूँढते मैं बहुत दूर वनमें चली आयी हूँ। कहीं भी श्यामसुन्दरका पता नहीं चल रहा है। हाँ, उनकी नूपुर-ध्वनिका रुनझुन-रुनझुन स्वर रह-रह करके सुनायी पड़ रहा है। इससे श्रीप्रियाको यह अनुमान हो रहा है कि मैं पीछे-पीछे दौड़ती आयी हूँ और वे छिपते हुए आगे बढ़ रहे हैं। श्रीप्रिया इसी भावावेशमें कभी-कभी उठकर बैठ जाती हैं तथा कभी-कभी भागनेकी चेष्टा करने लगती हैं। श्यामसुन्दर मधुर-मधुर मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए अपनी प्राणेश्वरीकी प्रेम-लीला देख रहे हैं। उनके आ जानेके

कारण सखियोंमें कोई चिन्ता नहीं रह गयी है। सभी निश्चिन्त हो गयी हैं; क्योंकि सखियोंके मनमें श्यामसुन्दरकी उपस्थितिसे श्रीप्रियाके प्रति किसी प्रकारकी अनिष्ट-आशङ्का बहुत ही कम आती है। सखियाँ बहुत ही घबरा गयी थीं। उनका मन संदेहसे आकुल हो गया था। आजकी विरह-दशा कुछ ऐसी भीषण हो गयी थी एवं श्रीप्रियाके ऊपर इसका इतना गहरा प्रभाव पड़ा था कि सभी सखियाँ श्रीप्रियाके जीवनसे निराश-सी होने लग गयी थीं। अब श्यामसुन्दरके आ जानेपर तथा उन्हें हँसते हुए देखकर उन सबको ढाढस हो गया है। श्रीप्रियाकी भी अचेतनता अब कम हो गयी थी एवं वे भावावेशकी दशामें आ गयी थीं। इसलिये सखियाँ भी श्रीप्रियाकी प्रेम-लीला देखने लग जाती हैं।

श्यामसुन्दर रह-रह करके अपना पैर नचा देते हैं, जिससे नूपुर रुनझुन-रुनझुन शब्द करने लगते हैं और श्रीप्रिया उठकर भागनेकी चेष्टा करती हैं। इसी भावावेशमें श्रीप्रिया ऐसा अनुभव करने लग जाती हैं कि मैं कलसी लेकर यमुनाका जल भरने आयी हूँ। दूरपर खड़े होकर श्यामसुन्दर तिरछी चितवनसे मेरी ओर निहार रहे हैं। उनकी ओर दृष्टि जाते ही मेरी कलसी सिरसे गिर जाती है। मैं घबराकर अपनी साड़ी सँभालती हुई भाग रही हूँ। भागते-भागते अपने घर आ गयी हूँ। सखियोंकी गोदमें अचेत होकर गिर पड़ी हूँ। सखियाँ मुझसे बार-बार पूछ रही हैं— क्यों बहिन, क्या हो गया है?

राधारानी उसीके उत्तरस्वरूप भावावेशमें ही इस बार स्पष्ट बोल उठती हैं—कैसे जाऊँ री बीर! घट भरिबे नीर।

श्रीप्रियाके मुखसे इस शब्दोंको सुनकर ललिता, विशाखा एवं अन्य सखियाँ समझ जाती हैं कि रानी किस भावावेशमें हैं। आज थोड़ी देर पहले ही जब कि श्यामसुन्दरकी प्रतीक्षामें रानी बैठी थीं तो सखियोंके बहुत आग्रह करनेपर मन बहलानेके लिये वीणापर उन्होंने एक पद गाया था। गीतमें उन्होंने अपने जीवनकी आरम्भिक लगनकी कुछ बात अपनी सखियोंको सुनायी थी। अतः अभी मूर्च्छित होकर वे सचमुच उस भावसे आविष्ट हो गयीं। विशाखा खड़ी होकर श्यामसुन्दरके कानमें उनके आनेके पहले जो पद आदि गाये गये थे, उसकी बात बता देती हैं।

श्यामसुन्दर अत्यन्त प्रसन्नतासे कहते हैं—तू उस पदको फिरसे गा। मैं साथ-साथ वंशी बजाता रहूँगा।

विशाखा तुरंत ही वीणा मँगवा लेती है। इधर प्रिया बार-बार मुखसे रट रही हैं—'कैसे जाऊँ री बीर! घट भरिबे नीर'। वीणाका सुर शीघ्रतासे ठीक करके विशाखा अत्यन्त मधुर स्वरमें गाने लगती हैं। आज श्यामसुन्दर इतनी चतुराईसे वंशी बजा रहे हैं मानो कोई दूसरी सखी विशाखाके सुरमें सुर मिलाकर गा रही हो। विशाखा गा रही हैं—

(राग देश)

कैसे जाऊँ री बीर! घट भरिबे नीर।
ठाढो जमुना तीर साँवरो अहीर मारे दृगन तीर हरे सुधि सरीर॥
नित यही चित में चिंता समाय ब्रजराज सों कैसे बचेगी लाज
जिया काँपै आज नहिं धरत धीर।
बाको रूप है कै कोउ जादू यंत्र कैधों नारायन बसीकरन मंत्र
कैधों तंत्र कै पल ही में करे फकीर॥

गीत सुनते-सुनते श्रीप्रिया सर्वथा बावली-सी होकर उठकर बैठ जाती हैं तथा श्यामसुन्दर, जो पासमें बैठकर वंशीमें तान भर रहे थे, उनके गलेमें बाँहें डालकर सिसक-सिसककर रोने लग जाती हैं। श्रीप्रिया ऐसा अनुभव कर रही हैं कि कोई नयी ग्वालिन कहींसे आयी है और वही मुझे यह संगीत सुना रही है। श्रीप्रिया कुछ देरतक रोती रहकर फिर उसी भावावेशमें श्यामसुन्दरसे पूछती हैं—बहिन! बता, तू कौन है? कहाँसे आयी है? आह! मेरे प्यारे श्यामसुन्दरकी चितवनसे घायल होकर तू भी मेरे समान ही तड़प रही है। अच्छा, बहिन! तू मेरे पास ही रह। मुझे छोड़कर मत जाना। हम दोनों एक-दूसरीके सामने हृदय खोलकर रोयेंगी, रो-रोकर जी हलका करेंगी।

श्यामसुन्दर श्रीप्रियाको सँभाले रहकर मुस्कुराते हुए यह प्रेम-लीला देख रहे हैं। देख-देखकर वे आनन्दमें उत्तरोत्तर विभोर होते जा रहे हैं। वे अपने प्यारभरे हाथसे श्रीप्रियाकी बिखरी हुई लटोंको ठीक करते जा रहे हैं। श्रीप्रिया बार-बार उसी भावावेशमें पूछ रही हैं—बोल, मुझे छोड़कर तू नहीं जायेगी न?

श्यामसुन्दर प्रियाकी इस व्याकुलताको देखकर बड़ी चतुराईसे धीमे स्वरमें कहते हैं—नहीं जाऊँगी, तू निश्चिन्त रह।

यद्यपि श्यामसुन्दरने उत्तर बहुत धीमे स्वरमें दिया, पर अपने प्रियतम प्राणेश्वरकी चिर-परिचित यह कण्ठ-ध्वनि श्रीप्रियाके हृदयको भुला नहीं सकी। श्रीप्रिया चौंककर आँखें खोल देती हैं। भावावेश शिथिल होने लगता है। वे कुछ देरतक निर्निमेष नयनोंसे प्यारे श्यामसुन्दरके मुखारविन्दपर दृष्टि टिकाये हुए देखती रहती हैं। धीरे-धीरे पूर्ण बाह्य ज्ञान हो जाता है। श्रीप्रिया यह अनुभव करती हैं कि मैं सखियोंके सामने पूर्णतः अस्त-व्यस्त अवस्थामें श्यामसुन्दरके गलेमें बाँह डाले बैठी हूँ। रानी बड़ी त्वरासे उठ पड़ती हैं तथा अत्यधिक संकुचित होकर अञ्चल ठीक करने लगती हैं। श्यामसुन्दर खिलखिलाकर हँसने लगते हैं। सखियाँ-मञ्जरियाँ भी खुलकर हँसने लगती हैं। ललिता, जो अबतक बहुत गम्भीर बनी हुई थीं, वे भी खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं। श्यामसुन्दर श्रीप्रियाको बहुत संकुचित देखकर बात बदलनेके उद्देश्यसे कहते हैं—प्रिये! देख, अब ललिता हार गयी है। अबकी बार तो इसकी आँख मूँदी ही जायेगी। इतना ही नहीं, एक हजार बार और इसने आँखें मूँदी जानेकी अयाचित स्वीकृति दी है। इसके अतिरिक्त खेलके नियमके अनुसार एक घंटेतक इसे मेरे हाथकी कठपुतली बनकर, मैं जैसे नचाऊँगा, वैसे नाचना पड़ेगा! क्यों, वृन्दे! तू पंच बनी है! मैं यदि कुछ अनुचित कह रहा हूँ तो बता देना।

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर ललिता प्रेमभरी चितवनसे श्यामसुन्दरकी ओर देखती हुई कहती हैं—मैं तो तुम्हें भरपूर छकाती, पर क्या करूँ? मैं तो अपनी इस बावली सखी राधाके कारण विवश हो जाती हूँ।

श्यामसुन्दर हँसते हुए कहते हैं—इसमें क्या आपत्ति है, फिरसे खेल करके मनकी उमंग पूरी कर ले।

रानी बीचमें ही बोल उठती हैं—ना, ना, अब भर पायी! अब मैं आँखमिचौनीका खेल तो नहीं ही होने दूँगी।

श्रीश्यामसुन्दर, ललिता एवं अन्यान्य सखियाँ खुलकर हँस पड़ती हैं। श्रीश्यामसुन्दर श्रीप्रियाको हृदयसे लगा लेते हैं। विश्राम करनेके लिये चित्राके कुञ्जकी ओर श्रीप्रिया-प्रियतम गलबाँही दिये चल पड़ते हैं।

॥ विजयेतां श्रीप्रिया प्रियतमौ ॥

तत्सुखिया लीला

यमुना-पुलिनके उपवनमें श्यामसुन्दरकी प्रतीक्षामें श्रीप्रिया बैठी हैं। रात तीन घड़ीसे अधिक बीत चुकी है। यमुनाके तटपर ही तटसे सटा हुआ एक अत्यन्त सुन्दर उपवन है। उपवन हरी-हरी झाड़ियों एवं फूलोंसे लदे हुए वृक्षोंके द्वारा भरा हुआ है। यमुनाजीका प्रवाह वहाँपर पूर्वसे पश्चिमकी ओर है तथा घाटसे भली प्रकार बँधा हुआ है। यमुनाजी कुछ आगे पश्चिमकी ओर बढ़कर फिर दक्षिणकी ओर मुड़ गयी हैं। इसी मोड़पर यह उपवन है। श्रीयमुनाजीकी धाराका एक विभाग हो गया है, जो पहले उपवनके पूर्वकी ओर एवं फिर दक्षिणकी ओरसे बहता हुआ पुनः यमुनाजीमें जा मिलता है। इस छोटी शाखामें वर्षाके दिनोंमें तो जल अधिक रहता है, किंतु अन्य ऋतुओंमें कम। शाखाके दोनों छोरपर, अर्थात् जहाँ वह यमुनाजीसे निकलती है और जहाँ यमुनाजीमें पुनः मिलती है, उन दोनों स्थानोंपर, अत्यन्त सुन्दर पुल हैं। छोटी शाखाके और भी कई स्थानोंपर छोटे-छोटे पुल हैं। इन्हीं पुलोंपरसे होकर श्रीराधारानी एवं व्रजसुन्दरियाँ अपने-अपने घरोंसे आती हैं तथा संकेत-स्थलपर अपने प्यारे श्यामसुन्दरके साथ मिलती हैं।

उपवनमें श्रीयमुनाजीकी छोटी शाखाके उद्गमके स्थानपर एक अत्यन्त सुन्दर वेदी बनी हुई है, जिसकी लम्बाई-चौड़ाई लगभग सौ-सौ गजकी है। वेदी अत्यन्त सुन्दर ढंगसे सजायी हुई है। उसपर नीली कालीन बिछी हुई है एवं पीले रंगकी बहुत बड़ी चाँदनी चारों ओरसे खम्भोंके सहारे लगायी हुई है। बीचमें कोई खम्भा नहीं है। रेशमकी डोरोंसे एवं पीले रेशमी वस्त्रसे वेदीकी वह चाँदनी इस प्रकार शोभा पा रही है मानो सुन्दर रेशमी वस्त्रोंका मन्दिर हो। उस रेशमी चाँदनीमें स्थान-स्थानपर जरीके कामसे राधा-कृष्णकी लीलाओंके चित्र बने हुए हैं। उन चित्रोंपर मणियोंका हरा-हरा प्रकाश पड़नेसे ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो

वे चित्र नहीं, सचमुच पीले रंगके आकाशमें श्रीप्रिया-प्रियतमकी लीलाएँ चल रही हैं। चाँदनी जिन खम्भोंके सहारे टँगी है, उनमें विभिन्न प्रकारकी अनेकानेक प्रकाशयुक्त मणियाँ पिरोयी हुई हैं, जिनसे चित्र-विचित्र प्रकाश निकल रहा है।

उस वेदीसे सटा हुआ पूर्व एवं उत्तरके किनारेपर अत्यन्त सुन्दर वटका वृक्ष है। उस वटवृक्षके नीचे ही श्रीप्रिया बैठी हैं। वटवृक्षकी जड़के पासकी भूमि उजले रंगके किन्हीं अत्यन्त विचित्र मूल्यवान् पत्थरोंसे पाट दी गयी है। पत्थरोंपर इतनी चमक है कि उसमें वटवृक्ष प्रतिबिम्बित हो रहा है। वटवृक्षके मूलके पास बेंचके आकारका नीले मखमलका आसन है, उसीपर श्रीप्रिया दक्षिणकी ओर मुँह किये बैठी हुई हैं। पूर्वी गगनमें चन्द्रमाका उदय हो चुका है। आज कृष्ण पक्षकी तृतीया तिथि है, अतएव चन्द्रमा सूर्यास्तसे तीन घड़ी बीत जानेपर उदय हुए हैं और वे वृक्षोंके ऊपर उठ चुके हैं।

राधारानीसे कुछ दूर हटकर उनकी बायीं ओर विशाखा खड़ी हैं तथा चार-पाँच हाथ आगेकी ओर ललिता खड़ी होकर बड़ी उत्सुकतापूर्ण दृष्टिसे, जिस पथसे श्यामसुन्दर आया करते हैं, उस पथकी ओर देख रही हैं। राधारानीकी विकलता बढ़ती जा रही है। वे बार-बार आसनसे उठकर खड़ी हो जाती हैं तथा कुछ देर खड़ी रहकर फिर बैठ जाती हैं। श्रीप्रियाके शरीरपर चम्पई रंगकी साड़ी शोभा पा रही है। सभी सखियाँ भी चम्पई रंगकी साड़ी पहने हुए हैं। इस प्रकार कुछ देरतक बार-बार उठती-बैठती हुई राधारानी बहुत अधिक व्याकुल हो जाती हैं तथा ललिताको पुकारकर कहती हैं—ललिते! अब कितनी रात्रि शेष है? प्रभात होनेमें कितनी देर है?

ललिता अत्यन्त प्यारभरे स्वरमें कहती हैं—बहिन! अभी तो रात तीन घड़ी ही बीती है।

राधारानी कुछ निराशा एवं करुणाभरे स्वरमें कहती हैं—ललिते! तू मुझे भुलाती है। रात तो बीत गयी। देख, चन्द्रमा अस्त होने जा रहे हैं।

राधारानीकी यह बात सुनते ही ललिता वहाँसे आकर श्रीराधारानीके गलेमें अपना बायाँ हाथ डाल देती हैं और दाहिने हाथमें रूमाल लेकर

श्रीराधारानीके कपोलोंपर आये हुए प्रस्वेदकणोंको पोंछती हुई कहती हैं—बहिन ! विश्वास कर, मैं तुम्हें भुलाती नहीं हूँ। सचमुच अभी रात केवल तीन घड़ी ही बीती है। तुम्हें वस्तुतः दिग्भ्रम हो रहा है। चन्द्रमा तो अभी-अभी उदित हुए हैं। प्यारे श्यामसुन्दरके विरहमें तुम्हारे मनकी दशा प्रायः ऐसी ही हो जाती है तुम्हें दिग्भ्रम हो जाया करता है। यह पूर्व दिशा है। चन्द्रमाका उदय अभी हुआ है।

राधारानी कहती हैं—फिर श्यामसुन्दर क्यों नहीं आये ? धनिष्ठाने कहा था कि वे थोड़ी देरमें चलनेवाले ही हैं।

ललिता—आते ही होंगे निश्चय ही थोड़ी देरमें आ जायेंगे। बहिन ! भीरज धर ! रूप गयी है। वह भी नहीं लौटी है। इससे अनुमान होता है, उन्हें साथ लेकर वह अब आती ही होगी।

श्रीराधा ललिताकी गोदमें अपना सिर रखकर उसी बेंचके पास पूर्वकी ओर पैर करके लेट जाती हैं। राधारानीकी व्याकुलतासे ललिता भी व्याकुल-सी होने लगती हैं। इसी समय वृन्दादेवी ललिताके कानमें आकर धीरेसे कुछ कहती हैं। उसे सुनते ही ललिताका मुख तमतमा उठता है। वे कुछ चिढ़ी-सी होकर इधर-उधर देखने लगती हैं। फिर कुछ क्रोधभरे स्वरमें कुछ दूरपर खड़ी विमलामञ्जरीसे कहती हैं—विमले ! जा, रति उस पुलके पास खड़ी है। उसे एवं धन्या, जो उस शेफालिकावाले पुलपर है, दोनोंको कह देना कि ललिताने कहा है कि श्यामसुन्दर आवें तो उन्हें सर्वथा आने न दें। स्पष्ट-स्पष्ट कह दें कि ललिताकी आज्ञा नहीं है।

ललिताकी बात सुनकर राधारानी ललिताकी गोदसे उठ बैठती हैं तथा उसकी ठोड़ी छूकर बड़े ही करुणाभरे स्वरमें कहती हैं—बहिन ! पगली हो गयी है क्या ? क्या करने जा रही है ?

फिर तुरंत राधारानी विमलाकी ओर देखकर उसी करुण स्वरमें कहती हैं—ना, विमल ! जाना मत !

ललितारानी उसी क्रोधभरे स्वरमें कहती हैं—ना, अब आज नहीं सहूँगी। आज श्यामसुन्दरको मैं भी दिखा दूँगी कि ललिता क्या है !

राधारानी कहती हैं—प्यारी ललिते ! ऐसा मत कर। देख, मेरा हृदय तेरी बात सुनकर धक्-धक् कर रहा है। देख, कितना ऊँचा उछल रहा है। मेरे ऊपर दया कर। बहिन ! तेरा हृदय मेरे स्नेहके कारण धैर्य छोड़ रहा है; पर सच मान, तू ऐसा करेगी तो मुझे बहुत दुःख होगा।

ललिताका क्रोध ठंडा हो जाता है; पर फिर भी कुछ उग्र स्वरमें कहती हैं—मैं क्या करूँ ? तू ही तो सब खेल बिगाड़ देती है, अन्यथा क्या यह सम्भव है कि श्यामसुन्दर इस तरह करनेका कभी साहस करें ?

श्रीराधाकी आँखोंमें आँसू भर आते हैं। वे उन्हें रोकती हुई कहती हैं—बहिन ! मैं तेरे स्नेहकी ओर देखती हुई कहनेकी इच्छा होनेपर भी कहते-कहते रुक जाया करती थी; पर आज मैं तुम्हें अपने हृदयकी एक बात बतलाती हूँ। मेरी बात सुनेगी क्या ?

ललिताकी आँखोंसे छल-छल करते हुए आँसू बहने लगते हैं। वे राधारानीके गलेसे लिपटकर रोने लगती हैं। फिर कुछ सँभलकर कहती हैं—बहिन ! सुनूँगी क्यों नहीं ? पर मुझसे यह सहा नहीं जाता। इधर तेरी ऐसी दशा है और वे शैव्याके कुञ्जके चक्कर लगा रहे हैं।

राधारानी अत्यन्त प्यारसे कहती हैं—तो इसमें वे कौन-सा अपराध कर रहे हैं ? बहिन ! सचमुच आज तुम्हें अपने हृदयको खोलकर एक बात बता रही हूँ। मेरी प्यारी ललिते ! श्यामसुन्दर, मेरे प्रियतम श्यामसुन्दर मेरे दास नहीं हैं, अपितु मैं उनकी दासी हूँ।

यह कहते-कहते राधारानीका गला प्रेमसे रुँधने लगता है, आँखें भर आती हैं तथा समस्त अङ्गोंमें प्रस्वेद-कण झलकने लगते हैं। कुछ समय चुप रहकर फिर राधारानी कहती हैं—रसके समुद्र ! सुखके सागर !! मेरे जीवन-सर्वस्व !!! तुम्हारी दासी राधापर तुम्हारा पूर्ण अधिकार है। यह जीवन, यौवन सब तुम्हारा ही है। मेरे प्राणनाथ ! इसे हृदयसे लगाकर अपने अन्तस्तलमें छिपाये रखो अथवा इस दासीको चरणोंसे ठुकरा दो, दोनों अवस्थाओंमें ही यह दासी तुम्हारी है, तुम्हारी ही रहेगी।

ललिताकी आँखोंसे पुनः झरझर आँसू बहने लगते हैं। रानी अपने अञ्चलसे ललिताके आँसुओंको पोंछने लगती हैं। अबतक विशाखा

दूरपर खड़ी हुई निर्निमेष नयनोंसे ललिता एवं राधारानीकी ओर देख रही थीं। अब पास आकर बैठ गयीं। विशाखाके बैठनेपर रानी अपना बायाँ हाथ विशाखाके कंधेपर रख देती हैं। ललिताकी ओर देखती हुई फिर रानी कहती हैं--मेरी प्यारी ललिते! एक बार हँस दे। तू रो मत बहिन! नहीं तो फिर मैं तुझे रोती देखकर मूर्च्छित-सी होने लग जाऊँगी। सच मान, मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको यदि बहिन चन्द्रावलीसे सुख मिलता है तो मैं चाहती हूँ, प्रार्थना करती हूँ—'हे विधाता! जितनी देर मेरे प्यारे श्यामसुन्दर बहिन चन्द्रावलीके कुञ्जमें रहें, उतनी देरतक उनके हृदयमें मेरी स्मृतिको ढक देना। मैं उन्हें स्मरण ही नहीं आऊँ। नहीं तो उनके सुखमें विघ्न होगा। मेरी याद आते ही वे विकल हो जायेंगे। मेरे पास आना चाहेंगे'। ललिता! देख ले, हृदयके अन्तस्तलमें जाकर देख ले, मैं सच कह रही हूँ या झूठ। बहिन! सचमुच मुझे कोई दुःख नहीं है। तू रो मत बहिन!

ललिता कुछ शान्त-सी होने लगती हैं। इसी समय विशाखा कहती हैं—बहिन! एक बात पूछना चाहती हूँ, बतायेगी?

राधारानी—हाँ, अवश्य बताऊँगी। कुछ न छिपाते हुए आज जो-जो पूछेगी, वही बता दूँगी।

विशाखा—अच्छा बहिन! मान ले, श्यामसुन्दर तुम्हारे पास आना पूर्णतः बंद कर दें तथा चन्द्रावलीके कुञ्जमें ही जाने लग जायँ, वे तुम्हें किसी दिन बुलावें, वहाँ तुम्हारे सामने ही चन्द्रावलीके गलेमें बाँह डाले हुए कहें कि प्रिये! मैं थोड़ी देरमें आया और फिर चन्द्रावलीके साथ उसके कुञ्जमें चले जायँ तो क्या उस समय तू धैर्य रख सकेगी?

राधारानी कुछ गम्भीर-सी होकर कहती हैं—हाँ, बहिन! अवश्य धैर्य रख सकूँगी।

विशाखा—तुम्हें दुःख नहीं होगा?

राधारानी—सर्वथा नहीं।

विशाखाकी आँखोंमें आँसू भर आते हैं। रानी कुछ मुस्कुराती

हुई-सी कहती हैं—सच बहिन! दुःख सर्वथा नहीं होगा, अपितु आनन्दातिरेकके कारण मूर्च्छित होकर मैं कहीं गिर न पड़ूँ।

विशाखा आश्चर्यभरी दृष्टिसे रानीकी ओर देखती है। रानी फिर कहने लगती हैं—विशाखे! मैं प्यारे श्यामसुन्दरको देखकर आनन्दसे पगली-सी होने लग जाती हूँ। मैं सोचती हूँ कि न मेरे अंदर रूप है, न यौवन। कुछ भी तो नहीं है; पर फिर भी श्यामसुन्दर मुझे सबसे अधिक प्यार क्यों करते हैं? मैं तुम्हें देखती हूँ। सोचती हूँ, विशाखा मेरी अपेक्षा कहीं अधिक सुन्दर है। आज मैं इसे अपने हाथोंसे सजाऊँगी; तुम्हें सजाकर प्यारे श्यामसुन्दरके चरणोंमें बिठाकर देखूँगी कि उन्हें कितना अधिक सुख मिलता है! फिर ललिताको देखती हूँ, चित्राको देखती हूँ। जिस-जिसको देखती हूँ, उसीको देखकर मनमें यही आता है कि इससे मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको बहुत सुख मिलेगा, मैं इसे सजाऊँगी। कई बार ऐसा कर भी चुकी हूँ। ठीक इसी प्रकार बहिन चन्द्रावलीको देखकर मनमें आता है कि प्यारे श्यामसुन्दरको इससे अधिक सुख मिलेगा। अतः तुम्हारी कल्पनाके अनुसार यदि वे वैसा कभी करें तो मुझे दुःख नहीं होगा। बहिन! मैं तो आनन्दके समुद्रमें डूबकर निहाल होती रहूँगी; पर यह होनेका नहीं। देख, मैं श्यामसुन्दरके हृदयको जानती हूँ। बहिन! उनका हृदय प्रेमका असीम सागर है। जिस समय वे मुझे हृदयसे लगाते हैं, उस समय वह सागर उफन पड़ता है। मैं उसमें डूब जाती हूँ। डूबकर देखती हूँ, बहिन! वहाँ अणु-अणुमें मैं बैठी हूँ, मैं-ही-मैं हूँ केवल, बस, एकमात्र मैं ही।

रानी यह कहते-कहते प्रेममें अधीर होने लग जाती हैं। विशाखा एवं ललिता रानीके पास आकर उन्हें सँभालने लगती हैं। रानी कुछ मूर्च्छित-सी हो जाती हैं। रानीका सिर ललिता अपनी गोदमें रखकर उन्हें लिटा देती है। कुछ देर मूर्च्छित रहकर बाह्य-ज्ञान-हीन दशामें ही रानी धीरे-धीरे बोलने लगती हैं—मेरे जीवनसर्वस्व! मेरे हृदयधन!! मेरे हृदयको देखो! तुम्हारी दासी राधा आज कितनी प्रसन्न है। तुम बहिन चन्द्रावलीके कुञ्जमें गये हो? आह! आज मेरी बहुत दिनोंकी अभिलाषा पूर्ण हो गयी। हाँ, हाँ, मेरे प्राणनाथ! संकोच मत करो! मैं तो तुम्हारी क्रीत-दासी हूँ न! मेरे हृदयेश्वर! मेरे सामने ही बहिन

शैव्या, बहिन चन्द्रावलीके गलेमें बाँह डाले हुए मेरे इस उपवनके पुष्पोंकी शोभा निहारो ! राधा, तुम्हारी यह दासी, इसे देखकर आनन्दमें विभोर हो जायेगी। सच, मेरे प्राणनाथ ! मेरे सुखकी सीमा नहीं रहेगी। मेरे प्रियतम ! एक बार नहीं, यदि अगणित बार बहिन चन्द्रावलीके समक्ष तुम मुझे हृदयसे लगाओ, उस समय मुझे जितना सुख मिलेगा, ठीक उतना ही सुख; नहीं, नहीं; उससे भी अनन्त गुना सुख मुझे आज बहिन चन्द्रावलीके साथ तुम्हें इस निकुञ्जमें देखकर मिलेगा।

राधारानी कुछ रुक जाती हैं। धीरे-धीरे बड़-बड़ करने लगती हैं। ललिता रानीके मुखके पास कान ले जाकर सुनती हैं कि वह क्या कह रही है, पर कुछ समझमें नहीं आता। ललिता एवं विशाखा, दोनोंके मुखपर आश्चर्य छाया हुआ है।

रानी फिर बोलने लगती हैं—बहिन ! सच बतलाती हूँ ! मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको मैं देखती हूँ, नित्य देखती हूँ; पर नित्य यह अनुभव करती हूँ कि आज तो ये और भी सुन्दर हो गये हैं। एक क्षण पहले जिसे देखती थी, वही सौन्दर्य पूर्णतः नवीन होकर दीखने लग जाता है। बहिन ! जहाँ-जहाँ दृष्टि डालती हूँ, वहीं आँखें चिपट जाती हैं। वहाँसे आँखें हटना नहीं चाहतीं। देखती-देखती जब मैं मूर्च्छित-सी होने लग जाती हूँ, उसी समय वे हँस देते हैं और कहते हैं कि प्रिये ! क्या देखती हो ? मेरी प्रियतमे ! मैं सुन्दर नहीं हूँ, सुन्दर तुम्हारी आँखें हैं। यह सुनते ही बहिन ! मैं लजा जाती हूँ। उस समय वे मेरी ठोड़ीको आकर छू देते हैं तथा मुस्कुराते हुए कहते हैं कि प्रिये ! तुमने मुझे देखा। अब मैं तुम्हारी रूप-सुधाका पान करूँगा। बहिन ! उस समय मैं विह्वल हो जाती हूँ। उस समय कई बार मनमें यह आता है कि ठीक जिस प्रकार मेरे श्यामसुन्दर मेरा मुख देखकर सुख पाते हैं, उसी प्रकार किसी दिन बहिन चन्द्रावलीके मुखारविन्दको निहार-निहारकर वे सुख पायें। मैं दूरपर खड़ी-खड़ी प्यारे श्यामसुन्दरके मुखकी मुस्कान देखूँगी और आनन्दमें विभोर हो जाऊँगी। सच-सच हृदयकी बात कहती हूँ। बहिन ! तू रो रही है। मेरे स्नेहके कारण रो रही है। तू सोचती है कि मेरी प्यारी राधाके हृदयको कष्ट पहुँचाकर श्यामसुन्दर बहिन चन्द्रावलीके कुञ्जमें क्यों गये ? पर बहिन ! मुझे सर्वथा दुःख नहीं है। विश्वास कर,

विशाखा ! श्यामसुन्दरकी किसी बातसे भी, उनकी किसी चेष्टासे भी मुझे दुःख नहीं होता, अपितु प्रतिक्षण मैं नये आनन्दमें डूब जाती हूँ। बहिन ! उनका हृदय इतना कोमल है, इतना सरस है कि वे चाहनेपर भी मुझे दुःख पहुँचा ही नहीं सकेंगे। यह असम्भव है।

राधारानी फिर चुप हो जाती हैं तथा थोड़ी देर चुप रहकर कहती हैं—अच्छा, मान लेती हूँ कि थोड़ी देरके लिये तेरी बात ही ठीक हो जाये। श्यामसुन्दर मुझे चिढ़ाने लग जायँ, मुझे दुःख देने लग जायँ तो इससे क्या हुआ ! बहिन, मैं तो उनकी क्रीत-दासी हूँ। वे जैसे चाहें, मुझे रख सकते हैं। हाँ बहिन ! मुझे उनके सुखमें ही सुख है। यदि वे मुझे दुःख पहुँचाकर, मुझे चिढ़ाकर आनन्द पा सकें तो बहिन ! मैं चाहती हूँ, अनन्त कालतक वे मुझे चिढ़ाते रहें, अनन्त कालतक वे मुझे दुःख पहुँचाते रहें। इससे बढ़कर और सुख मेरे लिये होगा नहीं।

राधारानी अब बावली-सी होकर उठ बैठती हैं तथा विशाखाका गला पकड़कर रोने लग जाती हैं। विशाखाकी आँखोंसे भी पुनः आँसू बहने लगते हैं। वे हतप्रभ-सी होकर सोचने लगती हैं कि मैं अपनी प्यारी सखीको कैसे शान्त करूँ। इसी बीच राधारानी फिर खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं तथा मूर्च्छित-सी होकर भूमिपर गिरने लगती हैं। ललिता ठीक पहलेकी भाँति उन्हें गोदमें ले लेती हैं। रानी कुछ देर चुप रहती हैं। फिर कुछ मुस्कुराकर कहती हैं—प्यारी विशाखा ! तुझे कैसे समझाऊँ ? अच्छा देख, एक बात मैंने तुम दोनोंसे छिपा रखी थी, आज बतला देती हूँ। उसे केवल मैं, चित्रा और रूप जानती हैं। मैंने रूपको सौगन्ध दिला दी थी कि ललिता-विशाखासे यह बात अभी मत कहना। बहिन ! तीन दिन पहलेकी बात है। मैं सूर्यमन्दिरमें बैठी थी। तुम सब श्यामसुन्दरकी टोहमें बाहर चली गयी थीं। केवल रूप मेरे पास थी। उसी समय मेरे प्यारे श्यामसुन्दर आये। उनका मुख कुछ सूखा-सा था। मैं व्याकुल हो उठी कि प्यारे श्यामसुन्दरका मुख सूखा क्यों है ? वहाँ कोई नहीं था। दौड़ी हुई उनके पास जा पहुँची। अञ्चलसे मुख पोंछकर बोली—प्यारे ! तुम्हारा मुख सूखा क्यों है ?

प्यारे श्यामसुन्दरने बात टालनी चाही, पर मैं गले पड़ गयी। उनके

गलेमें बाँह डालकर बैठ गयी। मेरी आँखोंसे आँसू बहने लगे। मैं बोली—क्या नहीं बताओगे?

प्यारे श्यामसुन्दर पीताम्बरसे मेरे आँसू पोंछकर मुझे अपनी गोदमें लिटाकर बोले—प्रिये! मैं सचमुच ही बहुत घृणाके योग्य हूँ, तेरे प्यारके योग्य नहीं। मुझे क्षमा करो। मैं सच्ची बात बताकर तेरे हृदयको दुखाना नहीं चाहता।

बहिन! मेरी प्यारी विशाखा!! मेरा हृदय फटने लग गया। बहुत देरतक उनकी गोदमें सिर रखकर रोती रही। फिर बोली— नहीं, तुम्हें बताना पड़ेगा, तुम मुझे बताओ!

फिर बहिन! प्यारे श्यामसुन्दरने बताया—प्रिये! अभी-अभी मैं तेरे पास आ रहा था। पता नहीं, कौन है, एक षोडशवर्षीया किशोरी मुझे वनमें मिली। प्रिये! मेरी आँखें उसकी ओर बरबस चली गयीं। मैंने पूछा कि अरी ग्वालिन! तू किसकी पुत्री है और कहाँ रहती है? इसपर प्रिये! उसने इतनी रुखाईसे मुझे फटकारा कि मैं तो झिझक गया। फिर भी सोचता रहा कि यह ग्वालिन है बहुत सुन्दरी। मैंने उससे कहा कि अरी गरबीली! एक बार देख तो सही। पर प्रिये! वह फिर उसी तरह रुखाईसे बोली कि चल, हट! मैं राधा नहीं हूँ कि तेरे जालमें फँस जाऊँ। यह सुनकर प्रिये! मैं क्या करता; चुपचाप वहाँसे चला आया।

यह बात सुनते ही मेरे चित्तमें एक बार तो क्रोध आया। बहिन! आज बिना छिपाये तुम्हें सब बात बता दे रही हूँ! क्रोध इसलिये नहीं हुआ कि श्यामसुन्दर मुझे छोड़कर उस ग्वालिनकी ओर क्यों आकर्षित हुए, अपितु क्रोध इस बातसे हुआ कि ऐसी गरबीली ग्वालिन कौन है, जिसने मेरे प्यारे श्यामसुन्दरके कोमल हृदयको ठेस पहुँचायी है। बहिन! मैंने मन-ही-मन निश्चय कर लिया कि मैं उसे, जैसे भी हो, प्रसन्न करके अपने प्यारे श्यामसुन्दरके पास ले आऊँगी। उसके चरणोंको पकड़कर उससे प्रार्थना करूँगी। जैसे भी होगा, वैसे ही प्यारे श्यामसुन्दरसे मिलाऊँगी। इसी निश्चयसे मैं बोली—प्यारे श्यामसुन्दर! वह कहाँ है, मुझे दिखाओ!

श्यामसुन्दर बोले—तुम्हें देखनेसे तो उसका गर्व ही टूट जायेगा। उसने तुम्हें देखा नहीं है, इसीलिये तुम्हारे ऊपर आक्षेप कर रही थी।

बहिन! मैं यह सुनकर उठी। उठकर प्यारे श्यामसुन्दरके हाथोंको पकड़कर उठाया और बोली—अभी चलो, मैं उसे देखना चाहती हूँ।

श्यामसुन्दर उठे, मुझे साथ लेकर माधवीकुञ्जके उस पार ले गये तथा दूरसे दिखलाया— वह देखो, वहाँ वह बैठी है।

बहिन! मैंने देखा, दूरपर एक पेड़के सहारे अत्यन्त सुन्दर एक ग्वालिन बैठी है। मैंने श्यामसुन्दरसे कहा—तुम यहींपर बैठो। देखो, मैं अभी उसे अपने साथ लाती हूँ।

बहिन! मैं वहाँ गयी। वहाँ जाकर उसके पास खड़ी हो गयी। बहिन! सचमुच वह ग्वालिन मुझे इतनी सुन्दर दीख पड़ी कि मैं तो चकित होकर एक बार उसे देखती तथा फिर दूरपर खड़े हुए श्यामसुन्दरको देखती। फिर सोचती, क्या ही सुन्दर जोड़ी है। हे विधाता! मेरी सहायता करना। मैं इसे प्यारे श्यामसुन्दरके पास ले जा सकूँ, इसके लिये तुमसे प्रार्थना करके सफलताकी भिक्षा माँग रही हूँ।

बहिन! मैं फिर उसके पास जाकर बैठ गयी। उसने मुझे देखा। वह कुछ बोलने चली, फिर रुक गयी। वह फिर बोल उठी—बहिन! तू कौन है?

मैं मन्द स्वरमें बोली—मुझे लोग 'राधा' कहते हैं।

यह सुनते ही वह कुछ झेंप-सी गयी और बोली—हूँ, मैंने तेरा नाम सुना है।

उसकी बात सुनकर बहिन! एक बार तो मैं सकपका गयी, पर फिर बोली—क्यों बहिन! मुझसे कोई अपराध हुआ हो तो क्षमा करना। न जाने तू बैठी क्या सोच रही थी? मैंने आकर तुम्हारे सोचनेमें विघ्न पहुँचाया।

वह बोली—विघ्नकी तो कोई बात नहीं, पर मैं डरती हूँ कि जैसे तू

आयी है, वैसे ही तेरे पीछे वह नटखट फिर कहीं आकर मुझे छेड़ने न लग जाये।

मैं कुछ देर चुप रही, फिर बोली—बहिन! वे नटखट अवश्य हैं, पर वे तुम्हें प्यार करते हैं।

उसने आँखें चढ़ाकर कहा—चल, हट! तू मुझे ठगने आयी है?

बहिन! उसकी मुद्रा देखकर मेरे मनमें निराशा-सी हुई और बरबस मेरी आँखोंसे आँसू निकल पड़े। मुझे रोती देखकर उसका हृदय कुछ पसीजा। वह बोली—तू रोने क्यों लग गयी?

मैंने कुछ धैर्य धारण करके कहा—बहिन! वे सचमुच तुझे प्यार करते हैं।

वह इस बार कुछ नरमायी-सी होकर बोली—बहिन! प्यार करते होंगे, पर वे मेरे लिये तुम्हें थोड़े ही छोड़ देंगे। प्यार करना तो एकसे ही होता है।

विशाखे! उसकी बात सुनकर मुझे आशा-सी होने लग गयी। मैं कुछ साहस करके बोली—बहिन! यदि सचमुच तू एक बार उनके पास जाकर देख सकती तो तुरंत समझ जाती कि वे तुझे अतिशय प्यार करते हैं।

वह फिर बोली—करते होंगे, पर मैं नहीं चाहती कि तेरे सुखमें काँटा बनूँ।

अब मुझे पूरी आशा हो गयी कि मेरा काम बन जायेगा। मैंने उसके दोनों हाथोंको पकड़ लिया और बोली—बहिन! तू मेरे हृदयकी ओर देख ले। यदि तू प्यारे श्यामसुन्दरके पास जायेगी तो मेरे लिये इससे बढ़कर और कोई सुख है ही नहीं।

वह एकटक मुझे देखने लगी। फिर कुछ गम्भीर-सी होकर बोली—क्या तुम्हें मेरे जानेसे ईर्ष्या नहीं होगी?

मैं बोली—शपथ करके कहती हूँ बहिन! इससे मुझे बड़ा सुख मिलेगा।

वह बोली—क्या तू सहन कर सकेगी कि मैं उनके साथ तुम्हारे कुञ्जमें रहूँ?

मैं बोली—मेरी प्यारी बहिन ! सच मान, मेरी तो कोई कुञ्ज है ही नहीं, पर मेरी आठ सखियोंकी कुञ्जें तुम्हारी ही हैं। तू जिस कुञ्जमें प्यारे श्यामसुन्दरसे मिलना चाहेगी, उसीमें मैं तेरे लिये, तू जैसा कहेगी, वैसा प्रबन्ध कर दूँगी। बहिन, सच कहती हूँ, मैं तो तुम्हारी दासी हूँ। तू मुझे दासी मानकर जैसी आज्ञा देगी, वही करूँगी।

वह ग्वालिन कुछ हँसी, फिर बोली—यह मत समझना कि मैं श्यामसुन्दरको प्यार नहीं करती। मैं प्यार तो उन्हें करती हूँ, उन्हें प्यार किये बिना कोई रह ही नहीं सकता; पर मुझे फिर भी तुम्हारा डर है कि कहीं तेरे मनमें ईर्ष्या होगी तो व्यर्थका एक झगड़ा चल पड़ेगा। मैं तो बहिन ..... !

ग्वालिन यह कहते-कहते रुक गयी। मैंने फिर उसके दोनों हाथ प्रेमसे पकड़ लिये और बोली—हाँ, हाँ, बता ! रुकी क्यों ?

वह बोली—मैं भी चाहती हूँ कि एक बार श्यामसुन्दरसे अकेलेमें मिलकर उनसे कई बातें पूछती, पर तुम्हारा भय अभी भी मनसे नहीं जाता।

बहिन विशाखा ! इस बार मैं फूट-फूटकर रो पड़ी। फिर कुछ देर बाद मैं बोली—बहिन ! हृदय चीरकर दिखानेकी वस्तु होती तो दिखा देती, पर उसे चीरकर दिखानेसे मेरे श्यामसुन्दर फिर जीवित नहीं बचेंगे। नहीं तो मैं चीरकर दिखला देती। बहिन ! मैं चाहती हूँ एकमात्र श्यामसुन्दरका सुख, मुझे अपने लिये कुछ नहीं चाहिये। तुम्हें पाकर यदि श्यामसुन्दर प्रसन्न हों तो इससे बढ़कर मुझे कुछ भी नहीं चाहिये।

मैं फिर रोने लग गयी। इस बार उसे विश्वास हो गया। वह बोली - अच्छा, चल ! तेरे साथ ही चली चलती हूँ।

बहिन ! मेरे आनन्दकी सीमा नहीं थी। मैंने उसे हाथ पकड़कर उठाया। उसे लेकर वहाँ आयी, जहाँ श्यामसुन्दर बैठे थे। श्यामसुन्दरसे बोली—देखो, एक मेरी बड़ी बहिन आयी है। देखना भला, इसे कोई कष्ट न हो।

मेरे प्यारे श्यामसुन्दरकी आँखोंमें आँसू भर आये थे; पर मैंने सोचा कि कहीं मेरे खड़े रहनेके कारण वह ग्वालिन फिर रुष्ट न हो जाये,

इसलिये मैं वहाँसे चल पड़ी। मैंने मुख मोड़ा ही था कि श्यामसुन्दरने आकर मुझे हृदयसे लगा लिया। मैंने देखा, वह ग्वालिन चेतनाशून्य होकर गिर पड़ी है। मैं घबरायी-सी हो गयी और तुरंत श्यामसुन्दरके भुजपाशसे निकलकर उसके पास गयी। उसे गोदमें लेकर अञ्चलसे हवा करने लगी। पानी कहाँसे लाऊँ, मैं यह सोच ही रही थी कि रूप वहाँपर पानीकी झारी लेकर हँसती हुई-सी आ पहुँची। मैं अञ्चलको पानीमें भिगोकर उस ग्वालिनके मुखपर छींटे देने लग गयी। छींटे देते ही उसके मुखपरसे कुछ रंग-सा उतरने लगा। मैं बहुत ही चकित हुई। और भी जलके छींटे दिये। मुखपरसे पानी गिरकर उसके कपोलोंपर आ गया। अयँ! यह क्या? यह तो मेरी चित्रा है। मैंने श्यामसुन्दरकी ओर देखा। उनकी आँखोंसे प्रेमके आँसू अभी भी बह रहे थे। वे मेरे पास आये। इसी बीचमें चित्राको भी चेतना हो आयी। वह प्रेममें रोने लग गयी और बोली—बहिन! आज मैंने तेरा हृदय देखा है। प्यारे श्यामसुन्दरके प्रति प्रेम किसे कहते हैं, आज मैं समझ पायी हूँ।

बहिन! श्यामसुन्दरने मुझे फिर अपने हृदयसे लगा लिया और बोले—मेरे हृदयकी रानी! यह श्यामसुन्दर तुम्हारा है। ओह! प्रिये!! तू मेरे लिये जितना त्याग कर सकती है, उसके समान तो मेरे पास कोई भी वस्तु नहीं, जिसे देकर मैं तुम्हारे प्रेमका ऋण चुकाऊँ।

बहिन विशाखे! मैं पीछे जान पायी कि यह सब मेरे प्यारे श्यामसुन्दरकी ही लीला थी। उन्होंने ही चित्राको अपने हाथोंसे सजाया था। आह! बहिन!! चित्रा सचमुच उस दिन इतनी सुन्दर हो गयी थी कि क्या बताऊँ! मैं तो उसे सर्वथा पहचान ही नहीं सकी कि मेरी प्यारी चित्रा ही ग्वालिन बनी है। उसके तीन दिन पहले श्यामसुन्दरने कहा था कि प्रिये! तुमसे छिपाकर मुझे चित्रासे एक काम करवाना है। तू उसे आज्ञा दे दे। यह मेरी बात नहीं सुनती। प्यारेके ऐसा कहनेपर मैंने चित्राको अपनी सौगन्ध देकर कहा था कि श्यामसुन्दर जैसे कहें, वही करना। इसीलिये मेरी प्यारी चित्रा श्यामसुन्दरके कहनेसे ग्वालिन बनी थी।

बहिन! भेद खुल जानेपर मैं समझ पायी कि प्यारे श्यामसुन्दर मुझे कितना प्यार करते हैं! इसलिये बहिन! वे सम्भवतः ललिताको

चिढ़ानेके लिये ही शैव्याके कुञ्जमें गये हो। हाँ बहिन ! मैं ठीक जानती हूँ कि प्यारे श्यामसुन्दर मुझे हृदयसे प्यार करते हैं। बहिन ! अपने हृदयके कोने-कोनेको वे मेरे लिये ही सजाते रहते हैं कि मेरी प्यारी राधा यहाँ रहकर विश्राम करेगी। हाँ बहिन ! सर्वथा ऐसी ही बात है। देख, तुझे एक बात और बता देती हूँ..... ।

इतना कहना ही था कि श्रीप्रिया विशेषरूपसे भावाविष्ट हो जाती हैं। वे ऐसा अनुभव करने लगती हैं कि मैं अकेले एक कुञ्जमें बैठी हूँ। प्यारे श्यामसुन्दर आये हैं। प्यारे श्यामसुन्दरने मुझे अपने हृदयसे लगा लिया है। फिर अपने हाथसे फूलोंसे मेरा शृङ्गार कर रहे हैं; पर इसी समय शैव्या आ जाती है। शैव्या यह देखकर कुछ चिढ़-सी जाती है तथा कहती है कि प्यारे श्यामसुन्दर ! मेरी सखी चन्द्रावलीने तुम्हें एक पत्र दिया है, मैं उसे देने आयी हूँ, अकेले आकर ले जाओ ! अब प्यारे श्यामसुन्दर कुछ विचारमें पड़ जाते हैं कि यदि पत्र लेने नहीं जाता हूँ तो चन्द्रावली रूठ जायेगी और छोड़कर जाता हूँ तो प्यारी राधा रूठेगी। राधारानी श्यामसुन्दरके भावको समझ जाती हैं तथा श्यामसुन्दरके पाससे उठकर कुछ दूर हट जाती हैं एवं अत्यन्त प्यारसे कहती है--ना ! मेरे प्यारे श्यामसुन्दर !! बहिन चन्द्रावलीका पत्र एकान्तमें जाकर ले लो। शैव्या बहिन ! मैं तो बहिन चन्द्रावलीकी दासी हूँ। श्रीप्रिया मन-ही-मन कह रही थीं, पर इस वाक्यसे इतना अधिक आविष्ट हो गयीं कि उच्च स्वरसे बोलने लगीं—हाँ, हाँ, मैं तो चन्द्रावलीकी दासी हूँ, दासी हूँ।

श्रीप्रियाको इस प्रकार रटते देखकर ललिता एवं विशाखा घबरायी-सी होकर सोचने लगती हैं—क्या करूँ, रानीको कैसे शान्त करूँ।

वे ऐसा सोच ही रही थीं कि रानी उठ बैठती हैं तथा बड़ी शीघ्रतासे खड़ी होकर यमुनाके घाटकी ओर दौड़ने लगती हैं। ललिता एवं विशाखा उन्हें पकड़ लेती हैं। रानी फिर भावाविष्ट होकर यह सोचने लगती हैं कि मैं चन्द्रावलीके कुञ्जके द्वारपर आ गयी हूँ। साथमें ललिता एवं विशाखा हैं। सामने शैव्या खड़ी है। रानी उसी भावमें बोल उठती हैं—हाँ ! बहिन शैव्या ! शीघ्रतासे जा। बहिन चन्द्रावलीसे कह कि मैं आयी हूँ। उनके यहाँ दासी होकर रहूँगी। प्रतिदिन उन्हें अपने हाथोंसे

सजाऊँगी, उन्हें नहलाऊँगी, उनके लिये फूलोंके गहने बनाऊँगी, उन्हीं गहनोंसे उन्हें सजाकर मैं उन्हें प्रतिदिन श्यामसुन्दरके पास बिठाकर पासमें खड़ी रहकर पंखा झलूँगी। सच कहती हूँ, शैव्या बहिन! कपटसे नहीं। मेरे हृदयको देख ले, मैं नित्य यही सोचती हूँ कि मैं श्यामसुन्दरके योग्य नहीं हूँ। श्यामसुन्दर मेरे प्रेमके कारण विवेक खो बैठे हैं, इसीलिये मैं उन्हें सुन्दर दीखती हूँ। इसीलिये वे मुझे प्यार करते हैं। आज बड़े ही आनन्दका दिन है। मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको आज ही सच्चा सुख मिलेगा। आज वे तुम्हारे कुञ्जमें आये हैं। बस, मैं उन्हें यहाँसे अब जाने नहीं दूँगी। बहिन! चन्द्रावलीके कुञ्जमें ही उन्हें रखकर उन दोनोंकी दासी बनकर मैं भी यहीं रहूँगी। ललिता-विशाखा भी रहेंगी। शैव्या बहिन! चन्द्रावलीसे जाकर कह दे कि राधा, तुम्हारी दासी आयी है।

प्रियाजी भावावेशमें बोल ही रही थीं कि एकाएक वहाँ पीछे घाटपरसे उठकर श्यामसुन्दर आ जाते हैं। उनकी आँखोंसे प्रेम झर रहा था। वे चटपट आकर राधारानीको हृदयसे लगा लेते हैं। ललिता-विशाखाका हृदय आनन्दसे उछलने लग जाता है।

श्रीश्यामसुन्दरका स्पर्श पाकर श्रीप्रिया प्रेमसे मूर्च्छित हो जाती हैं। कुछ देरके बाद चेतना आती है तो अपनेको वे श्यामसुन्दरके भुजपाशमें बँधी हुई देखती हैं। प्रेमावेशके कारण इस बार श्यामसुन्दरकी आँखोंसे भी झर-झर करते हुए आँसू निकलने लगते हैं। श्यामसुन्दर कहते हैं—प्रिये! आज मैं तुमलोगोंके आनेके पहले ही यहाँ आ गया था। घाटपर छिपकर बैठा था। इच्छा थी कि आज फिर तुम्हारे मुखसे तुम्हारे हृदयकी बात सुनूँ। तेरा हृदय तो सर्वथा श्याममय ही है। मैं उससे एक क्षणके लिये भी बाहर नहीं जाता। मैं सब जानता हूँ, पर तुम्हारे मुखसे सुननेकी इच्छा हो जाती है, इसलिये कभी-कभी तुम्हें भुला दिया करता हूँ। मेरे हृदयकी रानी! श्यामसुन्दरकी दासी तू नहीं है, सचमुच श्यामसुन्दर तेरा बिना मोलका दास है। प्रिये! तुम्हारे कोमल हृदयमें न जाने मैं कितनी बार ठेस पहुँचाता रहता हूँ, पर तू मुझे प्यार ही करती है। तेरे प्यारका कोई ओर-छोर नहीं है। प्रिये! मुझे भी तेरे प्यारका एक कण तू भीखमें देगी क्या?

श्रीप्रिया श्यामसुन्दरके मुखको अपने हाथोंसे दबा देती हैं कि जिससे श्यामसुन्दर आगे कुछ भी बोल न सकें। सखियोंमें आनन्दका समुद्र तरंगित होने लगता है। वृन्दा श्यामसुन्दरके हाथको पकड़कर वेदीके ऊपर ले जाती हैं। वे एक अत्यन्त सुन्दर सिंहासनपर प्रिया-प्रियतमको बैठाती हैं। ललिता उजले रंगका शर्बत गिलासमें भरकर श्यामसुन्दरके होठोंके पास ले जाती हैं। श्यामसुन्दर गिलासको हाथमें लेकर राधारानीसे कहते हैं—प्रिये! एक घूँट आज पहले तू पी ले, तब मैं पीऊँगा। सच, आज मेरी यह बात टालना मत भला!

प्रिया संकुचित-सी होकर गिलासको हाथसे पकड़कर उसमेंसे थोड़ा-सा शर्बत पी लेती हैं। श्यामसुन्दर फिर पीते हैं। विशाखा हाथमें वीणा लिये खड़ी हैं। चित्रा शर्बतका भरा एक और गिलास लिये खड़ी हैं। कुल्ला करानेके लिये हाथमें परात लिये अनङ्गमञ्जरी खड़ी है तथा झारीमें शीतल जल लिये विमलामञ्जरी खड़ी है। मधुमतीमञ्जरी वीणा लेकर प्रिया-प्रियतमके मुखारविन्दपर दृष्टि टिकाये हुए गाती है—

बसो मेरे नैनन में दोउ चंद।
गौर बरन बृषभानु नंदिनी स्याम बरन नँद नंद॥
गोलक रहे लुभाय रूप में निरखत आनंद कंद।
जै श्रीभट्ट प्रेम रस बंधन क्यों छूटे दृढ़ फंद॥

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

मान लीला

राधा प्यारी बात सुनो एक मेरी ।
मैं आयो चाहत हौं तुम पे बाँच लिये उन घेरी ॥
जतन अनेक बिनति करि हार्यो कैसे जात न फेरी ।
परबस पर्यो दास परमानंद काहि सुनावौं टेरो ॥

श्रीप्रिया इन्दुलेखाके कुञ्जमें बैठी हैं । गोलाकार संगमरमरकी सुन्दर वेदी है। वेदीका व्यास आठ गज है। वह पृथ्वीसे एक हाथ ऊँची है। वेदीके चारों ओर हरी-हरी दूब लग रही है। दूबको अत्यन्त सुन्दर ढंगसे काट-छाँटकर उसपर चित्रकारी बनायी गयी है। वेदीके ऊपर नीले मखमलका मोटा गद्दा बिछा हुआ है। वेदीके बीचमें नीले मखमलसे जड़ा हुआ सिंहासन है। सिंहासनसे कुछ दूर पश्चिमकी ओर एक नीला मसनद है, उसीके सहारे श्रीप्रिया पूर्व एवं दक्षिणके कोनेकी ओर मुख किये हुए बैठी है। श्रीप्रियाके पीछे ललिता खड़ी हैं। ललिता मन्द-मन्द मुस्कुरा रही हैं तथा दाहिने हाथकी तर्जनी अँगुलीको अपने मुँहके पास ले जाकर दूरपर खड़े हुए श्यामसुन्दरको संकेतसे बोलनेके लिये मना कर रही हैं।

श्रीश्यामसुन्दर वेदीसे लगभग बारह गज पश्चिमकी ओर हटकर सुगन्धित पुष्पके वृक्षकी एक डालीको बायें हाथसे पकड़े हुए हैं। श्यामसुन्दरके दाहिने हाथमें वंशी है। कुञ्जके द्वारके पास आते ही वे विलासमञ्जरीसे यह ज्ञात कर चुके हैं कि आज प्रिया मान करके बैठी हुई हैं। इसीलिये श्यामसुन्दर धीरे-धीरे आकर वेदीसे दूर खड़े होकर ललिताको संकेतसे पूछ रहे हैं—क्यों, आज क्या ढंग है ?

ललिता पहले तो आँखें तरेरकर कुछ धमकाती हैं, पर श्यामसुन्दरको मुस्कुराते देखकर बरबस मुस्कुरा पड़ती हैं, फिर भी कुछ नहीं बोलनेका संकेत कर रही हैं। श्यामसुन्दर आये हैं, इस बातसे सभी

सखियोंमें आनन्दका प्रवाह बह रहा है, पर साथ ही श्रीप्रियाकी गम्भीर मुख-मुद्राको देखकर सभी अपने आनन्दको सँभालकर बहुत शान्तिपूर्वक अपनी-अपनी सेवाका कार्य कर रही हैं। श्रीप्रिया बहुत ही गम्भीर बनी बैठी हैं तथा किसीसे कुछ भी नहीं बोल रही हैं। उनके आगे पनवट्टा पड़ा है। वेदीके पूर्व एवं दक्षिणकी ओर अत्यन्त सुन्दर बड़े-बड़े अशोकके दो वृक्ष लगे हुए हैं; उनपर तोता एवं मैनाओंके समूह-के समूह बैठे हुए हैं। इनके अतिरिक्त विभिन्न जातिके पक्षी कुञ्जके वृक्षोंकी डालियोंपर बैठे हुए कलरव कर रहे हैं।

इस प्रकार श्यामसुन्दरको आये हुए जब कुछ देर हो जाती है, तब अशोक वृक्षपर बैठा हुआ तोता बोल उठता है—देवि इन्दुलेखे! अहा देखो, प्यारे श्यामसुन्दर तुम्हारे कुञ्जमें पधारे हैं। अहा! उनकी कैसे विलक्षण शोभा है! अलकावलीकी दो बिखरी हुई लटें कपोलोंपर आ गयी हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो भौंरोंके समूह दो दिशाओंसे उड़ते हुए आकर, फिर एक पंक्तिमें बैठकर श्यामसुन्दरके मुख-कमलका मकरन्द-पान कर रहे हों। अहा! कितनी सुन्दर आँखें हैं! क्या उपमा दूँ, कुछ समझमें नहीं आता। अरे! ये वस्तुतः सर्वथा अनुपम हैं। अहा! देखो, अधरपर कैसी मन्द मुस्कान है! प्यारे श्यामसुन्दर! बलिहार है तुम्हारे इस रूपको!

तोता कुछ देर ठहरकर फिर कहता है—देवि इन्दुलेखे! आज क्या बात है? तुम खड़ी हो? सुनो, मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको खड़े-खड़े कितनी देर हो गयी? उनके पैर दुख गये होंगे। आसन बिछाओ, अपने कोमल हृदयका आसन बनाकर प्यारे श्यामसुन्दरको उसपर बैठाओ……।

तोता यह बोल ही रहा था तथा आगे बोलनेका तार अभी टूटा नहीं था कि सारी बीचमें ही बोल उठती है—तोते! तू भी श्यामसुन्दरकी भाँति वास्तुतः रससे अनभिज्ञ है, इसीलिये तू इतना बक-बक कर रहा है। अरे! तू जिन श्यामसुन्दरके स्वागत करनेके लिये इतना व्याकुल हो रहा है, उन्हींका गुण मैं तुम्हें सुनाती हूँ; फिर पता लग जायेगा कि वे कैसे हैं। सुन, तू जानता है मेरी प्यारी राधारानीके हृदयकी बात? नहीं जानता। यदि जानता होता तो फिर आज इस प्रकार नहीं बोलता।

सुन, सचमुच ये श्यामसुन्दर हैं तो बड़े सुन्दर, पर इनका हृदय बड़ा कठोर है; रस उसमें नहीं है। यदि रस होता तो ये मेरी प्यारी राधारानीको छोड़कर भला कभी किसी दूसरेके कुञ्जमें जाते? तोता! एक बार मेरी राधारानीके मुखकी ओर देख और देखकर बता कि क्या इतना सौन्दर्य तुमने और कहीं देखा है? तुमने कहीं भी नहीं देखा होगा। और राधारानीके हृदयकी बात मैं तुम्हें बताऊँ? देख, बतलाती हूँ, उनके सारे हृदयमें ऊपर-नीचे, बाहर-भीतर एकमात्र श्यामसुन्दर भरे हैं; तनिक भी कहीं भी कोई स्थान नहीं बच गया है कि इसमें कोई दूसरी वस्तु प्रवेश कर सके। ऐसा हृदय एवं ऐसा सौन्दर्य! अब श्रीराधारानीके इस दिव्य स्वरूपपर विचार कर तथा फिर विचार कर श्यामसुन्दरकी करतूतपर! फिर कहना कि वे श्यामसुन्दरकी कैसी सेवा करें।

सारीकी बात सुनकर श्यामसुन्दर समझ जाते हैं कि राधारानीके रूठनेका कारण क्या है! फिर श्यामसुन्दर सारीके उत्तरमें तोतेको कुछ भी न कहनेके लिये संकेत करते हैं। इसके बाद वेदीके पास आ जाते हैं एवं वेदीपर चढ़कर राधारानीके पास आकर बैठ जाते हैं। उनके बैठ जानेपर ललिता कुछ कड़े स्वरमें कहती हैं—क्यों! अब वहाँसे मन ऊब जानेपर यहाँ मनोरञ्जन करने आये हो? ठीक यही बात है न?

श्यामसुन्दर—तू विश्वास तो करेगी नहीं, बताकर क्या होगा?

श्यामसुन्दर यह कह करके फिर जिस मसनदके सहारे श्रीप्रिया बैठी हैं, उसपर अपना दाहिना हाथ रख देते हैं तथा अत्यन्त प्यारभरे स्वरमें कहते हैं—प्रिये! मेरी एक बात सुनो!

श्रीराधारानी अपना सिर नीचा कर लेती हैं, कुछ बोलती नहीं। श्यामसुन्दर अत्यन्त प्यारसे श्रीप्रियाका दाहिना हाथ, जो मसनदपर पड़ा है, उसे अपने हाथमें लेकर कहते हैं—प्यारी! सच कहता हूँ, मैं आ रहा था यहीं, पर बीचमें ही ये सब मिल गयीं। सारीने तुम्हें ठीक ही समाचार दिया है कि मैं उनके कुञ्जमें गया था; पर किस परिस्थितिमें गया था, सारीने इस बातको नहीं देखा। देखो! बात यह हुई कि मैं फूल तोड़ रहा था, उसी समय उन सबने मुझे आ घेरा। मैंने मधुमङ्गलको संकेतसे कहा कि तू मुझसे झगड़ा कर और हम दोनों झगड़ते हुए यहाँसे

भाग निकलें। मधुमङ्गलने वही किया, पर मेरी चतुराईने मुझे और फँसा दिया। मधुमङ्गलने झगड़ते हुए मेरी फेंट खींच ली। मैं फूलोंके दोनेको बायें हाथसे पकड़े हुए था। मधुमङ्गल कहता था कि यह दोना फेंक दो, इसे इन ग्वालिनोंने छू दिया, अब इसकी माला मैं तुम्हें पहनने नहीं दूँगा। मैं यह भाव दिखला रहा था कि मैं दोना नहीं फेंकूँगा। मधुमङ्गल एक हाथसे दोनेकी ओर लपका और दूसरेसे मेरी फेंट पकड़ ली। मैं दोनोंको सँभालने लगा, पर फेंट ढीली हो जानेके कारण उसी समय मेरी वंशी, जो उसमें खोंसी हुई थी, गिर पड़ी। उसे शैव्याने चटपट उठा लिया। अब तो मैं फँस गया। यदि मैं बिना वंशीके तेरे पास आता हूँ तो तू पूछती कि वंशी क्या हो गयी? तब मैं जो भी उत्तर देता, उसे सुनकर तेरा संदेह और भी बढ़ता। इसीलिये मैंने वंशी ले लेनी चाही। उन सबोंसे मैंने बहुत प्रार्थना की कि मेरी वंशी मुझे वापस दे दो, पर उन्होंने एक भी नहीं सुनी। वे बार-बार यही कहती थीं कि वंशी लेना हो तो चलो, एक बार मेरे कुञ्जमें चलकर थोड़ा शर्बत पी लो, फिर दे दूँगी। जब उन्होंने किसी प्रकार भी वंशी लौटाना स्वीकार नहीं किया तो हारकर मैं उनके कुञ्जमें गया था। उसी समय सारी उड़ती हुई वहाँ आयी। मैं तो इस परिस्थितिमें पूर्णतः फँस गया था। सारीको खोलकर अपनी बात समझा भी नहीं सकता था। अतः सारीने जो कुछ भी कहा है, वह सच ही कहा है; पर प्रिये! मेरा इसमें अपराध नहीं है। तू ही बता, मैं भला इसके अतिरिक्त कर ही क्या सकता था?

श्रीप्रिया श्यामसुन्दरकी बात सुनकर सोचने लगती हैं—मेरे प्रियतम श्यामसुन्दर कितने सरल हैं! अहा! इनका हृदय कितना कोमल है! ओह! ये मुझे कितना प्यार करते हैं! मेरे अंदर न कोई गुण है, न तनिक रूप भी; फिर भी मेरे प्राणनाथ मुझे इतना प्यार करते हैं! हाय! मैं रूठकर बैठी हूँ, इससे इनके कोमल हृदयमें कितना दुःख होता होगा! ओह! मैं कितने कठोर हृदयकी हूँ!

ऐसा सोचते-सोचते श्रीप्रिया प्रेममें अधीर होने लगती हैं। बार-बार इच्छा हो रही है कि श्यामसुन्दरको गलेसे लगा लूँ, पर लज्जा आ घेरती है। इसी समय इन्दुलेखा शर्बतका एक गिलास ले आती हैं तथा श्यामसुन्दरके पास जो छोटी-सी मणिजटित तिपाई है, उसपर रख देती हैं।

श्रीप्रिया कनखीसे गिलासको देखती हैं। देखते ही श्यामसुन्दरके शैव्याके कुञ्जमें शर्बत पीनेकी बात याद आती है। राधारानी सोचती हैं, मेरे प्रियतमको शैव्याने शर्बत पिलाया है। उसने शर्बत पिलाया और मेरे सरल हृदय प्यारे श्यामसुन्दरने पी भी लिया, पर गँवारी शैव्याने यह नहीं सोचा कि शर्बत पीकर श्यामसुन्दरको यदि कहीं सर्दी लग गयी तो कितना अनर्थ हो जायेगा? क्या पता, शर्बत किस वस्तुसे बनाया गया था और कैसा बनाया गया था। शैव्याको शर्बत बनाना थोड़े ही आता होगा! पता नहीं, उसने कौन-सी वस्तु अधिक डाल दी होगी और किसी वस्तुका डालना आवश्यक होनेपर भी डालना भूल गयी हो। वह इन बातोंपर ध्यान थोड़े ही रख सकी होगी। उसे तो मेरे प्रियतमके अधरामृतका सुख लूटना था; भले ही श्यामसुन्दर अस्वस्थ हो जायें। और मेरे प्राणनाथ इतने सरल हैं कि जिस-किसीके हाथकी दी हुई वस्तु स्वीकार कर लेते हैं। इसलिये आज रूठे रहकर थोड़ी कड़ाई करनी ही पड़ेगी कि जिससे ये भविष्यमें कभी किसीकी दी हुई वस्तु यों ही, बिना सोचे-समझे ही स्वीकार न करें।

ऐसा निश्चय करके श्रीप्रिया उसी तरह सिर नीचा किये हुए बैठी रहती हैं, कुछ भी नहीं बोलतीं। श्यामसुन्दर उठकर वेदीके नीचे चले आते हैं तथा ललितासे हाथ जोड़कर मूक प्रार्थना करते हैं कि तू मेरी सहायता कर। ललिता श्यामसुन्दरके हाथ पकड़कर उत्तर एवं पश्चिमके कोनेकी ओर कुछ दूर ले जाती हैं तथा वहाँ धीरेसे कहती हैं—तुम्हें एक उपाय बतलाती हूँ। किसी प्रकार रूपमञ्जरीको प्रसन्न कर लो। कलकी बात है, रूपमञ्जरीने सायंकाल मेरी प्यारी राधाको तुम्हारे रूपके वर्णनका पद गाकर सुनाया था। राधाने अतिशय प्रसन्न होकर रूपमञ्जरीको इच्छापूर्तिका एक वचन दिया है।* वह उधार है। इसलिये यदि वह प्रसन्न हो जायेगी तो तुम्हारे लिये मान तोड़नेकी प्रार्थना कर सकती है।

---

*यहाँकी लीला यद्यपि सर्वथा सच्चिदानन्दमयी है, इसमें जडताका लेश भी नहीं है, फिर भी लीलाकी सिद्धिके लिये भाँति-भाँतिकी चेष्टाएँ सखियों एवं दासियोंके द्वारा होती हैं। लीलामें समय-समयपर श्रीराधा एवं श्रीकृष्ण, दोनों ही प्रसन्न होकर सखियोंको, दासियोंको यह वचन देते हैं कि तुम्हारी एक बात, तुम जो भी कहोगी, मान ली जायेगी। प्रत्येक दासी

श्यामसुन्दर यह सुनकर प्रसन्न हो जाते हैं तथा वहीं घासपर बैठकर रूपमञ्जरीको पुकारते हुए कहते हैं— रूपे ! मुझे प्यास लगी है, एक गिलास ठण्डा पानी पिला ।

रूपमञ्जरी मुस्कुराती हुई हाथमें शीतल जलका एक गिलास लेकर धीरे-धीरे आती है। उसके निकट आनेपर श्यामसुन्दर खड़े हो जाते हैं तथा उसके कंधोंको पकड़कर कहते हैं—देख, तू मेरी सहायता कर दे ! तेरे पास राधाका एक वचन उधार है, यह मुझे ज्ञात हो गया है। तू मेरी प्यारी राधाको मना दे ।

रूपमञ्जरी धीरेसे कहती है—मेरे पास तो एक ही थाती है; उसे दे देनेपर मैं रिक्त हो जाऊँगी। यदि इससे भी अधिक कोई आवश्यक अवसर आयेगा तो मुझे फिर किसी दूसरेसे प्रार्थना करनी पड़ेगी। हाँ, एक उपाय बतलाती हूँ। पहली बात तो यह है कि अब तुम हर किसीके हाथका शर्बत नहीं पीओगे, तुम्हें यह प्रतिज्ञा करनी पड़ेगी। और यदि कहीं पीना पड़े तो रानी जो उपाय तुम्हें बतलायेंगी, उसे पालन करके फिर पीना होगा; बोलो, स्वीकार है ?

श्यामसुन्दर—हाँ, स्वीकार है ।

रूपमञ्जरीने प्रसन्न होकर कहा—ठीक है, अब एक काम करो ।

एवं सखीके पास प्रायः ऐसे वचन थातीके रूपमें रहते हैं और सखियाँ एवं दासियाँ उस उधार वचनको इस प्रकार लीलाको और भी मधुर बनानेके लिये ही काममें लिया करती हैं। उदाहरणके लिये, जब कभी मान नहीं टूटता तो श्यामसुन्दर किसी सखीसे अनुनय करते हैं। फिर वह राधारानीसे उनके दिये हुए वचनकी स्मृति दिलाकर माँग लेती है कि रानी ! मेरी यह इच्छा है कि आज श्यामसुन्दरके गलेमें आप अपनी दोनों बाहें डाल दें और मैं इस छविका दर्शन करूँ। राधारानी अपने वचनकी पूर्तिके लिये उस सखीके सामने ऐसा ही करती हैं। ऐसा करते ही वे प्रेममें अधीर हो जाती हैं और मान टूट जाता है। इसी प्रकार तोता एवं मैना आदि पक्षियोंके पास भी इच्छापूर्तिके वचन उधार रहते हैं। सभी विलक्षण ढंगसे अपनी-अपनी इच्छापूर्ति करके लीलाका आनन्द लेते हैं ।

आज दिनभरके लिये फिर मेरी रानी नहीं रूठ सकेंगी। वह जो सारी बैठी है, उसके पास भी इच्छापूर्तिका एक वचन उधार है। उसे कुछ देकर प्रसन्न कर लो। सारी वृन्दाके कहनेसे तुम्हारा काम कर देगी।

श्रीकृष्ण वृन्दाको संकेत करके उस सारीको बुला देनेके लिये कहते हैं। वृन्दादेवी, उसी वेदीपर जिसपर राधारानी बैठी हैं, पैर लटकाकर बैठी हुई श्यामसुन्दरके मुखारविन्दकी शोभा निहार रही हैं। वृन्दा संकेतसे ही सारीको श्यामसुन्दरके पास जानेकी आज्ञा देती हैं। सारी उड़ती हुई आती है तथा श्यामसुन्दरके चरणोंके पास सिर झुकाकर पंख फुलाकर बैठ जाती है। श्यामसुन्दर सारीको हाथोंपर उठाकर कहते हैं—प्यारी सारिके! तुम्हारे पास राधाका एक वचन उधार है। तू मनचाही वस्तु उसके बदले मुझसे माँगकर उस वचनके द्वारा प्यारी राधाका मान तुड़वा दे।

सारी प्रसन्न होकर यह वर माँगती है—मेरे प्यारे श्यामसुन्दर! मैं यही वर माँगती हूँ कि जब कभी भी मुझे श्रीप्रियाकी आज्ञा आपका समाचार लानेके लिये मिले तथा मैं उड़कर जाऊँ और आपके पास पहुँचूँ तो एक बारके लिये आप मुझे अपने पास बुला लें।*

---

*व्रजप्रेमकी यही विशेषता है कि इसमें अपने सुखकी तनिक भी वासना नहीं रहती। वहाँ प्रत्येककी चेष्टा इसीलिये होती है कि किसी प्रकार श्रीराधा एवं श्रीकृष्णकी परम मधुर लीलामें उन्हें अधिक-से-अधिक सुख पहुँचा सकूँ। श्रीराधारानीका मान-प्रसङ्ग वस्तुतः क्या है, इसे तो वे ही जानती हैं; पर लीलाके अनुभवी संतोंका कहना है कि मानमें भी अपने सुखकी गन्ध नहीं रहती। सूत्ररूपसे कहनेपर यह कहा जा सकता है कि श्रीराधारानीका मान तीन कारणोंसे ही होता है—

(१) श्यामसुन्दरके मनमें यह इच्छा होती है कि मेरी प्यारी राधा मुझसे रूठे, मेरी ताड़ना-भर्त्सना करे और मैं उसे मनाऊँ। इसीलिये श्यामसुन्दरके प्रति श्रीराधारानी मान करती हैं। अर्थात् श्यामसुन्दर चाहते हैं, इसीलिये श्रीराधारानी मान करती हैं।

(२) श्यामसुन्दर जब कोई ऐसी चेष्टा करते हैं कि जिससे उनको कष्ट पहुँचनेकी सम्भावना होती है तो प्रियाजी मान कर बैठती हैं कि

श्यामसुन्दर सारीकी प्रार्थना स्वीकार कर लेते हैं। वह प्रसन्न होकर उड़ती है। उड़कर राधारानीके पास जाती है। राधारानीके पास जाकर सिर झुकाकर एक पदका पाठ करती है—

जयति नव नागरी कृष्न सुख सागरी सकल गुन आगरी दिनन भोरी।
जयति हरि भामिनी कृष्न घन दामिनी गत्त गज गामिनी मत किसोरी॥
जयति सौभाग्य मनि कृष्न अनुराग मनि सकल तिय मुकुट मनि सुजस लीजै।
दीजिये दान यह व्यास की स्वामिनी कृष्न सों बहुरि नहिं मान कीजै॥

जिससे मेरे प्यारे श्यामसुन्दर ऐसा न करें। यह मान भी इसीलिये होता है कि मेरे प्यारेको कोई कष्ट न हो जाये।

(३) श्यामसुन्दर जब कोई ऐसी चेष्टा करते हैं कि जिसके फलस्वरूप राधारानीके मनमें उन्हें बहुत अधिक सुखके बदले अल्पसुख मिलनेकी सम्भावना होने लगती है तो प्रियाजी मान कर बैठती हैं। इसमें भी यही हेतु है कि मेरे प्यारे श्यामसुन्दर ऐसा न करें; क्योंकि ऐसा न करनेसे उन्हें अधिक सुख मिलेगा।

इसी प्रकार व्रजके प्राणी बाह्य दृष्टिमें अनुकूल या प्रतिकूल कैसी भी चेष्टा क्यों न करें, सबके मूलमें यही भाव रहता है कि मैं श्यामसुन्दरको अधिक-से-अधिक सुख पहुँचा सकूँ। दासियाँ वचन उधार इसीलिये रखती हैं कि वे श्यामसुन्दरकी अधिक-से-अधिक सेवा कर सकें। यहाँ सारीने जो वर माँगा है, उसमें भी एक रहस्य है। सारीका उद्देश्य यह है कि श्यामसुन्दरकी अधिक-से-अधिक सेवा कर सकूँ। सारी उड़-उड़ करके श्यामसुन्दरका संदेश लाने जाया करती है; पर जब श्यामसुन्दर किसी दूसरे कुञ्जमें (श्रीचन्द्रावली या उनकी सखियोंके किसी कुञ्जमें) रहते हैं तो द्वारपर पहरा रहनेके कारण वह निकुञ्जके अंदर प्रवेश नहीं कर पाती है। बाहर तो डालियोंपर बैठकर सब कुछ सुन लेती है, पर जब श्रीचन्द्रावली या उनकी सखियाँ श्यामसुन्दरको लेकर सघन निकुञ्जमें चली जाती हैं, तब अंदर प्रवेश सम्भव नहीं हो पाता। इसीलिये श्यामसुन्दरसे वह यह प्रार्थना कर रही है कि मैं जब उड़कर जाऊँ तो वे मुझे बुला लें; क्योंकि उनके बुला लेनेपर मुझे फिर कोई रोकेगा नहीं और मैं सब बातें ठीकसे सुन-समझकर राधारानीके पास उड़ करके आ

सारीके पद-पाठ करनेसे श्रीराधाके गम्भीर मुखारविन्दपर मुस्कराहट दौड़ जाती है; पर वे सोचने लगती हैं कि सारीकी इच्छा तो पूरी करनी ही होगी और शर्बत नहीं पीनेका संकल्प करवाना अभी अपूर्ण ही रह गया। रूपमञ्जरी समझ जाती है तथा इसी समय कहती है—सब ठीक कर लिया है। अब श्यामसुन्दर किसीके हाथका शर्बत यों ही नहीं पीयेंगे। उन्होंने मेरे सामने प्रतिज्ञा कर ली है।

इस बातको सुनकर राधारानी प्रसन्न हो जाती हैं तथा मान छोड़ देनेके लिये प्रस्तुत हो जाती हैं; पर लज्जा आ घेरती है। अतः श्यामसुन्दरके पास जानेकी इच्छा होनेपर भी खड़ी रह जाती हैं। श्यामसुन्दर समझ जाते हैं कि काम बन गया। वे वहाँसे चलकर वेदीपर चढ़ जाते हैं तथा अपने गलेसे एक माला निकालकर श्रीराधाके गलेमें पहनाकर कहते हैं—प्रियतमे! आज मैंने इस मालाको तुम्हारे लिये ही बनाया था। बनाकर मैं देखने लगा कि यह कैसी बनी है। फिर सोचने लगा कि तुम्हारा हृदय

जाऊँगी। सारीके मनमें श्यामसुन्दरके पास बैठकर गप्प लेनेकी इच्छा नहीं है। उसके मनमें यही इच्छा है कि श्यामसुन्दरके विरहमें व्याकुल श्रीराधाके पास श्यामसुन्दरका अधिक-से-अधिक वर्णन सुनाकर उन्हें आनन्द पहुँचा सकूँ।

यह सर्वथा अटूट सिद्धान्त है कि जहाँ तनिक भी अपने सुखकी अभिलाषा है, वहाँ तो काम है। व्रजसुन्दरियोंमें अपने सुखकी इच्छा सर्वथा होती ही नहीं। इच्छा न होनेपर भी उन्हें अपार-असीम सुख मिलता है। श्यामसुन्दरको सुख मिल रहा है, यही एकमात्र उनके सुखमें हेतु होता है। श्यामसुन्दरको हँसते हुए देखकर, उनको प्रसन्न वदन देखकर श्रीगोपीजनोंमें प्रसन्नताकी बाढ़ आ जाती है। श्रीगोपीजनोंको प्रसन्न देखकर श्यामसुन्दर और अधिक प्रसन्न होते हैं। फिर श्यामसुन्दरको और अधिक प्रसन्न देखकर व्रजसुन्दरियाँ और भी प्रसन्न होती हैं। प्रसन्न व्रजसुन्दरियोंको देखकर फिर श्यामसुन्दर और प्रसन्न होते हैं। इस प्रकार परस्पर प्रसन्नता एवं आनन्दके समुद्रमें डूबते हुए श्रीप्रिया-प्रियतमकी यह सच्चिदानन्दमयी लीला निरन्तर चलती रहती है और अनन्त कालतक चलती रहेगी।

तो अत्यन्त कोमल है और ये पुष्प बहुत अधिक कठोर हैं। इनके लिये तो मेरा कठोर हृदय ही उपयुक्त स्थान है। अतः मैंने इसे पहन लिया था। पर तुम्हारे पास आते ही इनपर तुम्हारी छाया पड़ गयी और ये कोमल हो गये। इतने अधिक कोमल हो गये हैं कि मेरे कठोर हृदयपर टिक नहीं रहे हैं। इसीलिये अब तुम्हारे हृदयपर मैं इन्हें झुला दे रहा हूँ।

राधारानी विहँसती हुई कहती हैं—बस, बस, कविजी महाराज! चुप……।

वाक्य पूरा होनेके पूर्व ही राधारानी अपने दाहिने हाथकी अँगुलियोंसे श्रीकृष्णका मुँह बंद कर देती हैं। श्रीकृष्ण श्रीराधारानीको हृदयसे लगा लेते हैं। सखियाँ उन दोनोंपर पुष्प बरसाने लगती हैं तथा वृक्षोंपर बैठे हुए पक्षी अत्यन्त मधुर स्वरमें गाने लगते हैं—

जय राधे जय राधे राधे जय राधे जय श्रीराधे।
जय कृष्ण जय कृष्ण कृष्ण जय कृष्ण जय श्रीकृष्ण॥

मिलनोत्कण्ठा लीला

श्रीप्रिया चम्पकलताके कुञ्जमें एक फव्वारेके पास बैठी हैं। फव्वारेका जल लगभग दस गज चारों ओरसे बने हुए कुण्डमें झर-झरकर गिर रहा है। कुण्डके चारों ओर उजले रंगके चमकीले एवं कहीं-कहींपर सुनहले रंगके पत्थरोंकी सुन्दर गच है। कुण्डमें उतरनेके लिये चारों दिशाओंमें छोटी-छोटी सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। कुण्डके जलपर कमलके हरे-हरे बड़े-बड़े पत्ते फैले हुए हैं तथा उनपर कमलके पुष्प खिले हुए हैं। नीले, लाल एवं उजले, तीन रंगके कमलके पुष्प वायुके झोंकोंसे हिल रहे हैं। फव्वारा लगभग तीन-चार गज ऊँचा है। उसपर पत्थरका हंस बना हुआ है। हंसने अपनी चोंचमें डंडीसहित कमलका पुष्प ले रखा है। उसी पुष्पके छिद्रसे फव्वारेका जल मोतीकी भाँति झरता हुआ कुण्डमें गिर रहा है। कुण्डके चारों ओर सुगन्धित पुष्पोंसे लदी हुई एक-एक झाड़ीको बड़े सुन्दर ढंगसे काँट-छाँटकर उसपर 'राधा-श्याम', 'राधा-श्याम' का मेहराब बना दिया गया है। मेहराबके दोनों ओर छोटे-छोटे संगमरमरकी बेंचें हैं। झाड़ीके पीछे एक-एक आमका पेड़ है, जिसपर बैठी हुई कोयल कुहू-कुहू कर रही है।

फव्वारेके कुण्डके दक्षिणकी ओर जो गच है, उसीपर श्रीप्रिया उत्तरकी ओर मुँह किये बैठी हैं। उनके दोनों पैर कुण्डकी पहली सीढ़ीके ऊपर टिके हुए हैं तथा दोनों हाथोंसे अपने कपोलोंको पकड़े हुए वे नीची दृष्टि किये बैठी हैं। उनके पीछे विमलामञ्जरी खड़ी है तथा मधुमतीमञ्जरी हाथमें वीणा लिये उसकी बायीं ओर बैठी है। वीणा बजानेकी मुद्रामें बैठी हुई वह श्रीप्रियाकी आज्ञाकी बाट देख रही है। श्रीप्रिया कुछ सोचती हुई इतनी तल्लीन हो गयी हैं कि अभी थोड़ी देर पहले मधुमतीको वीणा लानेके लिये कहा था; पर मधुमतीके वीणा ले आनेपर भूल गयीं कि यहाँ क्या हो रहा है, मैं कहाँ हूँ ? कभी-कभी दृष्टि उठाकर हिलते कमलोंको देख

लेती हैं; किंतु फिर भी उनकी दृष्टि मधुमतीकी ओर नहीं जाती। मधुमतीमञ्जरी पीछे खड़ी हुई विमलामञ्जरीको आँखोंसे कुछ संकेत करती है। विमलामञ्जरी अपनी कञ्चुकीसे श्यामसुन्दरका अत्यन्त सुन्दर चित्र निकालकर श्रीप्रियाके दाहिनी ओर आकर बैठ जाती है। श्रीप्रिया विमलामञ्जरीके बैठ जानेपर कुछ तिरछी दृष्टिसे उस ओर देखने लगती हैं। उधर देखते ही चित्रपर दृष्टि चली जाती है। श्रीप्रिया झटपट उस चित्रको विमलामञ्जरीके हाथसे ले लेती हैं तथा देखने लगती हैं। देखते ही आँखोंमें आँसू भर आते हैं। प्रिया आँसू रोकनेकी चेष्टा करती हैं, पर आँसू रुकते नहीं।

चित्रको हाथमें लिये हुए श्रीप्रिया चाहती हैं कि उसे देखूँ; पर उनकी आँखें आँसुओंसे पूर्णतः भर जाती हैं और वे चित्रको देख नहीं पातीं। चित्र देखनेके लिये वे बार-बार अञ्चलसे आँसू पोंछती हैं, पोंछकर फिर चित्रकी ओर देखती हैं, पर देखते ही पुनः आँखें आँसुओंसे भर जाती हैं। इस प्रकार पाँच-छः बार चेष्टा करनेपर भी श्रीप्रिया उस चित्रको देख नहीं पा रही हैं, अतः व्याकुल होकर चित्रको तो हृदयसे लगा लेती हैं तथा सिर ऊँचा करके रोने लग जाती हैं। कुछ क्षण इसी भाँति बीत जाते हैं। मधुमती वीणाको रख देती है तथा अपने अञ्चलसे प्रियाके आँसुओंको पोंछने लग जाती है। कुछ देर रोते रहनेके बाद फिर प्रियाको कुछ धैर्य होता है एवं वे लड़खड़ाते स्वरमें कहती हैं—मधुमती! कुछ गा""!

मधुमती वीणाको कंधेके सहारे रखकर गाने लगती है—

ये नयना रिझवार नये री।
एकहि बार बिलोकि स्याम को तजि घर बार फकीर भये री।
अब देखे बिन आँसू ढारत जुग समान पल बीत गये री।
नारायन ये हू अति चंचल फल पाये जस बीज दये री॥

गाते-गाते स्वयं मधुमतीकी आँखोंसे भी आँसू बहने लगते हैं। श्रीप्रिया तो इस बार सिसक-सिसककर रोने लग जाती हैं। मधुमती धैर्य धारण करके वीणाको तुरंत वहीं रख देती है तथा श्रीप्रियाके गलेमें दाहिना हाथ डालकर बायें हाथमें अपना अञ्चल लेकर प्रियाके आँसुओंको पोंछने

लग जाती है। कुछ देर बाद श्रीप्रियाको कुछ धैर्य होता है। वे कुछ गम्भीर-सी होकर वहाँसे उठकर पीछे जो झाड़ी थी, उसके पास जाकर उत्तरकी ओर मुँह करके बैठ जाती हैं। झाड़ीके मेहराबके दोनों ओर बैठनेके लिये छोटे-छोटे संगमरमर पत्थरकी जो बेंचें बनी हुई हैं, श्रीप्रिया उसीके सहारे पीठ टेककर बैठी हैं।

इसी समय कुञ्जके पूर्वी द्वारसे रूपमञ्जरी आती है। रूपमञ्जरीके मुखपर अत्यधिक प्रसन्नता छायी हुई है। वह आकर राधारानीके पास बैठ जाती है तथा बड़ी प्रसन्नताके स्वरमें कहती है—मेरी रानी! आज मधुमङ्गलने बड़ा काम किया, नहीं तो मैया आज श्यामसुन्दरको वनमें जानेके लिये पूर्णतः रोक ही चुकी थीं। तुम्हारा अनुमान ठीक ही निकला। आज नागपञ्चमीकी पूजा है। पहले तो पूजा करानेके लिये एवं फिर श्यामसुन्दरके द्वारा ब्राह्मणभोजन करानेके लिये मैयाने उन्हें रोक ही लिया। पर मधुमङ्गल वहीं श्यामसुन्दरसे लड़ पड़ा और इतनी धूम मचा दी कि उसने भोजन करना भी अस्वीकार कर दिया। उसके न खानेसे श्यामसुन्दर भी भला कैसे खाते? उन्होंने भी भोजन करना अस्वीकार कर दिया। मधुमङ्गल कहता था कि कल इसने वचन दिया है कि आजके हारे हुए दाँव कल अवश्य चुका दूँगा। अब यह आनाकानी करता है कि मैया आज वन जानेके लिये मना करती है। श्यामसुन्दरके न खानेके कारण मैयाने हार मानकर यह आज्ञा दे दी कि अच्छा, डेढ़ पहर दिन चढ़ते-चढ़ते मैं पूजा समाप्त कर दूँगी, फिर तू वनमें चले जाना। अतः मेरी रानी! अब वे आयेंगे तो अवश्य, पर सम्भवतः कुछ विलम्ब हो जाये।

रूपमञ्जरीकी बात सुनकर रानीके हृदयमें आशा एवं प्रसन्नता भर जाती है। वे रूपमञ्जरीको हृदयसे लगाकर प्यार करती हुई इस शुभ संवादके लिये कृतज्ञता-सी प्रकट करती हैं। इसी समय राधारानीकी सारी उड़ती हुई वहाँ आती है। आकर राधारानीके सामने बैठ जाती है। राधारानी उत्कण्ठाभरी दृष्टिसे देखती हुई सारीको अपने बाँये हाथपर रख लेती हैं तथा दाहिने हाथसे उसके सिरको सहलाती हुई पूछती हैं—सारिके! मेरे प्यारे श्यामसुन्दरका समाचार तू अवश्य लायी होगी। बोल, श्यामसुन्दरके आनेमें कितना विलम्ब है?